श्री सीताराम नाम साधना

श्री रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

दिया था,पर पुनः प्रभु कृपा से ही मोह निवृत्त होने पर, आपने श्रीनाम–प्रताप को अच्छी प्रकार से जान लिया। फिर तो ऐसे नामाभ्यास में जुट गये कि श्रीरामनाम के प्रभाव से आप स्वयं श्री राघव हरिके, तथा नामजापक शिरोमणि श्रीहर शंकरजीके भी प्रेम–भाजन बन गये। धन्य श्रीराम– नाम का प्रताप!

'सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि।।
सो भव तर कछु संसय नाही। नाम प्रताप प्रगट कलि माही।।'

बात यह है कि परमविज्ञ एवं समर्थ श्रीरामनाम के सामने कलि न टिक सकता है, न कोई बाधा ही पहुँचा सकता है। यह बात कई उद्धरणों से स्वतः स्पष्ट हो जाती है। यथा–

' कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू।।
राम नाम नरकेसरी, कनककशिपु कलिकाल।
जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल।।'
रामनाम के प्रभाव जानु जुड़ी आगि है।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है।। – श्री विनय ७०/२

श्रीकवितावली उत्तरकाण्डके छन्द ७९ में कहा गया है कि कलियुगी जीवों की बुद्धि ऐसी मारी गई है कि श्रीहरिभक्तिरूपी कामधेनु गौ को, पेट के लिये बेचकर, लोग विषयभोगी रूपी गधी खरीदने लगे हैं। ऐसे भयंकर युग में भी श्रीरामनाम के जप से जापक के हृदय को त्रिताप नहीं जला सकते। अपने जापक के तीनों तापही को श्रीनाम–प्रताप जलाकर भस्म कर देते हैं।

'ज़र जरत प्रभाव नाम ललित ललाम को।'
'जाहिर जहान में जमानो एक भाँति भयो, बेचिये बिवुध धेनु रासभी बेसाहिये।
ऐसेउ कराल कलिकाल में कृपालु तेरे नाम के प्रताप न त्रितापत न दाहिये।।'
नाम के प्रताप बाप! आजुलौ निबाही नीके,
आगे को गोसाई स्वामी सबल सुजान हैं। ' ७/८०।।

आजकल कलिके भयंकर प्रभाव नर समाज को प्रपीड़ित कर रहा है। लोग वेद–पुराण के बताये हए सन्मार्ग को छोड़कर,कुत्सित आचरण करते हुये, दुःखशोक परिणामी कुमार्ग पर चल रहे हैं। आजकल के राजसमाज में तनक भी दया नहीं है। नाना छल पूर्वक प्रजा का रक्तशोषण करने पर तुला हुआ है। न वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था रह गई, न विभाग। संसार के पापी दुःख, दोष और दरिद्रता से दलित हो रहे हैं। ऐसे घोर समय में सभी कल्याण के मार्ग अवरुद्ध होने पर,एकमात्र श्रीरामनाम के प्रबल प्रताप से ही मुमुक्षु अपने लोक तथा परलोक के मंगल को सिद्ध कर रहे हैं।

' वेद पुरान बिहाइ सुपंथ कुमारग कोटि कुचालि चली है।
काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ोई छली है।।

वर्न विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है।
स्वारथ की परमारथ को कलि रामको नाम प्रताप बली है।।' ७।८५।

उलटा नाम जपने से श्रीवाल्मीकिजी का सारा बिगड़ा हुआ बन गया। नामही से गजराज की ग्राह से रक्षा हुई, सुग्गे को श्रीरामनाम पढ़ाने वाली वेश्या भी श्रीरामनाम के प्रभाव से तर गई। अजामिल भी मरते समय पुत्र के ब्याज से नामोच्चारण करने के कारण सारी चूकों से मुक्त होकर परमधाम गये। श्रीनामप्रताप से ही श्री द्रौपदीजी की लज्जा बची, दुष्ट कौरवों की राजसभामें ।श्रीरामनाम का प्रताप ऐसा प्रबल है कि इस घोर कलिकाल में जिन्हें दो अक्षर वाले श्रीरामनाम में विश्वास और प्रेम है, उनके लिये कल्याण तो सुनिश्चित है ही। श्रीकवितावली, उत्तरकांड छन्द ८९ देखिये–

'रामु बिहाइ मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिलहू की।
नामहि ते गजकी,गनिकाकी, अजामिलकी चलिगै चल चुकी।।
नाम प्रताप बड़ो कुसमाज बजाइ रही पति पांडु बधू की।
ताको भलो अजहू तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दू की।।'

श्रीरामनाम के प्रताप से खोटे भी खरे, और छोटे भी बड़े अनायास हो जाते हैं। संकट में इन्हें स्मरण करो, वहीं प्रगट होकर रक्षा करेंगे।

'आरतपाल कृपालु जो रामु जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े।
नामप्रताप महामहिमा अँकरे किय खोटेउ छोटेउ बाढ़े।।श्री क० ७/१२७।

श्रीरामनाम के प्रताप से कलि के घोर दु:ख शोक परिणामी पाप समूह उसी प्रकार अनायास नष्ट हो जाते हैं, जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार समूह मिट जाँय।

'बिनु श्रम कलि कलुष जाल कटु कराल कटत।
दिनकर के उदय जैसे तिमिर तोम फटत।।''

– श्री विनय १२९।२।

परमार्थ पथ के मर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी ने विचार कर देखा कि संसार से मुक्तकर श्रीरामधाम को देने की शक्ति न तो धर्मभूमि श्रीकाशीजी में है, न श्रीगङ्गा जी में। अत: परम–प्रतापी श्रीरामनाम का आप स्वयं जप करते हैं तथा काशी के मरणशील प्राणियों को भी इसी रामनाम महामन्त्र का उपदेश करते हैं।

' मरत महेश उपदेश है कहा करत सुरसरि तीर कासी धरम धरनि।
रामनाम को प्रताप हर कहै जपै आप जुग जुग जानै जग वेदहू बरनि।।'

– श्रीबिनय १८४।४।

श्री अगस्त्य जी ने श्रीरामनाम के प्रताप को प्रत्यक्ष देखा। किसी समय आप समुद्रतट पर विराजमान होकर, श्रीरामनाम का रटन कर रहे थे। समुद्र के किसी हरकत पर कुपित होकर, आपने अपार–अथाह जलराशि पूर्ण सम्पूर्ण सागर को ही सोख लेने का संकल्प किया।

श्रीरामनाम के उच्चारण करते ही श्रीनाम–प्रताप से सम्पूर्ण सिन्धु सिकुड़ कर, इतना छोटा हो गया कि तीन ही चुल्लू में आप राम–राम–राम कहकर समूचे सागर को पी गये।

'कलसजोनि जिय जानेउ नाम प्रताप। कौतुक सार सोखेउ करि जिय जाप।।'

–– श्रीबरवैरामायण, उत्तरकांड ५५।

श्रीरामनाम के प्रताप को अनुभव करने की युक्ति कृपालु श्री बड़े महाराज ने बतायी है। नामजापक शान्त, सुशील, सन्तोषी होकर, जगत के साथ रागद्वेष विरहित समत्व भाव का व्यवहार करें। निर्दोष वचन बोले। खूब उत्साहपूर्वक बीतराग सजातीय रसिक महानुभावों का सोहावन संग करे। हृदय में निश्चय कर ले कि श्रीनामजप,अथवा श्रीनाम सुयश गान के अतिरिक्त अशान्ति बढ़ाने वाली अन्य प्रकार की लौकिक चर्चा कभी नहीं करेंगे। तब श्रीनाम सरकार हमारे लिये अपना प्रताप प्रगट करेंगे। फिर तो दिव्य–प्रेम लीजिये, दिव्यानन्द लूटिये सब सहज ही संभव हो जायगा। श्रीनाम–प्रताप बड़े वरिष्ठ हैं।

'सांत सुसील सजो समता सुचि तोष अदोष सुबाग उचारो।
संत सजातिन संग सोहावन कीजिये शौक बढ़ाय हजारो।
नाम बिना बकिये न कदाचित बैन अचैन हिये अवधारो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप सें पाइहौं प्रेम प्रसन्नता भारो।।'

– श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका,१२१८।

श्रीरूप सरकार के प्रताप के समान ही श्रीनाम–प्रताप तीव्र नामाभ्यासी के हृदय में स्वत: प्रकाशित हो जाता है। हृदय में श्रीनाम–प्रताप धारण करने वाला सर्वथा निर्भय–निशंक हो जाता है। उसमें अद्‌भुत कर्म कर डालने का पराक्रम प्राप्त हो जाता है। यथा:–

''प्रभु प्रताप उर सहज असंका। रन बाँकुर बालिसुत वंका।।'' ६।१८।२

रावण सभा में श्री अङ्गदजी का सभाभूमि में प्रतिज्ञापूर्वक चरण स्थापित करना, तथा उनके चरण में मेघनादादि किसी भी सुभट से उठाने में असमर्थ होना, श्रीरामप्रताप की करामत थी। क्योंकि– प्रण करने के पहले श्रीअंगद जी ने प्रताप का बल ले रखा था–

समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माँझ पन करि पद रोपा।।

अत: आप तीव्र नामाभ्यास के द्वारा अपने हृदय में श्रीनामका प्रताप प्रकाशित कर लें,फिर तो आपके सारे शोच–संकट मिट जायेंगे। दैहिक, दैविक और भौतिक ताप, आपके हृदय को स्पर्श नहीं करने पावेंगे। आपके मन के समस्त मल श्रीनाम–प्रताप में जलकर भस्म हो जायेंगे। निर्मल मन से प्रेम–समाधि लगाने की योग्यता आपमें आ जायगी। आपके रोम–रोम में नामध्वनि प्रविष्ट होने पर, काम विकार को आपके अंगों में ठहरने की जगह भी नहीं मिलेगी। लोक चर्चा तो हृदय की शान्ति को नष्ट करने वाली है। इसे त्यागने पर ही आप श्रीनामरस का आस्वादन कर पायेंगे। इस भाँति से प्रताप स्मरणपूर्वक आप श्रीनामाभ्यास करेंगे, तो आपका हृदय श्री दिव्ययुगलविहार भावना से अनुरञ्जित हो जायगा। आपके हृदय में दिव्यदेश के रास–विलास का प्रकाश छा जायगा।

'नाम प्रताप विलाप कलाप मिटाय अताप समाधि सुधारो।
काम कषाय समाय कहाँ फिरि रोमहि रोम सुनाम सँवारो।।
लौकिक बैन अमैन अचैन निहायत त्याग किये रस प्यारो।
(श्री) युग्म अनन्य रहस्य रंगी रति रैन प्रकाश विलास– विचारो।'१३३७।।

श्रीनामसरकार का निर्मल प्रताप आप के हृदय में जम गया, तब फिर आपके लिये क्या असंभव रह जायगा? दिव्यप्रेम का सार है श्री कौशलकुमारजू के प्रति इश्क हो जाना। आपके श्रीनामप्रताप से वह भी मिलेगा। विमल ज्ञान–विज्ञान की प्राप्ति होगी। इस विषय–विष से तथा नाना उपद्रवों से परिपूर्ण इस मायिक जगत् से आपको कोई भय आशंका नहीं रहेगी। श्रीनामप्रताप से छलकपट की छाया भी आप तक नहीं पहुँच सकेगी। सम्पूर्ण संसार में आपकी मान–प्रतिष्ठा बढ़ जायगी, फिर भी आप स्वयं अमानी ही बने रहेंगे। नामामृत चखकर, आपको सांसारिक मिष्ट भोजनों की रुचि नहीं रह जायगी। क्षणमात्र भी आप नाम–प्रताप के भाव में मग्न हो जायें, फिर तो आपका सब प्रकार से बन जायगा।

'इश्क यार प्यार सार सरस समूह स्वच्छ
अच्छ अनमोल ग्यान पावै नाम जाप तें।
खटका न खौफ जौफ जालिम जहर जग
ठग मग लग नहि आवै नाम ताप तें।।
निखिल जहान माहि मानता अमान होत
खान पान मधुर पियूष दूर पाप तें।
(श्री) युगलअनन्य पलपाव भाव किये पर
विसद बनाव बात बिमल प्रताप तें।। '' १४३९।।

आपको श्रीनामजप के सर्वोत्तम साधन– मार्ग से विचलित कराने के लिए सांसारिक धूर्त लोग, आपको तन्त्र–मन्त्र, योग युक्ति आदि से प्राप्त होने वाली चमत्कार पूर्ण सिद्धाई की बात बनाकर कहेंगे। आपके यदि श्रीनामप्रताप हृदय में खचित हो गया है, तो आप इनके धोखे में नहीं आवें। आप अपने नामाभ्यास में ऐसे लयलीन हो जायें कि आपको संसार का भान ही भूल जाय। नामप्रेम का प्याला पीकर मस्त रहिये। आपके हृदय की आनन्दकली अनायास खिल उठेगी। सिद्धाई प्राप्त होने पर कंचन की प्राप्ति सुलभ हो जाती है। कंचन के बाहुल्य होने पर कामिनी सुलभ हो जाती है। फिर 'नारि विष्णु माया प्रकट' से बचना कठिन हो जायगा। आपको सिद्धाई प्रगट करना अपने को बर्वाद करना है। संसार के समस्त भोग सुखों को मिथ्या, नाशवान मानकर, सत्स्वरूप श्रीयुगलकिशोर के ध्यान में चित्त को फँसाये रखना चाहिये। श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि श्रीनामप्रताप हृदय में धारणकर, आप स्वयं भी दिव्य प्रेमामृत का पान करते रहें तथा औरों को भी पान कराने की शक्ति आपको कृपालु नाम सरकार दे देंगे।

'कोटिन भाँति कहे कोउ बात विचित्र बनाय न चित्त में लावो।
होश हिराय रहो निज नाम में मस्त सदा उर कंज फुलावो।।
कंचन कामिनी संग करो मत, सत्त स्वरूप में चित्त रलावो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप से प्रेम पियूष पियो औ पिलाओ।।'
'जौन नाम सबल सम्हारि हनुमान हिये
गये सिन्धु पार दह्यो लंक बिन शंक के।
जौन नाम प्रबल प्रताप धारि कुम्भसुत
पियो वारिनिधि रोक्यो बिध्य बिना बंक के।।
जौन नाम सुमिरि गनेश पूजनीय भयो
शंकर पचायो कालकूट हीन अंक के।
सोइ सुधाधाम नाम सर्वेश शिरमौर
(श्री) युगल अनन्य के अधार अविशंक के।।'२०५३।।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि शास्त्रोक्त साधन सभी अपनी जगह पर सही हैं, परन्तु उनमें प्रचंड अग्निज्वाला के समान जो बाधाएँ आती हैं, उनके कारण साधक इन साधनों को सम्हाल नहीं पाता। आप अपने हृदय में विचारें कि गजराज को ग्राह से किस साधन ने उबारा? असंख्य संत श्रीरामनाम के प्रतापको ही हृदय में दृढ़तापूर्वक जोगाकर, साधकों के मोहान्धकार को मिटाने वाले हो गये हैं। अत: युगल प्रभु का सच्चा शरणापन्न वही माना जायगा जो अविलंब युगलनाम जप में तत्पर हो जाँय।

'साधन सिद्ध समूह सहीं पर आफत आग समेत सम्हार न।
देखिये दृष्टि उघारि भला जग कौन उधार कियो वर वारन।।
नाम प्रताप हिये गहिके दृढ़ संत अनन्त भये तम तारन।
(श्री) युगलअनन्य प्रपन्न सदा सोइ जौन जपे निज नाम अघारन।।' १७७।।

श्रीनाम सरकार ही ऐसे परम उदार हैं, जो हमारे सभी मनोरथों को पूर्ण करते हैं। अन्य निष्फल साधन से हमारा प्रयोजन ही क्या? अन्य साधन फल न प्रदान कर सकने के कारण बदनाम हो चुके हैं। अत: इनसे नेह तोड़ डाला है। अन्य साधनों की प्रशंसा नहीं करना है, अन्यथा ये जो कुछ मान–मर्यादा है, नष्ट ही कर डालेंगे। श्रीरामनाम प्रताप से ही काम–विकार की कीचड़ धुलेगी।

'नीम सही सरकार उदार हमारी मनोरथ पूरन वारो।
आन अकाम से काम कहा बदनाम बिचारिके नेह निवारो।।
तान न गाइये दूसरी आन सुमान प्रमान बहावन वारो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप से काम कलंक कुपंक निकारो।।'२७०।।

अत: श्रीरामनाम का रटन तो समस्त सिद्धान्तों के सार का भी सार सर्वस्वं है। एक बार भी कोई मुख से श्रीरामनाम का उच्चारणभर कर देवें। उसमें चाहे जपकी सुरीति हो न हो, श्रीनाम में श्रद्धा विश्वास हो न हो,तो भी परम समर्थ श्रीनाम उसके सभी पापों का नाश कर देते हैं। अहो– श्रीरामनाम का प्रताप! विचार करने में इनका महत्त्व मन में अँटता भी नहीं। आप भली–भाँति बिचारकर स्वयं तौल लीजिये। इतनी बड़ी शक्ति तप, ज्ञान, ध्यान आदि साधनों में कहाँ? अत: हमारे जीवन का आधार एकमात्र है श्रीरामनाम का रटन। बस!

'रामनाम रटन समस्त सार सार है।
वारक वदन ते वदत कोइ रीति प्रीति
विगत प्रतीति तऊ कटे अघ भार है।
अहो अद्‌भुत नाम प्रबल प्रताप पन
मन में समात नहि करत विचार है।।
कहाँ ज्ञान–ध्यान तप आदिक में शक्ति इह
साँची मति सहित निहारिये सुतार है।
(श्री) युगल अनन्य मेरो जीवन अधार यार
रामनाम रटन समस्त सार सार है।' ७२५।।

श्रीरामनामका प्रताप हृदय में नहीं धारण करने के कारण विमुखी जीवन चौरासीलाख योनियों में भरमते रहते हैं। ऐसा श्रीक्रियायोगसार में धर्मराज ने यमदूतों से कहा है।

'यावच्छी रामनाम्नस्तु सुप्रताप हृदिस्थले।
नायाति सम्भ्रमन्तीह विमुखा: सर्व योनिषु।।''

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वरचित सत्सिद्धान्तसार नामक ग्रन्थ में श्रीनाम–प्रताप विषयक एक सुन्दर आख्यायिका लिखते हैं। श्री सुतीक्ष्णजी की जिज्ञासा देखकर, सद्‌गुरु श्री अगस्त्यजी ने उन्हें श्रीरामनाम प्रताप प्रत्यक्ष प्रगटाकर दिखाया। श्रीसुतीक्ष्णजी क्या देखते हैं कि एक अद्‌भुत मणिमय भवन श्रीअगस्त्य आश्रम में ही प्रगट हो गया है। असंख्य सूर्यों के समान उससे प्रकाश दिग–दिगान्त को प्रतिभासित करने लगा है।उस भवन के भीतर एक सोहावन मंडप बना है। उस मंडप के भीतर एक सुन्दर रत्नमय वेदिका है। उस पर रत्न–सिंहासन सजा है।उस पर दिव्यप्रेम नेममय बिछावन बिछे हैं। परम–प्रभा छा रही है। बड़ा ही सुहावना है। उस दिव्य–स्तरणमय सिंहासन पर श्रीसीतारामनाम सरकार अपने ऐश्वर्य सहित अक्षरमय विराजमान हैं। उनसे सूर्य के समान तेज छिटक रहा है अत्यन्त सुन्दर है। चारों तरफ आवरणों में दिव्य दरबारी लोग विराजमान हैं। उन्हीं अक्षरों से मधुर–मधुर सीतारामनाम ध्वनि प्रगट हो रही है। चारों ओर के आवरणों में अनन्त साधन एवं साध्यगण विगत मान होकर श्रीनाम सरकार की सुछवि देख रहे हैं। उस समय के नाम सरकार के रूप गुण, परत्व देखकर सबकी वाणी अवरूद्ध हो रही है।

सभी अवतार श्रीनामसरकार के कृपाकटाक्ष की चाहना कर रहे हैं,सभी परेश्वर श्रीनाम के वशीभूत एवं परतन्त्र होकर, उनकी स्तुति कर रहे हैं।

हे श्रीनाम सरकार! आप जिस पर कृपा कर दें, वह अद्वितीय महान बन जाता है। आप अपना कृपापात्र बनाने में ऊँच–नीच पात्रों को नहीं देखते। आपकी कृपा जिस जापक पर हुई,उसी के पास हम सभी परमेश्वरगण (नाना रूपधारी सगुणब्रह्म एवं त्रिदेव) सभी साधन–सिद्धियों को साथ लेकर पहुँच जाते हैं। और आपके कृपापात्र जापक की सभी अभिलाषायें, अविलम्ब पूरी कर देते हैं। वही जापक परम–पावन बन जाताहै। श्री जानकीवल्लभलालजू के अतिरिक्त जितने भी सगुण ब्रह्मरूप हैं, सभी आप नामांश से ही संभावित हुए हैं तथा जिस पर श्रीसीताराम रूप के रिझाने में लगे रहते हैं, उसी प्रकार आप श्रीनाम सरकार को भी रिझाया करते हैं। स्वयं श्रीजानकीरमण तो अपने नाम के प्रति इतने अनुरागासक्त रहते हैं कि नामजापक के परतन्त्र हो जाते हैं। इस प्रकार श्रीअगस्त्य जी ने श्रीसीतारामनाम का प्रताप श्री सुतीक्ष्णजी को प्रत्यक्ष दिखा दिया। पुन: वह झाँकी अन्तर्ध्यान हो गई। मूल महावाणी इस प्रकार पठित है। श्री सत्सिद्धान्तरसार के षष्ठ सिद्धान्तसार में परतम प्रभाव कथन प्रकरण आप पढ़ें।

अमित मित्र सम सहज प्रकासा। अद्भुत भवन दशहु दिशि भासा।।
मण्डप मधुर मान मद हारी। वरवेदी आसन मनहारी।।
प्रेमनेम मय बिछे बिछावन। परम प्रभा समान छबि छावन।।
तापर लसत नाम सुख सागर। विभव विलास सहित नव नागर।।
तेज तरुन सौन्दर्य निधाना। अवरन वरन अकथ गुन आना।।
शब्दसार रसरूप परेश्वर। जेहि ध्यावत वरदेश महेश्वर।।
चारिहु दिसि कर जोरि सब, साधन सिद्धि अनन्त।
वदन बिलोक भाव भरि, परिहरि मान दुरन्त।।
वचन गिरा थकि जात गुन, रूप परत्व मझार।
(श्री) युगलानन्य सुमंद मति, बरनौ कौन प्रकार।।
सब अवतार निहारहि भौहैं। सनमुख खरे भरे मुद दोहै।।
सुस्तुति सरस विनय बहु भाषै। निज प्रभाव परेश बस राखै।।
जापर कृपा रावरो होई। ताहि समान और नहि कोई।।
हम सब ईश तासु आधीना। साधन विभव समेत नवीना।।
नीच ऊँच नहि करहि विचारा। जहाँ कृपा सागर पद धारा।।
तहँ तहँ हम सब सपदि सिधारे। तासु सकल अभिलाष सँवारे।।
सो पावन पावनतर पावन। जेहि जिय वसहु प्रनत प्रगटावन।।
हम सब रूप नाम बसबरती। काहू समय न मम मति फिरती।।

सियवर बिना रूप गुन जेते। सो सब नाम अंस दुति देते।।
सियपिय नाम रूप युग सुन्दर। परम परेश प्रेममय मन्दिर।
और रूप सब ईश कहावै। सो समस्त सियराम रिझावै।।
सियवल्लभ निज नाम सनेही। वसीभूत सम रहे निरेही।।
सीताराम नाम आधीना। श्रुति सम्मत पुनि कहै प्रवीना।।
या प्रकार सुख सार रहस वर। दरसायो करुनाकर मुनिवर।।
अन्तर्धान भयो सुख सोई। गुप्त रहस्य अनूपम गोई।।
मगन महा सुखसिन्धु सुतीक्षन । तन मन लीन हीन तम तीक्षन।।

'नाम प्रभाव न जाने यथारथ रामहु और के काह चली है।
अज्ञ अकोविद आलसि आँधर भूलै फिरैं जन भर्म गली है।
ते किमि जानहि नाम–प्रताप सुबुद्धि कुभोग विकार छली है।
प्रेमलता नहि नामसो नेह लखो करणी तेहि लाख कली है।।'

श्री नाम वैभव

ईश्वर और विभु प्राय: एकार्थ बोधक शब्द हैं। अत: दोनों के भाव–वाचक ऐश्वर्य और वैभव को हम एक ही अर्थ में यहाँ कहेंगे।

शास्त्रों में श्रीनाम– वैभव को अनन्त एवं अचिन्त्य बताया गया है। श्रीतापनीय संहिता कहती हैं कि सभी दोषों का परं प्रायश्चित तो नामजप ही है। नामजप से अकाल मृत्यु मिटती है तथा अविद्या समूल नष्ट हो जाती है। श्रीरामचन्द्र जैसे प्राणों के प्राण, जीवनों के जीवन हैं, प्राण सर्वस्व हैं, उसी भाँति आपके नाम का वैभव भी अनन्त है। नाम से बढ़कर,हम किसको कहें?

'सर्वाषामेव दोषाणां प्रायश्चितं परं स्मृतम्।
अपमृत्यु: प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम्।।
नाम संकीर्तनं विद्धि अतो नान्यद्ववदाम्यहम्।
सर्वस्वं रामचन्द्रोऽपि तन्नामानन्त वैभवम्।।'

वायु पुराण में भगवान शंकर देवर्षि श्रीनारदजी के प्रति कहते हैं कि श्रीरामनामकी सामर्थ्य वैभव, शौर्य, विक्रम कोई कह नहीं सकता। मैं नारद! सत्य–सत्य कहता हूँ। श्रीरामनाम के अर्थ करने में, उसी नाम के अभ्यन्तर श्रीसीता महाशक्ति का भी अधिवास मानना पड़ता है। मुनिवर! श्रीरामनाम का वैभव, विज्ञान के लिए भी अगोचर है।

'श्रीरामनाम सामर्थ्य वैभवं शौर्य विक्रमम्।
प्रवक्तुं कोपि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद।।
रामनामार्थमध्ये तु साक्षात् सीता पदं प्रियम्।
विज्ञानागोचरं नित्यं मुने श्रीनामवैभवम्।।''

शक्तियों के सहित त्रिदेवोंके की रकार ही से उत्पत्ति कहकर पुनः कहते हैं,उनके द्वारा उत्पन्न पालित संहरित जगत भी महाप्रलयों के तारतन्य से सृष्टि के आदि तथा स्थिति वाले मध्य महाप्रलय वाले अन्त में रकार ही में नित्य व्यवस्थित रहते हैं।

''आदावन्ते तथा मध्ये रकारेषु व्यवस्थितम्।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यशः।।

श्रीब्रह्मयामल का भी यही मत है। जगत रकार से ही उत्पन्न होकर महाप्रलयकाल में रकार ही में लीन होकर रहता है। इनमें विकल्प कभी नहीं होता। ये तो नित्य हैं निर्मल एवं चिन्मय(बुद्र) हैं।

''रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत्।
रकारो निर्विकल्पश्च शुद्र बुद्धस्सदाऽद्वयः।।''

श्रीकूर्मपुराण में भगवान् शंकर श्रीपार्वती से कहते हैं कि सर्वेश्वरप्रिय रामनामका सतत् जप करो सभी त्रिदेवादि शासकवर्ग श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होते हैं तथा श्रीनामही उनके प्रेरक भी हैं।

जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वरप्रियम्।
नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम्।।

श्रुति स्मृति पुराणगण भी श्रीरामनाम ही में स्थित रहते हैं। तभी तो जापक को बिना इनके पढ़े भी सभी शास्त्रज्ञान स्वयं आ जाते हैं। श्रीरहस्यनाटक का श्लोक हैं।

''श्रुति स्मृति पुराणानि रामनाम्नि च संस्थितम्।
यथैव लोके सुस्पष्टं सूत्रे मणि गणा इव।।''

असंख्य सुमन्त्र गण भी श्रीरामनाम ही के अंश से उत्पन्न हुए हैं। श्रीनाम की उज्ज्वल महिमा गँवार क्या जाने?

असंख्यमन्त्र नाम्नां तु बीजं शर्मास्पदं परम्।
अनादृत्य महामन्दा संशक्ताश्चान्य साधने।। 'पद्मे'

इतिहासोत्तम का कहना है कि श्रीरामनाम के पारमार्थिक वैभव सुनकर जिस आँखे से आँसू न बहने लगे उसमें धूल डालना चाहिये।

''श्रुत्वा श्रीनाम्नस्तु वैभवं पारमार्थिकम्।
स्रवते न जलं नेत्रात्तन्नेत्रे वै रजोक्षिपेत्।।''

श्रीविष्णुपुराण में श्रीसनत्कुमार जी श्रीवशिष्ठजी से कहते हैं – मैंने उत्तमोत्तम सभी सार वस्तुओं को स्वयं देखा भी है और सुना भी, परन्तु श्रीरामनाम का वैभव तो परतर से भी परतम है।

''दृष्टं श्रुतं मया सर्व यत्किश्चित्सारमुत्तमम्।
परन्तु रामनामैकं वैभव तु परात्परम्।।''

श्रीपद्मपुराण में लोकपितामह ब्रह्माजी श्रीनारदजी से कहते हैं – वत्स सभी भगवन्नामों के वैभव श्रीरामनाम ही से प्राप्त हैं। यह तत्त्व मैंने विशेष रूप से समझा है। अतः तुम श्रीरामनाम ही जपो।

''सर्वेषां हरिनाम्ना वै वैभवं रामनामतः।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम संजय।।''

श्रीशुकपुराण में श्रीशिव वचन है देवि पार्वती अग्नि यदि रज से ढका हो तो केवल उसके विश्वासी मर्मी ही जानते हैं भीतर आग छिपी है। उसी भाँति अविश्वासी के लिए श्रीनाम का वैभव अज्ञात रहता हैं।

'' यथैव पावको देवि रजसाच्छन्नतां ब्रजेत्।
तथा विश्वासहीनानां नास्ति नामार्थ वैभवम्।।''

इस सन्दर्भ के प्राप्त और शास्त्र प्रमाणों को हम ग्रन्थ विस्तारभय से छोड़ते हैं। श्रीबड़े महाराज के हिन्दी छन्द आगे उद्धृत करते हैं।

सीतारामनाम की विभूति अविचिन्त्यचारु
व्यापि रही निखिल निकेतन मझार हैं।
ताते भिन्न तिहूँ लोक नजर देखात नहि
समुझि सुहीय हरषात एकवार हैं।।
कौन साथ रागद्वेष कीजिये विचारु नेक
एक रघुनाथ को विलास अविकार है।
(श्री)युगल अनन्य नाम पूरन परत्व पेखि
पायो प्रेम प्रवल प्रसाद स्वच्छ सार है।। १५०।।
सीतारामनाम जस जिकर फिकर हर
निकर निकेत शुद्धसार शुभ फल है।
होय के एकान्त शान्त भ्रान्त से रहित कांत
कमल सुपद अभिलाषिये सुचित्त थल।।
वातन विनोद बीच व्यर्थ व्यवहार विष
बोइये न नेक टेक छोड़िये कलीक मल।
(श्री)युगल अनन्य इष्ट नाम की विभूति वर
जानिये जहान जहाँ तलक सुजल थल।११७८।।
नाम की विभूति छर अछर अजूब वर
मधुर मधुर नाम रटत विनीत है।
तीनहु के पार जौन सहित बिहार वर
मधुर मधुर नाम रटत विनीत है।।
नाम परमेश परहू ते परतम सम
विषम विहीन अविगीत चित्त चीत है।

(श्री) युगल अनन्य अनुरागी बड़भागी नाम
सुजस समूह सब भाँति अविगीत है।। १५५६।।

वैभवशाली श्रीरामनाम का आश्रयण कर जापक मालोमाल हो जाता है

''कविरा सब जग निर्धना, धनवन्ता नहि कोय।
धनवन्ता सोइ जानिए, रामनाम धन होय।।''

परमंहस श्रीप्रेमलता जी रचित ''श्रीसीतारामनाम किंचित् विभूति चालीसा'' से श्रीनामवैभव परिचायक कतिपय छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

कोटिन रिद्धि सुसिद्धि प्रदायक कोटिन भक्ति सुमुक्ति के दानी।
कोटिन मातु–पिता सम पालक घालक कोटि कुसंकट हानी।।
कोटिन ईश महीश करोरनि स्वामी सहायक सिद्ध सुज्ञानी।
प्रेमलता हित नाम समान तिलोक न सन्तन बैन बखानी।।
कोटिनि चन्द्र समान सुसीतल कोटिनि सूर्य समान प्रकासू।
कोटि पताल समान अगाध सुकोटि अकाश समान उचासू।।
कोटिनि काल समान कराल सुकोटिनि शक्र समान विलासू।
कोटिनि भूमि समान छमी भजु नाम सुप्रेमलता प्रति स्वासू।।
कोटिनि वायु समान वली वर सुन्दर कोटिनि काम समानू।
पंडित कोटिन शारद के सम तेज सुकोटि समान कृशानू।।
कोटि गनेस से पूज्य सुकोटिन रूद्र समान प्रताप निधानू।
कोटिनि व्यास समान पुराणिक प्रेमलता प्रभु नाम सुजानू।।
कोटि कुवेर समान धनी सियराम तें कोटि गुनी प्रभुताई।
कोटि ब्रह्म समान रमे जग कोटि सुमेरनि सी अचलाई।।
भृगुपति कोटिनि से अरिमर्दन कोटि विरंचिनि सी चतुराई।
कोटिनि विष्णु से प्रेमलता जन रक्षक नाम सदा सुखदाई।।
कोटिनि कर्ण वली से उदार तपी मनु कोटिन से अधिकाई।
कोटिन बद्रिनारायन ते हित साधक लोकनि के विनु हेतु सहाई।।
कोटिन नारद से अति वेग सुकोटिन तोमश सी अमराई।
कौतुकि कोटिन कृष्णनि ते प्रभु नाम सुप्रेमलता कह गाई।।
कोटिनि भूप विभीषण से रत नीति सुनाम कृपाल नरेशू।
कोटिनि अज्जनिनन्दन से भट नाशन सन्तन केर कलेसू।।
कोटिनि कामसुधेनु से कामद कोटिनि अमृत ते सुररेश।
कोटिन धाम ते प्रेमलता रमणीक सुनाम बखान महेशू।।

कोटिनि धर्म ते सत्यब्रती शुक कोटिनि तें सुविरक्त विचारी।
शोषक कोटिनि कुम्भज से जन के अघ वारिधि ते अति भारी।।
जगदीश ते भोगी अनन्तगुने सुधन्वरि कोटि से रोग प्रहारी।
प्रेमलता अस जानि रटो सियराम सुनाम पुकारि पुकारी।।

विभु शब्द का अर्थ सर्वव्यापक भी है। अत: श्रीनाम वैभव में श्रीनाम की सर्वव्यापकता भी अन्तर्भूत है। नाम रटते–रटते जब विज्ञानमयी दृष्टि प्राप्त होती है तो श्रीरामनाम सरकार जगत के अणु परमाणु में व्याप्त दीखते हैं।

श्रीरामनाम स्थित रकारमात्र सब प्राणियों में व्याप्य व्यापक ईश्वर तथा सबों के अनन्त रूपधारी ईश्वर है। ऐसा ब्रह्मयामल का कथन है।

''रकार: सर्व भूतानामीश्वरोऽनन्त रूप धृक्।
रकार: सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वर:।।''

श्रीनामकृपा से प्राप्त विज्ञानमयी दृष्टि से हमारे पूर्वाचार्य श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित श्रीसीतारामनाम सनेहवाटिका में कहते हैं–

'डार डार में रकार फूलपात में रकार
जाति पाँति में रकार प्रीति प्यार में रकार है।
रंग–संग में रकार अंग अंग में रकार
राव रंक में रकार मूल धूल में रकार है।।
नूर पूर में रकार चन्द सूर में रकार
योग यज्ञ में रकार नाद विंदु में रकार है।
हर्ष शोक में रकार शून्य पूर में रकार
ज्ञानध्यानमें रकार यों रकारे सरकार है।।
नेम प्रेम में रकार हेम छेम में रकार
स्वर्ग भूमि में रकार राग रास में रकार है।
तात भ्रात में रकार बात बात में रकार
दिवारात में रकार सर्वोपर विचार है।।
मान दान में रकार खान पान में रकार
गान तान में रकार अनुराग रसधार है।
नाम रूप में रकार काम धाम में रकार
परब्रह्म में रकार यों रकारे सरकार है।।
धर्म कर्म में रकार ब्रह्म शर्म में रकार
नर्म गर्म में रकार हौश हिंर्स में रकार है।

प्रीति रीति में रकार जीत नीत में रकार
मीठ तीत में रकार नील पीत में रकार है।
रोम रोम में रकार कौम कौम में रकार
वक्र सौम में रकार राम रूप स्वाद सार है।।
व्याप्य व्यापक रकार ओंकार में रकार
सुधा सागर रकार यों रकारे सरकार है।।६९३।।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में देवर्षि नारदजी ने महाराज अम्बरीष से कहा है कि मैंने विज्ञान दृष्टि से देखा कि सारा विश्व श्रीरामनाम से व्याप्त है। वह दृश्य मनवाणी तथा इन्द्रियों से परे निर्विकल्प एवं परमानन्द दायक रहा।

''दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञान चक्षुषा।
वाङ्मनोगोचरातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्।।''

श्रीनामवैभव श्रीनामानुभवी के मुख से सुनने का फल श्रीशुक देवजी से सुनिये–

''यन्नाम वैभवं श्रुत्वा शङ्कराच्छुकजन्मना।
साक्षादीश्वरतां प्राप्तः पूजितोऽहं मुनीश्वरैः।।''

अर्थात् श्रीशुकदेवजी ने स्वयं कहा है कि जब मैं शुकयोनि में था तो भगवान शंकर के मुख से श्रीरामनाम का वैभव सुना था। उसका फल यह हुआ कि आज मेरी गणना ईश्वरकोटि में हो रही है और सभी मुनीश्वरों का पूज्य बन गया हूँ। यह श्रीनाम वैभव श्रवण मात्र का फल हुआ। हृदय में वैभव धारण करें तो क्या हो?

श्रीनाम महिमा

शब्दार्थ के अनुसार महान होने के भाव को महिमा कहते हैं। महत्त्व, माहात्म्य, बड़ाई आदि महिमा के ही पर्यायवाची शब्द हैं। श्रीकाकर्षिजी श्रीनाम महिमा को अमित अनन्त बताते हैं।

''महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनन्त रघुनाथा।।''१२१।३

श्रीनारदीयपुराण में देवर्षि नारदजी श्रीव्यासदेवजी से कहते हैं कि चिरायु एवं बहुश्रुत होने के नाते तथा अनेक साधन करके उनके फलाफल को अनुभव द्वारा जानकर मैं कहता हूँ कि मैंने अन्यान्य सभी साधनों के वैभव को अच्छी प्रकार तौल लिया है, परन्तु श्रीरामनाम माहात्म्य के सामने सेर भर में एक छटाँक के बराबर भी वे नहीं तुलेंगे।

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभव मया।
परन्तु नाम माहात्म्यकलां नार्हति षोडशीम्।।

श्रीपद्मपुराण में लोक पितामह ब्रह्माजी देवर्षि नारदजी से कहते हैं कि वेद वर्णित श्रीरामनाम के यथार्थ माहात्म्य को सुनकर बुद्विमानों को चाहिये कि अन्य साधनों की आशा भरोसा को छोड़कर श्रीरामनाम के निरन्तर जप में शीघ्र तत्पर हो जायँ।

श्रुत्वा श्रीनाम माहात्म्यं यथार्थं श्रुति पूजितम्।
सर्वाशां संविहायाशु स्मर्तव्यं सर्वदा बुधैः।।

श्रीकात्यायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम की महिमा जो कुछ कही सुनी जाती है,सभी वेद सम्मत है। इसमें अविश्वास करके जो कुतर्क करने लगते हैं वह मनुष्य पापभागी होते हैं।

श्रीरामनाम माहात्म्यं यथार्थ श्रुति सम्मतम्।
कुतर्क ये प्रकुर्वन्ति तेऽधमाः पापयोनयः।।

श्रीशारदा रामायण में कहा गया है कि श्रीरामनाम का माहात्म्य चारो युगों में सर्वोपरि जगमगाता आता है, किन्तु कलिकाल में श्रीनामही का अवलंब रह गया है।

चतुर्युगेषु श्रीरामं नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।
सर्वोत्कृष्टं न सन्देहो कलौ तत्रापि सर्वथा।।

श्रीआदि रामायण की बात हैं। सेतुवन्ध के प्रधान शिल्पी श्रीनलजी से सेतुरचना नहीं हो पा रही थी। श्रीहनुमतलालजी ने प्रत्येक शिला खंड पर श्रीरामनाम लिखा तथा उसे जल में तैराकर श्रीनल जी को श्रीनाम प्रभाव स्पष्ट दिखा। देखकर वानर गण चकित रह गये।

''लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापते र्मुहुः।
निविक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन्।।
संतरन्तिस्म दृष्तो रामनामाङ्किता जले।
तद् दृष्ट्वा वानराः सर्वे बभूवुर्विस्मतास्तदा।।''

श्रीहनुमतलाल जी ने पुनः बताया कि नल! मानव जातिके पाप तो पाषाण से भी अधिकभारी होते है। श्रीनाम महिमा से सारे पाप लुप्त हो जाते हैं। पुनः वह मनुष्य हल्का बनकर भवसागर से तर जाता है। यह आश्चर्य नही है क्या?

''ग्रावाङ्गणेभ्योऽपि जनस्य पापान्यतीव सारेणसमाकुलानि।
लघुक्रियन्ते मनुजा यदेतैर्भृशं विलुप्तैरिह तन्न चित्रम्।।''

श्रीनलजी ने कहा श्रीपवननन्दनजी! श्रीरामनाम के इस आश्चर्यजनक माहात्म्य को सुनकर तथा स्मरण करके मुझे तृप्ति नहीं हो रही है। अतः मुझे और भी महिमा सुनाने की कृपा करें।

''श्रृण्वन स्मरन् प्रभोर्नाम माहात्म्यमिद्मद्भुतम्।
न तृप्यामि मरुत्सूनो ! कथयस्व ततो मम।।''

श्रीमानसजी के नीचें लिखे उदधरणों से भी श्रीनाम महिमा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

''महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।।'' १।१९।४

''आकर चारि जीव जग अहहीं। कासी मरत परमपद लहहीं।।
सोपि राममहिमा मुनिराया। सिव उपदेस करत करि दाया।। १।४७।४।५

बरवैरामायण में श्रीवरवा रामारण भी यही बात कही गई है।

''महिमा रामनाम की जान महेस।
देत परमपद कासी करि उपदेस।।''

श्रीमिथिलाजी के नामजापक शिरमौर परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज का उपदेश है कि श्रीरामनाम की अकथ अपार महिमा तो कहने को हमने भी थोड़ा सा कह दिया है, परन्तु श्रीमहिमा का यथार्थ ज्ञान तो स्वयं श्रीनाम सरकार ही जापक के हृदय में दरशा देंगे। नाम रटन होना चाहिये उत्साहपूर्वक। श्रीवृहद उपासना रहस्य से उद्धरण दिया जा रहा है।

''कहेउ कछुक श्रीनाम की, महिमा अकथ अपार।
रटत रटत दरसावहीं, नामहिं हृदय मझार।।''

श्रीदोहावलीमें श्रीगोस्वामिपाद कहते है कि परम महिमामय गरीब निवाज श्रीरामनाम जापक को राज्यसुख दे डालते हैं,परन्तु पाजी मन धूर ढेर में मुर्गे की भाँति कण–कण ढूँढ़ने की आदत नहीं छोड़ता।

''नाम गरीब–निवाज को राज देत जन जानि।
तुलसी मन परिहरत नहिं घुरबिनियाँ की बानि।।'' १३।

श्रीविनय पत्रिका में कहते हैं कि माया के दल काल कर्म गुण स्वभाव मनुष्य के शिर पर बड़े प्रवल ताप पहुँचाते हैं। श्रीरामनाम महिमा की चर्चा चलते ही डर के मारे दब जाते हैं।

''काल करम गुन सुभाउ सबके सीस तपत।
रामनाम महिमा की चरचा चले चपत।। १३०।।

उलटे नाम की महिमा प्रगट की है श्रीवाल्मीकिजी ने और सीधे नाम की भगवान महेश्वर ने। जो नाम स्मरण करते हैं उनकी दुःख दुर्भाग्य–भाग्यलिपि लिखने को समुद्यत विधाता प्रसन्न होकर सुख सौभाग्य लिख देते हैं।

''नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको।
कहत मुनीस महेश महातम उलटे सीधे नामको।। १५६।।

''नाम महिमा अपार सेष सुक बार–बार, मति अनुसार वुध वेदहू बरनि।।२४६
लाभहू को लाभ सुखहू को सुख सरवस, पतित पावन डरहू को डर है।।२६६

श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित श्रीरामनाम परत्व पदावली में कहते हैं कि श्रीरामनाम की महिमा सारे भूमण्डल में प्रसिद्ध है। एक ही बार श्रीनामोच्चारण से श्रीनाम जापक को अज्ञान सिन्धु से पार उतारकर तीनों मायिक गुणों से ऊपर उठाकर उसके संसार को जला देते हैं। ऐसे श्रीनाम स्वजन रक्षक हैं। जैसे सिंह गर्जन सुनते ही वनके क्या मृग गण क्या मत्तगयंदगण सबके सब प्राण लेकर वहाँ से भाग जाते हैं, उसी भाँति नाम उच्चारण सुनते ही काम, क्रोध, मोह, द्वेष आदि दुष्टगण नाम श्रोता के हृदय से संत्रस्त होकर भाग जाते हैं। नाम जापकों का अनुभव सिद्ध सत्य

सिद्धान्त है। इसमें संशय नहीं करना चाहिये। विमल हृदय जापक नाम महिमा का अनुभव कर पाते हैं। वेद का प्रमाण है कि दानपुन्य तीर्थ ब्रत ज्ञान ध्यान आदि कोई भी पारमार्थिक साधन श्रीरामनाम की समता नहीं कर सकते। अतः श्रीबड़े महाराज जी का आदेश है कि सभी साधनों की आशा त्यागकर एकमात्र श्रीनामाभ्यास में पग जाना चाहिये। फिर तो आनन्द ही आनन्द लूटते रहो।

''रामनाम महिमा महि मंडल मधि ख्यात है।
बारक उच्चारत तम तोभ सिन्धु तारक तर
त्रिगुन तीर पारक जग जारक जन त्रात है।।
जैसे वनवासी मृग करिवर गन जीव सकल
सुनत शब्द सिंह तुरत भागत गुनि घात है।
वैसे ही अनेक दुष्ट काम कोह मोह द्रोह
नाम लेत नष्ट होत संशयिक न तात है।।
जेतिक कछु पुण्य दान, तीरथ व्रत ज्ञान ध्यान
नाम के समान सो न होहि वेद बात है।
ताते सब त्यागि पागि रहिये निज नाम माँह
(श्री) युगलअनन्य मौज मोद याते सरसात है।।''

श्रीबड़े महाराज जी श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका नामक स्वरचित बृहद्ग्रन्थ में कहते हैं कि श्रीरामनाम मन्त्र शिरोमणि है। इनसे मनके प्रबल संकल्प विकल्प मिट जाते हैं। अनमोल रत्नवत् इनकी महिमा विचार कर और साधनकी चाह धूलवत तुच्छ प्रतीत होती है। श्रीनाम में अमृत के समान स्वाद है। परमानन्द हृदय में सरसने लगता है। जिसने इनका जीभ से आस्वादन कर लिया उनके लिये सभी स्वाद फीके लगते हैं। अन्य साधना के लुभावने फल को समझकर उनके प्रति सानन्द हृदय प्रवृत होता है। परन्तु करने में कठिन और परिणाम हृदय को निराश करने वाला होता है। श्रीनाम की महिमा अति अगम है। एक ही बार मुख से उच्चारण करने पर इनके अलौकिक तेज का अनुभव होने लगता है।

''रामनाम मन्त्रसिरमौर दौर जौर हर
जौहर विचित्र पाय चाह और धूर है।
परम पीयूष मकरन्द मोद निधि नाम
जीह जौन चाख्यो ताके सब रस कूर है।।
साधन समूह दरसात हुलसात हिये
करत कठिन परिनाम चित्त चूर है।
(श्री) युगलअनन्य नाम महिमा अगम अति
बारक बदन ते बदत नवनूर है।। ९३३।।

कोटि– कोटि शारद, शेष, गणेश, महेश, वृहस्पति, ब्रह्मा, मुनीश्वर जन श्रीनाम सरकार के अनन्त गुणगण गाकर नेति कह देते हैं। तब काम मद से मलिन बुद्धिवाले साधारणजन श्रीनाम की अपार महिमा कैसे कह पायेंगे? अतः भद्दी भावना एवं भ्रम छोड़कर श्रीसीतारामनाम के प्रति नवल नेह बढ़ाना चाहिये। इनके प्रकाश में आपको भाव का भवन ही दृष्ट होगा।

'सारद असंख्य गननाथ गुरु गिरापति
पदुम अपार गिरिजेश शेष शांति से।
अमित मुनीश ईश अमल अनन्त गुन
गावे एक रस नेति कहत सुपांति से।।
नाम नेह नवल सजाइये बिहाय भ्रम
भावना भदेश भाव भवन सुकांति से।
(श्री) युगल अनन्य मति मलिन मनोज मद
महिमा अपार नाम कहै कौन भाँति से।।''९३९।।

महात्मा गाँधी कहते हैं नाम महिमा बुद्धिवाद से सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धा से अनुभव साध्य है।

कलकत्ते के नामनिष्ठ सज्जन श्रीज्वालाप्रसाद जी कानौडिया कहते है। मरूभूमि सदृशशुष्क हृदय में आनन्दरस की लहरें उत्पन्न करने के लिये, घोर अन्धकाराच्छन्न हृदयाकाश में प्रकाश का प्रादुर्भाव करने के लिए पापपंक में पड़े हुये जीवों को उससे बाहर निकालने के लिये, विषय भागों में आसक्त चंचलचित्त में अटल शान्ति स्थापन करने के लिये घोर नरको में प्रबल वेग से जाते हुए जीव की गति को रोक कर उसे कल्याण के पावन पथ पर चलने के लिए और त्रिविध तापों से संतप्त प्राणियों को सुखमय शीतलता के स्थान तक पहुँचाने के लिये यदि कोई परमसाधन है तो वह एक श्रीभगवन्नामही है। शास्त्रों से साधु महात्माओं के वचनों से युक्तियों से और व्यावहारिक दृष्टि से भी नाम महिमा प्रसिद्ध है। यद्यपि संसार में कुछ ऐसे मनुष्य भी हैं जो नाम महिमा स्वीकार नहीं करते, परन्तु इससे नाम–महिमा में कुछ भी कमी नहीं होती। हीरा आदि रत्नों की पहचान और उसकी कीमत का ज्ञान बहुत से लोगों को नहीं होती, इससे उसकी कीमत कहीं चली नहीं जाती। इसी प्रकार नाम की शक्ति अनादिकाल से अप्रतिहत, है स्वप्रकाश है, यह सर्वदा ऐसी ही बनी रहेगी। स्मृति में कहा गया है–

''नाम्नो हि यावती शक्तिः पापर्निहरणे हरेः।
तावत्कर्तु न शक्नोति पातकं पातकी नरः।।''

यदि कोई श्रद्धालु आस्तिक पुरुष प्रेम से नामका अभ्यास करता हुआ उसकी महिमा पर विचार करे तो उसके हृदय में यह बात निःसंशय सिद्ध हो जाती है कि नाम महिमा का जितना शास्त्रों में वर्णन है और जितना श्रेष्ठ पुरूषों का कथन है वह सब बहुत ही थोड़ा है। अपार असीम महामहिमार्णव की सीमा बतलाने में न तो लेखनी समर्थ है और न वाणी ही! ग्रन्थों का वर्णन और

श्रेष्ठ पुरूषों का कथन तो केवल नाम प्रेमियों के कृतज्ञताभिभूत हृदयों का उच्छवासमात्र है। समुद्रमें से उतना ही जल लिया जा सकता है जितना बड़ा अपने पास वर्तन होता है। सारे समुद्र जल का ग्रहण असम्भव है। इसी प्रकार नाम माहात्म्य का भी विशेष उल्लेख या वर्णन सर्वथा असम्भव है। कोई यदि नाम माहात्म्य वर्णन करने का अभिमान करता है तो वह उसके केवल उपहास का विषय ही होता है। एक भक्त ने कहा है–

''तत्वे न यस्य महिमार्णव शीकराणुः शक्यो न मातुमपि सर्वपितामहाद्यैः।
कर्तु तदीय महिम स्तुति मुद्यताय, मह्यं नमोस्तु कवये निरपत्रपाय।।''

अर्थात् जिस नाम महिमा रूप समुद्र के अतिसूक्ष्म कण का यथार्थ परिमाण लोकपितामह ब्रह्मादि नहीं बतला सकते। उसे बताने के लिये यदि हम जैसा कोई साहस करे तो ऐसे निर्लज्ज कवि को नमस्कार है। मतलब यह है कि रूद्रादिदेव भी जिसके वर्णन में असमर्थ हैं। उसका वर्णन हम कैसे कर सकते हैं?

''अमित महत्ता नाम की, को करि सकै बखान।
जाके उच्चारत करत, बिकत आप भगवान्।।''

नहि भजन यहि सम आन कहत सुमन्दमति नरबाम है।
श्रम कवन रटत सुनाम में नहि लगत कौड़ी दाम है।।
महिमा महान सुसुलभ अस सब भाँति प्रद आराम है।
अलि प्रेमलतिका रटत जे जन जात ते परधाम है।।
महि भार धारहि शेष शिर जेहि नामबल रवि तपत है।
ससि स्रवत अमृत नाम बल खल काल कलिमल छपत है।।
सियरामनाम अनूप धुनि सुनि भूत प्रेतहु कँपत है।
अस प्रेमलतिका जानि शिख शुचि संत नामहि जपत है।।
जेहि नामबल जल बरषहीं घन, प्रवल वायू बहत है।
सियरामनाम प्रताप पाय सुअनल सरब सुदहत है।।
विधि करहि सृष्टि सु हरहिं हर हरिभरत पाइ सुमहत है।
अस प्रेमलतिका नाम महिमा अकथ श्रुति नित कहत है।।
गुन प्रभाव के ज्ञान बिनु,नाम अवज्ञा होय।
रटतउ होत न विमल उर प्रेमलता सुन सोय।।

''कहे करजोर कर यह 'श्रीहरि' ऐं सज्जनों सुन लो।
बता कोई न सकता नाम की महिमा हिये गुन लो।।
कोई ही पारखी ज्यों दाम हरिको लगा सकते।
कभी शिव शेष नारद नामकी महिमा बता सकते।।
जपैंगे सो होवेंगे मंगल निधान।।''

श्रीरामनाम का मूल्य

(कल्याण भगवन्नाम महिमा अङ्क पृ०४४८ से साभार उद्धृत)

एक नगर के बाहर एक महात्मा रहा करते थे। एक श्रद्धालु भक्त प्रतिदिन उनके पास जाता और श्रद्धाभक्ति पूर्वक खूब उनकी सेवा करता। उसकी सेवा से महात्माजी प्रसन्न हो गये और बोले तू ईश्वर भक्त है, तू साधुसेवी है, शास्त्र के वचनों पर विश्वास करता है। साधन निष्ठ है, तेरी सरलता और सेवा सराहनीय है। तू व्यर्थ के कुर्तकों में नहीं फँसता, किसी का तू अहित नहीं करता। ये ही सब ऐसे आदर्श गुण हैं जो भक्तों में सहज ही होने चाहिये।

तुझको इन सद्गुणों से सम्पन्न और हर प्रकार से योग्य समझकर एक परम गोपनीय मन्त्र दे रहा हूँ। इस मन्त्र के वास्तविक महत्त्व को कोई नहीं जानता। इसे किसी को बतला देना मत। यह कहकर महात्माजी ने 'राम' उस भक्त के कान में कह दिया। वह भक्त 'राम–नाम' के जप में प्रवृत्त हो गया।

अब तो राम का जप उस श्रद्धालु भक्त का स्वभाव बन गया। न किसी की ओर देखना, न ध्यान देना, न कुछ कहना बस, निरन्तर राम का जप करते रहना। भक्त रोज गंगास्नान करने जाता–आता, पर राम के जप के अतिरिक्त दूसरे से उसका कोई प्रयोजन न था। एक दिन वह गंगा नहाकर लौट रहा था कि उसका ध्यान उन कुछ लोगों की ओर गया, जो गंगास्नान से लौटते समय जोर–जोर से 'राम राम' बोल रहे थे। उनके द्वारा राम शब्द सुनते ही भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि महात्माजी तो यह कहते थे कि परम गुप्त मन्त्र है। पर इसे तो जन जन बोल रहा है फिर इसमें गोपनीयता कहाँ रही? मुझसे तो कहा कि किसी को बतलाना नहीं और यहाँ तो हर एक के मुखपर राम है। अब वह भक्त घर न जाकर सीधा महात्माजी की कुटिया पर पहुँचा और अपने मन का सारा सन्देह महात्माजी के सामने निवेदन करके बैठ गया। महात्माजी उसकी मनोदशा से अवगत हो गये। उन्होंने कहा अच्छी बात है। मै तुम्हारे सन्देह को मिटा दूँगा तुम चिंता मत करो। पहले मेरा एक बहुत जरूरी काम कर दो। यह कह कर महात्माजी ने अपनी झोली से एक चमकता काँच सा निकाल कर उस भक्त को दिया और कहा वत्स इसको लेकर तुम बाजार में जाओ और इसका मूल्य अँकवा लाओ। देखो इसको किसी भी मूल्य पर बेचना नहीं है केवल यही पता लगाना है कि इसका मूल्य क्या है?

सरलचित्त और श्रद्धालु भक्त ने महात्माजी की बात मान ली। अपने सन्देह को एकबार वहीं छोड़ दिया और महात्माजी के आज्ञानुसार उस काँच का मूल्य अँकवाने के लिये वह बाजार में गया। बाजारमें प्रवेश करते ही उसे एक साग बेचने वाली मिली। भक्त ने उस सागवाली को दिखाकर उसका मूल्य पूछा। सागवाली ने विचार किया कि यह काँच बड़ा ही चमक रहा है। बच्चों के खेलने के लिये बढ़िया चीज है। यों सोचकर उसने भक्त से कहा यह मुझे दे दो और बदले में दो सेर आलू ले जाओ।''

भक्त ने वह काँच वापस ले लिया और आगे बढ़ा। सामने सुनार की दूकान आयी। सुनार को दिखा कर भक्त ने काँच का मूल्य पूछा। सुनार ने देखकर सोचा कि यह देखने में नकली हीरा सा लगता है, अत: इसका मूल्य सौ रुपया देकर भी ले लेने में कोई हानि नहीं होगी। सुनार ने उस काँच का दाम

सौ रुपये बता दिया। सुनार से काँच लेकर भक्त आगे बढ़ा। एक महाजन की दुकान पर गया और उसे काँच दिखाया। महाजन ने देखा और सोचा– है तो यह नकली हीरा पर इतना बढ़िया है कि इसे कौन नकली कहेगा? फिर हमारे घर की बहू बेटियो को पहने देख कर तो सभी इसको असली ही कहेंगे। यों बिचार कर महाजन ने एक हजार रुपये मूल्य रूप देने को कहा। भक्त और आगे बढ़ा। अब भक्त के मन में उत्साह आ गया। दाम की जाँच–ज्यों ज्यों करता जा रहा था, त्यों त्यों काँच की श्रेष्ठता और उच्चता प्रगट और सिद्ध होती जा रही थी। फिर एक जौहरी की दूकान पर गया। जौहरी ने देखा और मनही मन कहा, यह लगता तो हीरा है, पर इतना बड़ा और बढ़िया हीरा तो कभी देखा नहीं। शायद हीरा न हो पर यदि कहीं हीरा हुआ तो इसका मूल्य अत्यधिक होगा। अतएव एक लाख रुपये तक में इसे खरीद लेना बुरा न होगा। यह सोचकर पूरे एक लाख में हीरा लेना चाहा। भक्त ने हीरा वापस ले लिया। भक्तका विश्वास बढ़ गया। तदन्तर वह नगर के सबसे बड़े जौहरी के यहाँ गया और उसे हीरा दिखाया। जौहरी ने देखा बारीकी से परखा और कहा–भाई इतना बढ़िया हीरा तुम्हें कहाँ से मिल गया? यह तो अमूल्य है इतना भव्य और बड़ा हीरा मैं ने आजतक कहीं देखा नहीं। यह इतना मूल्यवान है कि जौहरियों के तथा बड़े बड़े नरेशों के सारे हीरों का जितना दाम हो सकता है वह सब मिलकर भी इसके मूल्य के बराबर नहीं हो सकता। वास्तव में इसका मोल आँकना किसी की भी बुद्धि से बाहर की बात है।

यह उस काँच (और अब हीरे) के मूल्यांकन की पराकाष्ठा थी। भक्त लौटकर महात्माजी के पास आ गया। महात्माजी ने भक्त से काँच का मूल्य पूछा। भक्तने कहा महराज! यह तो अमूल्य हीरा है। सागवाली ने दो सेर आलू बताया। सुनार ने बदले में सौ रुपये देने चाहे। महाजन ने एक हजार आँके। जौहरी ने एक लाख कहा और नगर के सबसे बड़े जौहरी ने यही कहा कि यह अमूल्य है। देश के सारे हीरे मिलकर भी मूल्य में इसकी बराबरी नहीं कर सकते। महात्माजी ने वह हीरा वापस लेकर झोली में रख लिया।

भक्त ने कहा महाराज! मैं तो आपके आज्ञानुसार आपका काम कर आया अब आप मेरे सन्देह को दूर कीजिये। महात्माजी ने हँसते हुए कहा कर तो चुका भैया! बात भक्त की समझमें आई नहीं। उसने विनम्रता सहित पूछा कैसे गुरुदेव? महात्माजी बड़े प्यार से बोले–अभी तुम को प्रत्यक्ष उदाहरण दिया न? तुम हीरा लेकर बाजार में गये। किसी ने दो सेर आलू, किसी ने सौ रुपये, किसी ने एक हजार अथवा एक लाख मूल्यांकन किया। पर सच्चे जौहरीने इसे अमूल्य बताया। चीज एक ही थी पर सबका मूल्यांकन अलग अलग था। इसी तरह राम नाम भी अमूल्य वस्तु है। इसका सच्चा मूल्य आँका नहीं जा सकता और तो क्या? स्वयं राम भी इसका मूल्य नहीं बता सकते। राम न सकहि नाम गुन गाई इस रहस्य को वही जानता है जिस पर भगवान की कृपा होती है। राम नाम लेने वाले बहुत लोग हैं, पर कीमत जानने वाले विरलेही होते हैं। भक्तका सारा सन्देह दूर हो गया। अत्यधिक श्रद्धा भाव से उसने महात्माजी के चरणों में प्रमाण किया और वह अधिक नाम निष्ठा के साथ घर को लौट आया।

श्रीनाम–प्रभाव

प्रभाव का शब्दार्थ होता है, किसी साधन की अलौकिक फलोत्पादिनी शक्ति। श्रीसीतारामनाम का प्रभाव अचिन्त्य है। नाम प्रभाव की पराकाष्ठा तक वेदान्त पुराण सन्तों की बुद्धि नहीं पहुँच पाती। इसी से कहा गया है–

"रामनाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा।।" १।४६।२

जिन्होंने प्रभाव जाना भी उसे आंशिक ज्ञानही कहेंगे। ऐसे कहने को तो प्रभाव जानकार श्रीशिवजी भी हैं। प्रभाव ही जानकर कालकूट विष पान कर गये और वह हो भी गया, नामप्रभाव से अमृत।

"नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।" १।१९।८

श्रीक्रियायोगसार में भी यही कहा गया है सब वेदों से प्रशंसित श्री महेश ही नाम प्रभाव को जानते है।

"रामनाम प्रभावोऽयं सर्ववेदैः प्रपूजितम्।
महेश एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने।।"

श्रीप्रमोद नाटक में कहा गया है कि बानराधिप श्रीहनुमतलालजी परात्पर शक्तिधाम श्रीराम नामके प्रभाव को विशेष रूप से जानते हैं। यद्यपि आप श्रीरामरूप के अनुरागी है, फिर भी आपने उनके नामका ऐसा अधिक अभ्यास किया कि आपके साढ़े तीन कोटि रोम छिद्रों से प्रत्येक श्वास में नाम ध्वनि गुञ्जित होती रहती है।

"नाम्नः पराशक्तिपतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराजराजः।
यद्रूपरागीश्वर वायुसूनुस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम्।।"

श्री सौर्य धर्मोत्तर में कहा गया है कि श्रीरामनाम का निर्मल प्रभाव जपावेश में आविष्ट कोई कोई सज्जन ही जानते हैं।

"श्रीमद्रामस्य नाम्नस्तु प्रभावं निर्मलं मुने।
जपावेशवशेनैव ज्ञायते सज्जनैः क्वचित्।।"

श्रीलिंगपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परात्परतम प्रभाव बचन अगोचर है। नामाभ्यास करते करते श्रीनामप्रभाव से सम्पूर्ण जगत् श्रीनामही से प्रकाशित दृष्ट होता है।

"रामनाम्ना जगत्सर्व भासितं सर्वदा द्विजे।
प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मूने।।"

श्रीमार्कण्डेयपुराण में कहा गया है कि अज्ञान के कारण जगत चराचरमय प्रतीत होता है। श्रीरामनाम के प्रभाव से वह अज्ञान मिट जायगा तो सम्पूर्ण जगत श्रीसीताराममय दीख पड़ेगा।"निज प्रभुमय देखहिं जगत" वाली दशा आ जायगी।

"अज्ञान प्रभवं सर्व जगत्स्थावर जङ्गमम्।
रामनाम प्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।"

श्रीवराहपुराण में कहा गया है कि संयोगवश एक वृद्धावस्था से जर्जर यवन को सूकर के बच्चे ने धक्का मारा। वह धक्के खाकर धराशायी हो गया तथा मरने के पहले कहता गया कि हराम ने मुझे मारा। हराम शब्द तो सूकर वाचक है, परन्तु उसके अन्तिम दो अक्षरों में रामनाम आया है। उस नामाभास के प्रभाव से वह इस अपार भवसागर से गोखुर के समान पार उतर गया। जिस नामाभास में ऐसा प्रभाव है उस साक्षात रामनाम को जो नाम रसिक प्रेमपूर्वक जपते हैं वह यदि श्रीरामधाम को प्राप्त करते हैं तो इसमें क्या आश्चर्य है?

"दैवाच्छूकर शावकेन निहतो मलेच्छो जरा जर्जरो।
हारामेण हतोऽस्मि भूमिपतितों जल्पंस्तनुं त्यक्तवान।।
तीर्णो गोष्पद बद्मवार्णवमहो नाम्नः प्रभावादहो।
किं चित्रं यदि रामनाम रसिकास्तेयान्ति रामास्पद।।" वराह पुराणे

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ।।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विसेषि नहिं आन उपाऊ।।१।२६।७

श्रीनामके प्रभावसे अनहोनी बात भी हो जाती है। कोई कहे कि किसी नाम जापक ने नाम प्रभाव से पत्थर पर कमल उत्पन्न कर दिया है तो उसे बिल्कुल सही मान लेना चाहिये।

नाम प्रभाउ सही जो कहै कोउ सिला सरोरुह जामो।। श्रीविनय २२८

श्रीब्रह्माण्ड पुराण में कहा गया हैं कि श्रीरामनाम के परात्पर प्रभाव को सुनकर जो इसे सत्य न मानें उस नाम प्रीति प्रतीत हीन अभागे का मुख भी नहीं देखना चाहिये।

"श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
सत्यं यो नाभिजानाति द्रष्टव्यं तन्मुखं नहि।।"

श्रीनाम प्रभाव से श्रीसीताराम जी के साक्षात दर्शन होते हैं। श्रीनामप्रभाव से भक्ति, परमानन्द की प्राप्ति होती है। श्रीरामनाम के प्रभाव से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। श्रीरामनाम में चमत्कार आदि आगे लिखे जाने स्तम्भों में श्रीनाम प्रभाव का विशेषरूप से विवेचन होगा।

यहाँ हम श्रीबड़े महाराज जी की कतिपय महावाणियाँ इस प्रभाव सम्बन्ध की उद्धृत करेंगे। श्रीबड़े सरकार कहते हैं कि मांगलिक कार्य समूह श्रीनाम प्रभावही से सिद्ध होते हैं। परमानन्द धाम श्रीरामनामही के प्रभाव से बड़े–बड़े पापियों ने पावन बनकर सिद्धि भी पाई है। उदारता में कल्पवृक्ष, कामधेनु और चिन्तामणि के समान दरिद्र को भी धनकुबेर बनाने वाले हैं। श्रीसीतारामनाम दिव्यमंगल निधान के अतिरिक्त अन्य किस साधन के पास ऐसा ऐश्वर्य है?

"महाराज नाम के प्रभाव ही से काज कुल
राज सुभ सरस समाज सत सिद्धि है।

सीतारामनाम मोदधाम प्रतिकाश पाय
पावन परम पातकीश लब्ध रिद्धि है।।
सीतारामनाम काम भूरूह सुधेनुसुर
चिंतामनि चारू रंक सौपत सुनिद्धि है।
(श्री)युगलअनन्य ऐसो नाम सीताराम दिब्य
भव्यता भंडार बिना कौन को समिद्धि है।।''२०८।।

श्रीसीतारामनाम नित्यरसनिधान है। मायिक विषय रस को सुखा डालते है। जीभ से जप,मन से नाम प्रभाव चिन्तन करने पर हृदय में परमानन्द की वृष्टि होने लगती है। युगल बिहार के तो बीज ही हैं श्रीनाम। इनसे रहस्यज्ञानरूपी वृक्ष प्रगट होकर फूलने फलने लगते है। त्रिगुण से पार कराकर श्रीनाम सूर्य के समान दिव्यज्ञान का प्रकाश करते हैं। श्रीनाम प्रभाव से प्रभु से विमुख कराने वाले काम–क्रोधादि विकारों के साथ कलिकाल भी नष्ट हो जाते हैं। श्रीबड़े महाराज आदेश करते हैं कि शोक संताप देने वाली लौकिक बड़ाई की चाहना को जलाकर नाम जपने में तत्पर हो जाइये। देर मत करिये।

''एकरस सरस अरस हरनेश नाम
महामोदधाम मन माझ बरसत जब।
विशद विहार वर बीज अद्‌भुत चीज
तीज तम तरनि विभास विलसत तब।।
काम कोह काफिर कलंक कलिकाल कटु
कायर अनेक रुच्छ तुच्छ नसि जात दब।
(श्री)युगल अनन्यनाम जपिये जहान जस
जाल जलवाय हाय विलम न कीजै अब।।''९५०।।
नाम प्रभाव अपार वखानत रामउ हिये लजाते हैं।
पतितउ पावन होत रटत जेहि बिनुश्रम परमपद पाते हैं।।
यवन गयो प्रभुधाम नाम जपि व्याध सुब्रह्म कहाते हैं।
प्रेमलता ते धन्य लोक में जे सियराम सुगाते हैं।।

– श्रीहितोपदेश सतक

नामही में रूप राम नाम ही अनूप धाम
नामही में गुनग्राम प्रभुता सुनामही।
नामही में भाव भक्ति नामही में रसव्यक्ति
नामही में प्रेमी ज्ञानी प्रेमा परा पावहीं।।

नामही प्रभाव एक जानै रधुराउ शिव
हनुमत आदिक को आपही जनावहीं।
सीताराम चरण शरण परि मागैं वर
रसरंग सीताराम नामही रटावहीं।।

श्रीनाम–शक्ति

श्रद्धेय श्री हरिबाबा कहते हैं कि जैसे प्रभुमें अनन्त चमत्कार है, अनन्त शक्तियाँ है, वैसे ही उनके नाम में भी समझिये। नहीं– नहीं उनसे भी अनन्तगुने चमत्कार अनन्तगुनी शक्तियों से भरी हुई यह नाममयी जादू की पिटारी है। इसके लिये हमतो उसे अनन्त प्रणाम करते हैं। (कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक पृ०७० से साभार उद्धृत) वहीं पाद टिप्पणी में श्रीनाम की प्रधान १५ शक्तियाँ गिनायी गई हैं। वह **नीचे लिखी** जाती है–

१– भुवन पावनी– यथा श्रीहनुमतलालजी ने श्रीहनुमत संहिता में कहा है कि हे श्रीरघुलालजी! आपसे आपका रामनाम अधिक है। यह मेरी निश्चित समझ है। समझने का कारण भी है। आप तो श्रीअयोध्या मात्र के प्राणियों को अपने साथ श्रीधाम ले गये, किन्तु आपके नाम तीनों लोको का अद्यावधि उद्धार करते है।

''रामतत्त्वोऽधिंक नाम इति मे निश्चला मतिः।
त्वया तु तारताऽयोध्या नाम्ना तु भुवन त्रयम्।।''

२– सर्व व्याधि विनाशिनी–समुद्रमन्थन से प्रगट हुये धन्वन्तरि का यह श्लोक प्रसिद्ध है कि अच्युत अन्त गोविंद आदि भगवन्नाम रूपी औषधि से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते है। तब सभी नामों में श्रेष्ठ रामनाम से क्यों नही होगा?

''अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।''

महात्मा गाँधी का भी यही सिद्धान्त है कि श्रीरामनाम से सब रोगो की निवृत्ति होती है। कहते हैं कि एक कोटि नामजप से तनु स्थान की शुद्धि होती है तब सभी शारीरिक रोग मिट जाते हैं। जब असाध्य भवरोग श्रीनाम से मिटता है तो शारीरिक रोगों की उसके आगे क्या हस्ती।

''जासु नाम भव भेषज , हरन घोर त्रय सूल।''

३–सर्वदुःख हारिणी– श्रीलोमश संहिता में कहा गया है दो अक्षर वाले श्रीरामनाम का बुद्धिमान जन जहाँ संकीर्त्तन करते हैं, वहाँ प्रभु प्रगट होकर जापक के सभी दुःख मिटा देते हैं।

''रामेति द्वयक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः।
तत्राविर्भूय भगवान सर्व दुःखं विनाशयेत्।।''

४—कलिकाल भुजंग भय नाशिनी— ''नाम सकल कलि कलुष विभंजनि।''

५—नरकोद्धारिणी— नृसिंह पुराणमें कहा गया है जो नीच पुरुष नरकगामी है जीतेजी मृतक तुल्य है वैसा पुरुष भी नाम कीर्त्तन करे तो उसे भी मुक्ति मिल जाती है।

''नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतोपमाः।
तेषामपि भवन्मुक्ती रामनामानुकीर्त्तनात्।।''

कहते हैं कि एकबार भगवद्धाम जाते हुये पुष्करमुनिको नरक के ऊपर से गुजरना पड़ा। नरकवासियों को हाहाकार चित्कार करते हुये देख उन्हें बड़ी दया आई। सबों को आपने उपदेश किया कि हाहाकार मचाने से क्या लाभ? उसी मुख से रामनाम का उच्चारण करो। तुम्हारे सभी नरक कष्ट मिट जायेंगे।

''किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुना ध्रुवम्।
स्मरध्वं राम नामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम्।।''

उनके मुख से नामोच्चारण सुनते ही नरकवासी नरक से निकल निकलकर उनके साथ भगवद्धाम गये।

''श्रुत्वा नामानि तत्रस्था स्तेनोक्तानि तथा द्विज। नरका नरकान्मुक्ताः सद्य एव महामुने।''

ऐसा इतिहासोत्तम में कहा गया है। इसी पर कहा है कि सन्तोंके संग ऐसा अद्भुत प्रभाव है कि नरक भी मिट जाते हैं।

''अहो सतां संगममद्भुतं फलं परं पवित्रं नरकादि नाशनम्।''

६— प्रारब्ध विनाशिनी— श्रीआदि रामायण में श्री हनुमतलालजी ने श्रीनलजी से कहा है कि बुधजनों ने कहा है कि श्रीरामनाम ही प्रारब्ध कर्म मिटाने में प्रवीण है। शबरी अधम किरात जाति की नाममहिमा जानकर ही मुनिजनों के भी प्रणम्य बन गयी।

'' प्रारब्ध कर्मापहृति प्रवीणं रामेति नामैव वुधैर्निरूक्तम्।
यज्ज्ञान मात्रादधमा किराती मुनीन्द्र बृन्दैरभवन्नमस्या।।''

७—सर्वापराध भंजनी—श्रीबोधायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम में अपराध भंजनी सामर्थ्य इतनी अधिक है कि पृथ्वी के पापी उतना पाप कर भी नहीं सकते।

''रामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज।
नहि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तु क्षमः क्षितौ।।''

श्रीवाराह पुराण में कहा गया है कि करुणासिन्धु रामनाम अपराध निवारक है। इनमें जिसे प्रीति नही वह महा पापी है।

''करुणा वारिधी नाम ह्यपराध निवारकम्।
तस्मिन्प्रीति न येषां वै ते महापापिनो नराः।।''

८— कर्म सम्पूर्ति कारिणी— श्रीबृहन्नारदीय में कहा गया है कि कलिकाल के वेदोक्त कर्म विधि विधान से पूर्ण नहीं हो पाते हैं। अतः विधिहीन कर्म निष्फल हो जाते हैं। किन्तु रामनामकीर्त्तन करते हुये वही कर्म करें तो त्रुटिपूर्ण कर्मो का भी पूरा— पूरा फल मिलेगा उसे।

"न्यूनातिरिक्ता सिद्धि कलौ वेदोक्त कर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्ण फल दायकम्।।"

श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि जिनके नाम के स्मरण कीर्त्तन से तप यज्ञादि क्रियाओं की न्यूनता भी सम्पूर्ण फलदायिनी हो जाती है तथा जापक कर्म बन्धन से भी शीघ्र छूट जाते हैं, उन अच्युत राघव की हम वन्दना करते हैं।

"यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।"

९–सर्ववेद तीर्थाधिक फलदायिनी– लघुभागवत में श्रीव्यासदेवजी ने श्रीशुकदेवजी से कहा है कि मुक्ति तो श्रीरामनाम के रटने से ही होती है। श्रीरामनाम की तुला में वेद आगम शास्त्र तीर्थादिक कर्म नगण्य है।

किं तात वेदागम शास्त्र विस्तरैस्तीर्थादिकैरन्यकृतैः प्रयोजनम्।
यद्यात्मनो वाञ्छसि मुक्तिकारणं श्रीरामरामेति निरन्तरं रट।।

१०– सर्वार्थ दायिनी–

"रामनाम कामतरु जोइ जोइ मांगि है।
तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खागि है।।"

श्री विनयपत्रिका।

११–जगदानन्ददायिनी– श्रीरहस्यनाटक में कहा गया है कि श्रीरामनाम जपने से कोई सुख मिलने से बाकी नहीं रहता है। यदि कोई कहे कि अमुक सुख श्रीनाम नहीं देंगे, तो वह सुख आकाश कुसुम वन्ध्यापुत्र के समान अनहोनी मानना।

"स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः।
तत्सुखं खे गतं पुष्पं बन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम्।।"

१२– अगति गतिदायिनी शक्ति–

"पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।
सुमिरि सु भूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।"

श्रीविनय पत्रिका।

१३– मुक्तिप्रदायिनी– श्रीक्रियायोगसार नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि कोटि– कोटि जन्म पर्यन्त अनेक दुःख सहकर किये गये कर्म भी मुक्ति देने में समर्थ नहीं होते। श्रीरामनाम के एक ही बार उच्चारण में वह मुक्ति अनायास मिल जाती हैं। तब आपही बताइये कि रामकीर्त्तन से बढ़कर कर्म है ही कौन?

"अत्यन्त दुःख लभ्योपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।
लभ्यते राम नाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम्।।"

१४—श्रीरामधाम दायिनी शक्ति—श्रीपद्मपुराण में भगवान शंकरने भगवती पार्वती से कहा है— श्रीसाकेत नामक रामधाम योगीश्वरों के लिये भी दुर्लभ है, परन्तु श्रीरामनाम की आराधना से उसकी सुखपूर्वक प्राप्ति हो जाती है।

"दुर्लभ योगिनां नित्यं स्थानं साकेत संज्ञकम्।
सुख पूर्व लभेत्तत्तु नाम संराधनात् प्रिये।।"

१५— भगवत्प्रीति दायिनी शक्ति— उपर्युक्त १४वीं और १५वीं शक्तियों के परिचायक पद नीचे पढ़िये।

"रसना रट रामनाम धाम दैन हारो।
अनुपम अनुराग वाग विगसत उजियारो।
आलस मति वालस विष लालस तजि मोह मान
मालिक मकसूद नाम नेह धीय धारो।।
सात तवक पार लोक शोक से विहीन नित्य
त्रिगुन तार तिमिर तरून तरनि सुरुचि सारो।
अनुभव वल अर्थ सत समर्थ व्यर्थ हरन अखिल
मनन करत पल— पल प्रति प्रभा प्रगट प्यारो।।
धीरज धरि ध्यान धारना जमाय जाय स्वच्छ
अच्छ में प्रतच्छ भान, होत नृपति वारो।
(श्री) युगल अनन्य अमल— कमल फूलत फवि मधुप सुमन
भूलत नहिं हूलत हिय, हिरस अरस आरो।।"

श्रीवृहद् विष्णुपुराण में तीन और शक्तियों के नाम गिनाये गये है तथा आदि कहकर इन तीनों के अतिरिक्त और भी अनेक नाम—शक्तियों की सूचना दी गयी है।

१—स्वभाविकीशक्ति,
२—ज्ञानशक्ति,
३—क्रियाशक्ति,

लेखक की सम्मति में—

४—अघट घटना पटीयसी शक्ति आदि।

"स्वभाविकी तथा ज्ञान क्रियाद्याः शक्तयः शुभाः।
रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिताः।।"

कल्याण के श्रद्धेय विद्वान लेखक ने उपर्युक्त पन्द्रह शक्तियाँ श्रीरामनाम की गिनाकर हमारे नाम विज्ञान में एक नई कड़ी जोड़कर हमारा बड़ा ही उपकार किया है। परन्तु इन पंक्तियोंके तुच्छ लेखक की सम्मति में श्रीरामनाम की अचिन्त्य एवं अनन्त शक्तियों को किसी सीमित संख्यां मे परिगणन करना श्रीनाम विज्ञान की अज्ञानता समझी जायगी। सच पूछिये तो अशेष शक्तियाँ श्रीरामनामही से उत्पन्न हुई है। शक्ति परत्त्व कहने वाले श्री कालिकापुराण का वचन है—

''सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमस: परम्।
श्रीरामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।''

श्रीशिव संहिता कहती है कि श्रीरामनाम स्थित रा मात्र परब्रह्म वाचक है तथा मकार सभी शक्तियों सें वंदित पराशक्ति वाचक है।

''रा शब्दस्तु परंब्रह्म वाचकत्वेन बोधित:।
मकारस्तु पराशक्तिस्सर्व शक्त्यादि वन्दिता।।''

अत: श्रीरामनाम कासामर्थ्य वैभव शौर्य एवं विक्रम सभी सर्वथा अनिर्वचनीय है। ऐसा वायुपुराण में भगवान शंकर ने श्रीनारदजी से कहा है।

''श्रीरामनाम सामर्थ्य वैभवं शौर्य विक्रमम्।
न वक्तु कोषि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद।।''

महात्मा गाँधी (ह०से०१३–१०–१९४६में) लिखते हैं कि रामनाम लेना एक महान शक्ति का सहारा लेना हैं। वह शक्ति जो कर सकती है वैसी दूसरा कोई शक्ति नहीं कर पाती। इसके मुकाबले अणुबम कोई चीज नहीं। इससे सब दूर होते हैं।

मैं बिना किसी हिचकिचाहट के साथ कह सकता हूँ कि लाखों आदमियों के द्वारा सच्चे दिलसे एक ताल और लयके साथ गाये जानी वाली रामधुन की ताकत फौजी ताकत के दिखावे से बिल्कुल अलग और कई गुना बढ़ी चढ़ी है।

सामूहिक रामधुन जिस काम को करोड़ों लोग एक साथ कर सकते हैं, उसमें एक बेजोड़ ताकत पैदा हो जाती है। आपको अपने घरों में भी इसका अभ्यास करना चाहिये। मै आपसे कहूँगा कि जब रामधुन स्वर और तालके साथ गायी जाती है तो स्वर ताल और विचार तीनों का मेल मिठास और शक्ति का एक ऐसा अमिट वातावरण पैदा करता है जिसका शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता है। हरिजन सेवक७–४–१९४६

''जेहि खोजहीं मुनि मारि मन तन कसहिं बसि सुइकंत ही।
करि योग जप तप ध्यान सम दम ज्ञान कर्म अनन्त ही।।
सुर सिद्ध शेष महेश गावत जाहि लहत न अन्त ही।
तेहि प्रेमलतिका करत वश रटि नाम के वल सन्त ही।।
कोउ कहत निर्गुण ब्रह्म जेहि कहँ सगुण कोउ कोउ भाषहीं।
ब्रह्मादि सुर सनकादि मुनि जेहि चरणरज अभिलाषहीं।।
जेहि भजत भक्त अनन्यधी धरि मुक्ति योग सु ताखहीं।
तेहि प्रेमलतिका नाम रटि नित रसिक वश करि राखहीं ।।''

सीताराम नाम की अपार प्रभुताई है।
रामहू न गाय सकै नामके विमल गुन शारदा गणेश कहाँ शेष की चलाई है।
नामके अधीन रूपलीला धाम भक्ति–मुक्ति अगुन सगुन बह्म सुख समुदाई है।।

आगम पुरान वेद वरनत जहँ लगि तीनि लोक माहि सृष्टि विधि निपुनाई है।
नाम तें प्रगट होत नाम में समाई जात सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
प्रगटत रामरूप जनके हरन दुख नाम के रटत अघ जात विनसाई हैं।
रामरूप देत गति ऊँचनि को कष्ट युत श्रम विनु नाम रटि को न गति पाई है।।
तैसही चरित्र अति अगम सुपढ़े विन नाम सब भाँति ते सुलभ अधिकाई है।
स्वपच यवन जड़ पामरनि तारत सु सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
धाम एकदेशी पुनि अंत सदगति देत परम कठिन होत विध्न बहुताई है।
सबहि सुखद सवविधि सब देशनि सु नाम सदगति की दूकान सी लगाई है।।
ऊँच नीच कोऊ जहँ तहँ येनकेन विधि रटै नाम देत ताहि सुगति सुहाई है।
प्रेमलता प्रेम नेम छेम बिनु द्रवत सु सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
लीला धाम रूप की आराधना कठिन अति रोगन ग्रसित तन काल कलिराई है।
उठति अनेक व्याधि प्रेमनेम छूटि जात एकरस एकटेक रहे न दृढ़ाई है।।
होत न विमल उर किये योग जप तप पूजन पठन मति भोगनि लुभाई है।
प्रेमलता ज्ञान ध्यान साधन उपाधिमय सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
कृतयुग सतोगुनी होत रहे लोग प्रभु ध्यान में मगन नहि अघ अघमाई है।
करम प्रधान भयो त्रेतायुग ध्यान गयो सतोगुन महि मिल्यो रजोगुण जाई है।।
द्वापर उपासना प्रगट भइ पूजा आदि सतगुन स्वल्प रह्मे रजतम छाई है।
प्रेमलता यज्ञ ध्यान पूजा न विवेक अब सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
कलिमल मूल भयो प्रगट अधिक तम कछु रज लिये नीति सतकी उठाई है।
अधरम छाइ रह्यो विदिशि माहि धरम प्रभाव नहिं परत लखाई है।।
जीवनि की मतिगति पापरत होत जात धर्म शीलताई साधुताई सकुचाई है।
वेद प्रतिकूल करें कर्म धर्म प्रेमलता सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
काम कोह लोभ मोह कपट कुचाल हठ बढ़ेउ पखंड दंभ द्वेष विबुधाई है।
साधु में न साधुताई गृही में गृहस्तताई अहं अधिकाई कलिकाल की बड़ाई है।।
पापरत नारी नर पावत न चैन रंच मायिक प्रपंच माहि गये लपटाई है।
प्रेमलता धर्म कर्म करै कहौ कौन भाँति सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
मन वच करम मलीनता समाइ उर ऊपरते केवल दिखाउ सुसफाई है।
सकल प्रकार अविचार कलि रोग वश भये लोग छूटन की कोउ न दवाई है।।
करत उपाय बहु सियारामनाम तजि नाशत न रोग भोग बढ़त विथाई है।
प्रेमलता नाम रटै चाहै जौन लहे सब सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।

महान पुरुषों के जाप्य श्री रामनाम ही हैं

आदिपुराणमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण अपने सखा श्रीअर्जुनसे कह रहे हैं कि मैं सम्पूर्ण विश्व के गुरुरूप श्री रामनाम को सतत प्रेमपूर्वक स्मरण करता रहता हूँ। मुझे श्रीरामनाम क्षणमात्र भी नहीं भूलते। मेरे वचनको तुम सत्य सत्य मानना।

''रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम।
क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम।।''

श्री मद्भागवतके वक्ता, श्रीकृष्णतत्त्वके मर्मज्ञ परमहंस चक्रचूड़ामणि श्रीशुकदेवजी श्रीशुकसंहितामें भी कहते हैं श्रीराघवजी का सनातन और अतिप्रिय नाम तो श्रीरामनाम ही हैं। इसी रामनामको सदा सर्वदा जपकर, भगवान् श्रीकृष्ण श्रीवृन्दावन को सुशोभित करते रहते हैं।

''रामस्याति प्रियं नाम रामत्येव सनातनम्।
दिवारात्रौ गृणन्नेषो भाति वृन्दावने स्थितः।।''

श्रीसाकेतबिहारी परब्रह्म रामायण के पृ० १७ में लिखा है कि श्रीलक्ष्मीजी द्वारा प्रार्थना किये जानेपर, सर्व जनेश्वर श्रीमान् विष्णु भगवान् ने भगवान् श्रीरामचन्द्रके दिये हुये ब्रह्मवोधक श्रीराम तारक मन्त्र का उपदेश श्रीलक्ष्मीजी को किया।

''देव्यानुबोधितः श्रीमान् विष्णुःसर्व जनेश्वरः।
ग्राह्यमास तां देवीं तारकं ब्रह्म वाचकम्।।''

पुनः भविष्योत्तर पुराणमें स्वयं भगवान् नारायण श्रीकमलादेवी से कह रहे हैं सभी सर्वेश वर्गो द्वारा पूजित महामधुर श्रीरामनाम ही हैं। मैं भी मनही मन इसी नामका कीर्त्तन करता रहता हूँ। तुम भी यही नाम नित्यप्रति जपा करो।

''भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेश पूजितम्।
रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि।।''

श्रीअगस्त्य संहितामें स्वयं श्रीशंकरजी, अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्रजीसे कहते हैं—प्रभो! मैं तो आपही के रामनामको जपकर कृतार्थ हो गया हूँ। दिवारात्रि श्रीपार्वतीजी के सहित काशीमें निवास करते हुये मरणशील प्राणियों की मुक्ति के लिये, आपही के श्रीरामनाम को सुनाया करता हूँ।

''अहं भगवन्नाम जपन्कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या।
मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽपि दिशामि मन्त्रं तव रामनाम।।''

श्रीपुलहसंहिता के मतानुसार श्रीब्रह्माजी अपनी शक्ति श्रीसावित्रीदेवीके साथ, श्रीमन्नारायणदेव भगवती श्रीलक्ष्मीजी के साथ, तथा श्रीशम्भुजी श्रीपार्वतीजी के साथ सदा स्पष्ट रूपसे रामनाम जपते रहते हैं।

''सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेन च।
शम्भुना रामरामेति पार्वती जपति स्फुटम्।।''

श्रीयोगसार में आया है कि श्रीशेषजी भी हजारों जीभ से श्रीरामनामका जप किया करते हैं। इसीके प्रभावसे विना किसी कष्टके ब्रह्माण्डको अपने फण पर धारण किये रहते हैं।

''सहस्त्रास्येन शेषोऽपि रामनाम स्मरत्यलम्।
तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं धृत्वां क्लेशं बिना द्विजम्।।''

श्रीआदित्यपुराणमें स्वयं सूर्य भगवान् ऋषियों से कह रहे हैं कि श्रीरामनामही जपने से मैं प्रकाशकर्त्ता बना हुआ हूँ तथा सभी लोकों को अतिक्रमण करनेकी मुझे शक्ति श्रीरामनाम–जप से ही प्राप्त हुई है।

''रामनाम जपादेव भासकोऽहं विशेषतः।
तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिवानहम्।।''

इसी प्रकार श्रीगणेशजी ने श्रीगणेश पुराणमें ऋषियों से कहा है कि मैं श्रीरामनामकीर्त्तन के प्रभावही से सभी लोकों में पूज्य बना बैठा हूँ। अतः सबोंको चाहिये कि सदा–सर्वदा श्रीरामनाम ही का कीर्त्तन करते रहें।

''अहं पुज्योऽभवं लोके श्रीरामनामानुकीर्त्तनात्।
अतःश्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोंचितम्।।''

औरों की क्या कहा जाय? स्वयं श्रीराघवप्राणवल्लभा–श्रीमैथिलीजी भी श्रीरामनाम जप को अपना जीवन मानकर सदा जपती रहती हैं। श्रीमानसरामायण के किष्किन्धाकाण्ड वाले मङ्गलाचरण के श्लोक में कहा गया है कि रामनामरूपी अमृत बेदरूपी समुद्र को मथकर निकाला गया है। अतः श्रीरामनामही कलिके मलको नष्ट करने में समर्थ हैं। श्रीशंकर भगवान् के मुखचन्द्रमें जपरूपसे सतत सुशोभित रहते हैं। जन्म–मरणरूपी रोगकी एकमात्र यही उपयुक्त औषधि है। सुख देने वाले ही श्रीरामनामही हैं। श्रीजानकीजी के लिए श्रीरामनामजप जीवनही है। वह पुण्यवान् धन्य हैं, जो सतत श्रीरामनाम–रूपी अमृत को पान करते रहते हैं।

''ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुं मुखेन्दु सुन्दरवरे सशोभितं सर्वदा।
संसारामय भेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनःपिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।''

और भी –

''जेहि विधि कपट कुरंग संग, धाइ चले श्रीराम।
सोई छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम।।''

श्रीहनुमानजी श्रीराघवजी से कहते हैं कि आपके विरहमें श्रीस्वामिनीजी के प्राण इसलिये नहीं निकल रहे हैं कि उनकी जीभ पर आपके नाम रटन रूप से सदा पहरुआ बने हैं,उनके प्राण नहीं निकलने देते।

"नाम पाहरू दिवस निसि,ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट।।"

श्रीभरतलालजी के नामजप के विषय में कहा गया हैं–

पुलक गात हियँ सिय रघुवीरू। जीहँ नाम जप लोचन नीरू।।

और भी –

भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेसु प्रयाग।
कहत रामसिय रामसिय, उमगि उमगि अनुराग।।

श्रीहनुमानजी तो शेष भगवान् से भी श्रीरामनाम उच्चारणमें आगे बढ़े हुये हैं। श्रीशेष एकवार में एकही हजार रामनाम उच्चारण करते हैं, परन्तु श्रीहनुमतलालजी तो श्वांस–श्वांस प्रति साढ़े तीन करोड़ नाम उच्चारण करते हैं, क्योंकि आपके प्रत्येक रोमछिद्र से श्रीनामोच्चारण होता रहता है। कारण यह है कि श्री वानरराज श्रीरामरूप के अनुरागी हैं तथा श्रीपराशक्ति–पतिरामनाम के प्रभाव को अच्छी प्रकार से जानते हैं। प्रमाण का श्लोक श्रीप्रमोद–नाटक नामक आर्षग्रन्थ का है।

"नाम्न पराशक्ति पतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराज राजः।
यद्रूप–रागीश्वर वायुसूनस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम्।।"

श्रीवृहस्पति स्मृति का वचन है कि श्रीरामनाम स्वयं परंब्रह्म हैं। सभी देवताओंसे पूजित हैं। सभी तत्त्ववेत्ताओं की शुद्ध सम्मतिमें यही सर्वोपास्य हैं। महान पुरुषों के तो जीवनही हैं।

"रामनाम परंब्रह्म सर्वदेवैःप्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।"

कहाँ तक कहा जाय प्राचीन कालके सभी महर्षिवृन्द श्रीरामनामका ही कीर्त्तन करते थे। इसीसे उन्हें सर्वसिद्धि मिली थी। इसीके प्रभावसे ब्रह्मानन्दमें मगन रहते थे तथा अन्तमें श्रीरामधाम श्रीसाकेतपुरी को भी प्राप्त किया था। प्रमाणका श्लोक श्रीइतिहासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ का है।

"पुरा महर्षयः सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात्।
सिद्धा ब्रह्म सुखे मग्ना याताः श्रीरामसद्मनि।।"

इतने अधिक प्रमाण देकर,इसी निष्कर्ष पर पहुँचना है कि सभी भगवन्नामों में महज्जनों द्वारा जाप्य होनेके कारण,इसी शिष्ट परिगृहित मार्गको अपनाना चाहिये। अतः हमें भी श्रीरामनामही जपना चाहिये। आगे हम यह बतावेंगे कि श्रीसीताराम के सहित श्रीरामनाम जपना चाहिये। हमारा जाप्य नाम होना चाहिये, सीताराम–सीताराम।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित सत्सिद्धान्तसार ग्रन्थके परतम प्रभाव प्रकाशन प्रसंग में श्रीसीताराम नाम के महान जापकों के नाम गिनाते हुए कहते हैं कि –

महाविष्णु लौ नाम परायन। समुझे सुमन नाम गुन गायन।।
जपे समूह ईस रघुनायक। जानि परेस पूज्य पद लायक।।

अर्थात् ईश्वर वर्ग समुदाय से लेकर (श्रीमहाविष्णु) पर्यन्त सभी श्रीराघवजू को अपना पूज्यपाद परेश मानकर, उन्हीं के श्रीरामनाम के जापक एवं श्रीरामनाम के गुणों के गायक हैं।

''श्रीप्रह्लाद विभीषन श्रीध्रुव भीषम आदि भये सद जेते।
नारद नेह निकेत सदाशिव औरहु संत सुनामहि लेते।।
नामहि के गुनगाय भलीविधि काम मदादिक के सिर रेते।
युग्म अनन्य प्रपन्न भने निज नाम रटे ते तरे खल केते।।९८९।।

श्रीनिर्वाणखण्ड भगवान् श्रीशंकरजी का कथन है कि श्रीरामनाम जगत्–भर के प्रभु हैं, परमानन्द को प्रगट करने वाले हैं, सत–असत से भी परे हैं, यही परात्पर ईश्वर है। सबों के लिए उपास्य भी यही हैं

''जगत्प्रभुं परमानन्द कारणं सदसत्परम्।
रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परमेश्वरम्।।''

श्रीजानकी परिणय–नाटक नामक आर्षग्रन्थ का प्रमाण है कि श्रीसीतानाम समेत जो श्रीरामनाम जपते हैं, वे बडा ही पुण्यवान एवं भाग्यवान् हैं। वे अकेले नहीं अपने स्वजन वर्गोंको साथ लेकर, श्रीसाकेत जायेंगे।

''सीता समेतं रघुवीरं नाम जपन्ति ये नित्यमघौघ हारि।
ते पुण्यवन्तः खलु भाग्यवन्तःपरं पदं यान्ति स्ववर्गयुक्ताः।।''

नाम ही रटत प्रहलाद शुक शौनकादि
पुंडरीक पाराशर नारदादि गावहीं।
नाम ही रटत रुकमांगदादि भीष्म बलि
त्रिजटा विभीषनादि रटै रामनाम ही ।।
नाम ही रटत धर्मसूनु शिवी रंतिदेव
भरत दधीचि हरिचन्द यश पावहीं।
नाम ही रटत रसरंगमणि हटै दुःख
रटै मुख तब जब रामहि रटावही।१।।
नाम ही रटत है सुकंठ हनुमन्त जामवन्त
अगंदादि अनगंत कीशराज ही ।
नाम ही रटत मुनि लोमस भुसुंडि
वालमीकि वैनतेय जागवल्क भरद्वाज ही ।।
नाम ही रटत श्रीवशिष्ट वामदेव अत्रि
गौतम सुतीक्षन अगस्त्य नाम गावहीं।

नाम ही रटत रसरंगमणी हटै दुःख
रटै मुख तब जब रामही रटावही।।२।।
नाम ही रटत हैं गनेस शेष औ दिनेस
विधि अमरेस त्यो महेस रट लावहीं।
नाम ही रटत शुद्ध ज्ञानी औ विरागी जौगी
त्यागी सिद्ध साधक सुभागी रामनाम ही ।।
नाम ही रटत हरिभक्त जक्त नेह त्यक्त
दिवानक्त अनुरक्त रूपासक्त गावहीं।
नाम ही रटत रसरंगमणी मिलै मुक्ति
दूसरी न जुक्ति वेद नाम ही बतावहीं।।३।।
नाम ही रटे हैं रामानुज रामानन्द स्वामी
तुलसी गोस्वामी प्रेमधामी रटे नाम ही ।
नामही रटे हैं कीलदेव अग्रदेव नाभा
नामदेव कबीरादि सबै भक्त गावहीं।
नाम ही रटे है चारि संप्रदा अनन्त संत
पन्थ अनपन्थ ग्रन्थ नाम के बनावही।।
नाम ही रटत रसरंगमणी मिलै मुक्ति
दूसरी न जुक्ति वेद नाम ही बतावहीं।।४।।
गनपति गिरा गिरीश गौरि गुरु गोविन्द जेहि जस छाके।
शेष महेश दिनेश वेश मुनि भूप सुगुन गनि थाके।।
जाको विरद विदित वैभव वर अंड कोटि लगि ताके।
युगलानन्यशरन करुनानिधि नाम शरन मन झाँके।।
बेद कदम्ब मुनीश ईश अवलम्ब नाम का कीए हैं।
श्री सुख–सागर नाम अंस सीकर प्रभाव सें जीए हैं।।
अंतक त्रास समन दुशमन मन दमन नाम रस पीए हैं।
युगलानन्यशरन सुनाम बल भुक्ति मुक्ति नहिं छीए हैं।
श्री प्रहलाद विभीषन श्री हनुमान नाम–रस नेही।
वालमीकि मुनिराज कुम्भसुत शिव शुक सुमुनि विदेही।।
नाम–प्रताप पाय पटुतर अनिमेष निदरि निरनेही।
युगलानन्य नाम सुमिरन सजु तजु तम तार तनेही।।

शेष गनेश महेश एकरस जपत निरन्तर रामें।
गिरिजा गिरा गिरापति रति नति करहि हमेश प्रनामें ।।
जाको नाम काम–भूरुह सतकोटि कहत घन घामें।
युगलानन्यशरन सर्वोपरि नाम अनूप कलामें।। (श्री नामकांति से)

श्री नामराम की सार्वभौम व्यापकता

श्री रामानन्दी वैष्णवोंके लिये तो श्रीरामनाम जीवनके परम अवलम्ब ही हैं, इनके अतिरिक्त विभिन्न सम्प्रदायों एवं पन्थों के सन्तों ने भी श्री रामनामही को सर्वोपरि साधन माना है। हम यहाँ विभिन्न मतवादियों की तत्सम्बन्धी महावाणियाँ उद्धृत करते हैं।

१– नाथपन्थी सन्त खेचरनाथजी के शिष्य एवं श्रीज्ञानदेवजी के साधक श्रीनामदेवजी का कहना है कि शुभदायक सार तत्त्वको काढ़ करके निकालने के लिए, अगाध भगवल्लीलासिन्धु का कौन मन्थन करता रहे। सीधा राज मार्ग है श्रीरामनाम को जीभ से रटना, यही सारतत्त्व है। सोनेका सुमेरु पर्वत दान दे दो, हाथी, घोड़ी तथा कोटि–कोटि गोदान करो, एकबार जीभसे रामनाम उच्चारणके समान फलदायक, ये सब होनेको नहीं। ऐसा समझकर, जीभपर श्रीरामनाम को पधरालें और जन्म–मरणसे पार हो जायँ।

''तत्त गहन को नाम हैं,भजि लीजै सोई।
लीला सिन्धु अगाध है, गति लखै न कोई।।
कंचन मेरू सुमेरू हय गज दीजै दाना।
कोटि गऊ जो दान दे, नहि नाम समाना।।
अस मन लख राम रसना, तेरी बहुरि न होइ जरा मरना।।''

२– पण्डरपुरके शिवभक्त नरहरि सोनारजी कहते हैं– प्रभो! मैंने विवेक का हथौड़ा लेकर काम क्रोध को चूर किया, और मन–बुद्धि की कैंची से रामनाम बराबर चुराता रहा। यह नरहरि सुनार है, हरि तेरा दास दास है। रात–दिन तेरा ही भजन करता है।

३– समर्थ गुरु रामदासजी महाराज कहते हैं कि अनेक नाम, मन्त्रों की तुलना इस रामनाम के साथ नहीं हो सकती। यह भाग्यहीन मनुष्य की समझ में नहीं आता।

४– महाराष्ट्रीय सन्त श्री अमृतराय जी महाराज कहते हैं–

''चंदन सीस लगावै टीका। आखर राम भजन बिन फीका।।''

५– सन्त कबीरदासजी महाराज कहते हैं –

मन रे रामसुमिरि रामसुमिरि रामसुमिरि भाई।
रामनाम सुमिरन बिन बूड़त अधिकाई।।

रामनाम निज औषधी, सतगुरु दई बताय।
औषध खाय रु पथ रहै,ताको वेदन जाय।।

सन्त श्रीकमालजी –

कहत कमाल कबीर कर बालका, रामनाम तेरा संग साथी।

७–सन्त श्रीरैदासजी महाराज–

''ऐसी भगति न होइ रे भाई।
रामनाम बिन जो कछु करिये, सो सब भरम कहाई।।''

८–सन्त निपट निरंजनजी (बूंदेलखंड वाले) –

''रामनाम को परगट बेचे,करत भक्ति को नास।''

९– मुसलमान सन्त श्रीयारीसाहब –

''रसना, राम कहत तें थाको।''

१०–सन्त गुलाल साहब (गाजीपुर जिले के) –

बिना नाम नहि मुक्ति अंध सब खोइया। कह गुलाल संत लोग, गाफित स्व रोइया।।
राम भजहु लव लाइ प्रेमपद पाइया। सफल मनोरथ होय, सत्तगुन गाइया।।

११– सन्त दूलनदास (श्रीजगजीवनराम के शिष्य) –

''रहु तोइँ राम राम रटलाई।
जाइ रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जौनी विधि रटि जाई।।
राम–राम तुम रटहु निरन्तर खोजु न जतन उपाई।
जानि परत मोहि भजन पन्थ को, यहौ अरुझनि भाई।।
वालमीकि उलटा जप कीन्हेउ,भयौ सिद्ध सिधि पाई।
सुबा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई।।
दूलनदास तू रामनाम रटु,सकल सबै बिसराई।
सतगुरु साई जगजीवन के,रहु चरनन लपटाई।''

१२–सन्त भीखा साहब (संत गुलाल साहब के शिष्य) –

''मन तुम रामनाम चित धारो।
जो निज कर अपनी भल चाहो, ममता मोह बिसारो।।''
''राम को नाम अनन्त है,अन्त न पावै कोय।
'भीखा' जस लधु बुद्धि है, नाम तबन सुख होय।।''

१३–श्रीदादू दयालजी महाराज –

''एकै अच्छर पीवका, सोई सत करि जाणि।
रामनाम सतगुरु कह्या, दादू सो परवाणि।।

राम तुम्हारे नाम बिन, जे मुख निकसे और ।
तौ इस अपराधी जीव कूँ, तीन लोक कत ठौर।।

१४—मारवाड के सन्त स्वामी श्रीहरिदासजी (हरिपुरुष) —

रामनाम व्रत हिरदै धारूं परम उदार निमिख न बिसारूँ।।

१५— अलबर के श्रीचरणदासजी (श्रीशुकदेवजीके शिष्य)

सुकदेव गुरु ग्यान चरनदास को कहै,
भज रामनाम सांचा पद मुक्ति का निधान ।

१६—श्रीदयावाईजी(श्रीचरणदास की शिष्या)

राम नाम के लेत ही पातक झरे अनेक।
रे नर हरि के नाम को, राखो मन में टेक।।

१७—आसाम के सन्त श्रीशंकरदेवजी —

नारद सुकमुनि रामनाम बिन, नाहि कहल गति आर।
कृष्णकिंकर कय छोड़ मायामय, रामनाम तत्त्वसार।।

१८—श्री सूरदासजी महाराज —

जौ तू रामनाम धन धरतौ।
अबके जन्म आगिलो तेरौ, दोऊ जन्म सुधरतौ।।
जमको त्रास सबै मिटि जातो, भक्त नाम तेरौ परतौ।
तंदूल धिरत समर्पि स्यामकौ, संत परोसौ करतौ।।
हौतौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहिं टरतौ।
सूरदास बैकुण्ठ पैठ में, कोउ न फेंट फकरतौ।

१९—श्रीयोगानन्दाचार्यजी महाराज —

साधन सौ धन मिलै लगै जब रामनाम मन।
जोगानन्द निहारि नयन सत चित आनन्द धन।।

२०—श्रीटीलाजी (श्री साकेतनिवासाचार्यजी)महाराज——

रामनाम सुख धाम मन, करि श्रद्धा विश्वास।
टीलाका विश्वास पुनि, आवै निकरौ श्वास।।

२१—श्रीरसरंगमणिजी महाराज—

जप तप तीरथ सुलभ है, सुलभ जोग वैराग।
दुर्लभ भक्ति अनन्यता, रामनाम अनुराग।।

२२– श्रीकाष्ठजिह्वा (देव) स्वामी जी महाराज–

'देव' धरम चाहे सो करले, आवागमन न टरता है।
प्यारे केवल रामनाम से,तेरा मतलब सरता है।।

२३– बाराबंकी जिले के सत्यनामी महंत श्रीगुरुदत्त दासजी–

दस अपराध बचाय के, भजै राम का नाम।
गुरुदत्त साँची कहै, पावै सुख विश्राम।।

२४–श्रीमीराजी –

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
रामनाम जप लीजै प्रानी,कोटिक पाप कटे रे ।
जनम जनमके खत जु पुराने,नामहि लेत फटे रे।
रामनाम की निंद्या ठाणो करम ही करम कुमावै।
रामनाम बिनु मुकुति न पावै,फिर चौरासी जावै।।

२५– श्री अंग्रदेवाचार्य –

निवहो नेह जानकीवर से।
जाँचो नाहि और काहू से, नेह लगै दसरथ के कुँवर से।।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि महाफल, नही काम ये चारो वर से।
(श्री) अग्रदास की याही बानी, रामनाम नहि छूटै यहि धरसे।।

२६–श्रीगुरुनानक देव जी–

मन रे, राम भगति चित लाइये।
गुरुमुख रामनाम जपि हिरदै, सहज सेती धरि जाइए।।
रामनाम बिन बिरथे जगि जनमा।
विखु खावै बिख बोलै बिनु नावै निहफल मरि भ्रमना।।
पुसतक पाठ विआकरण बखाणे संधिआ करम तिरकाल करै ।
बिनु गुरसवद मुकति कहाँ प्राणी रामनाम बिन उरझि मरै।।
डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै।
राम नाम बिनु सांति न आवै,जपि हरि हरिनाम सुपारि परै।।

२७–गुरु श्रीअर्जुनदेव जी –

जाकी रामनाम लिव लागी। सजनु सुहृद सुहेला सहजे, सो कहिए बड़भागी।।
राम राम राम राम जाप। कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहंताप।।

२८–श्री गुरु तेगबहादुर जी –

मन रे साँचा गहो विचारा। रामनाम विनु मिथिआ मानौ, सगरो इस संसारा।।

२९— श्रीसन्तदासजी महाराज—

रामनाम में ध्यान धर, जो साँसा मिल जाय।
तो चौरासी बिच संतदास, देह न धारे काय।।

३०— श्री रामस्नेही पंथ के श्रीरामचरणजी —

राम राम रसना रटो, पालो सील सन्तोष
दया भाव क्षमा गहो, रहो सकल निर्दोष।।

३१— श्रीरामस्नेही सन्त श्रीरामजनजी (चित्तौड़ समीपवर्ती)

सन्त सटासटि राम रटारटि काम घटाघटि दाम निवारै।
लोभ कटाकटि पाप फटाफटि मोह नटानटि मानहु डरै।।

३२— श्रीरामस्नेही पन्थके श्रीभगवानदासजी (मारवाड़)

जो नर रामनाम लिव लावै।
ताकूँ कोई भय नहि व्यापै, विघन विलै होय जावै।।

३३— श्रीरामस्नेही धर्माचार्य श्रीदरियाजी महाराज —

'दरिया' दूजे धर्म से, संसय मिटै न सूल।
रामनाम रटता रहे, सब धर्मों का मूल।।

३४— श्रीहरकाराम जी—

रामनाम तत सार, सर्व ग्रन्थन में गायो।
संत अनंत पिछाण, रामही राम सरायो।।

३५— बीकानेर के जैमलदासजी—

काया माँझ खजाना पावै। रोम रोम में राम रमावै।।

३६— वहीं के श्रीहरिराम दास जी—

रामनामको कीजिये, आठौ पहर उचार।
'हरिया' वंदीवान ज्यों, करिये कूक पुकार।।

३७— वहीं के श्रीपरसरामजी महाराज —

पूरा सतगुरु परख कर, ताको शरण समाय।
रामनाम उर इष्ट धर, आन इष्ट छिटकाय।।

३८— सन्त पलटू साहब (श्रीअयोध्यावासी)

रामनाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिनके पद वंदन करौ, वो साहिब मैं दास।।

३९— गोंडा जिले के नगवा ग्राम वाले— सन्त लक्ष्मणदासजी—

मुनि जन रामनाम रट लागे, सन्तन देत नगारा।

४०– श्रीदीनदरवेश जी–

तज ममता भज रामनाम सो अम्मर रहवे।

४१– गुजरात के सन्त– रवि साहेब–

सन्त अनेकन जे भये, कीन्हीं रामपुकार।
रवीदास सब छोड़िके, रामहिराम उचार।।

४२– स्वामी श्रीसन्तदेव जी–

कोइ निन्दै कोइ वन्दे जगमें, मनमें हरष न माखो।
आठों जाम मस्त मतवारो, रामनाम रस चाखो।।

४३– मालवा प्रान्त के परमहंस अवधूत श्रीगुप्तानन्दजी महाराज–

पीले रामनाम रस प्याला, तेरा मनुवा होय मतवाला।

४४– होशंगाबाद जिले के श्रीदीनदासजी महाराज –

रसना रामनाम क्यों नहि बोलत।
निसिदिन पर अपवाद बखानत, क्यों पर अघ को तौलत?।।

४५– जयपुर राजपरिवार के सन्त चतुरसिंह जी–

राम रावरे नाम में वही अनोखी बात। दो सूधे आखर तऊ, आखर याद न आत॥

४६– श्रीकाशी के प्रसिद्ध सिद्ध सन्त श्रीहरिहर बाबा–

किसी जिज्ञासू का प्रश्न– बाबा, हमारा क्लेश कैसे मिटेगा?

उत्तर:– श्रीरामनाम जपने से सब क्लेश मिट जायेंगे।

उपदेश– श्रीरामनामके बराबर कुछ नहीं है। जो भी रामनाम जपता है उसके सब काम पूरे होते हैं और उसे मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है।

४७– उन्नाव के स्वामी श्रीनिरंजनानन्दजी महाराज –

भजले सीताराम फिरत मन काहे भटका।
गुरुपद सेइ संत संगति करि, अहंकार को पटका।।
रामनाम को रटहि निरंतर, सीखि भजनका लटका।।

४८– बाबा कीनारामजी अघोरी –

सो सब प्रभु महँ रमि रह्यो, जड़ चेतन निज ठौर।
तातै राम संभारि गहु, सब नामन सिरमौर।।

४९– महात्मा गाँधी श्रीरामनाम के बड़े अनुरागी हो गये हैं। उन्हें श्रीरामनाममें ऐसा दृढ़ विश्वास जम गया था कि आप सभी अनिष्टोंसे बचने का उपाय एकमात्र श्रीरामनाम के जप को ही मानते थे।

''रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम।''

इस नामका कीर्तन आपका जीवन था। आपके नाम विश्वास परक बहुतसे अनमोल बचन यत्र–तत्र देखे जाते हैं। उनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं –

(क) बिकारी विचारसे बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है।

(ख) कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से रामनाम लें तो, ब्याधि नष्ट होनी चाहिये।

(ग) सत्य और अहिंसा पर अमल करने के लिए, जितनी भी दवाइयाँ हैं, उनमें सबसे अच्छी दवाई रामनाम है।

(छ) विषय जीतने का सुवर्ण नियम रामनाम हैं।। इत्यादि।

ग्रन्थ– विस्तार भय से हम यहाँ और भी महापुरुषों के, उपलब्ध श्रीरामनाम प्रतिपादक वचन, उद्धृत करने से असमर्थ हो रहे हैं। पाठक कल्याण का सन्त–वाणी अंक पढ़ें और महापुरुषों की महावाणियों का अनुशीलन करें।

हम पिछले स्तम्भों में श्रीरामनामको सर्वोत्तम भगवन्नाम तथा सर्व–मन्त्रों के मूल उत्पत्तिकर्त्ता श्रीरामनामही को सप्रमाण सिद्ध कर आये हैं। यहाँ संक्षेपमें यह बताना है कि श्रीरामनाम अन्यान्य मन्त्रों को किस प्रकार अनुप्राणित करते हैं। कलि संतरणोपनिषदमें –''हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।'' इस षोडश नाम वाले मन्त्र को कलिकालमें भवसंतरण का मुख्य उपाय बताया गया है। हम पिछले स्तम्भमें श्रीरामनामको ही कलियुग का सर्व–समर्थ साधन बता आये हैं। अतः दोनों विचारों का समन्वय इस प्रकार भी हो जाता है कि षोडशनामात्मक मन्त्र को अनुप्रमाणित तथा शक्तिशाली बनाने वाले उस मन्त्रमें स्थित रामनाम ही हैं।

श्रीरामनाम में प्रयुक्त रकार तथा मकार दोनों वर्णों में पृथक–पृथक अमित ऐश्वर्य भरे हैं। ब्रह्मयामल में रकार को सभी देवताओं में प्रबल महाकाल पावक, जीवोंके सर्वपाप दाहक, सब जीवों का जीवन, देवताओं के तेज रूप कहा गया है। रकार ही सब सुखों की सिद्धि देने वाले हैं सभी विद्याओं में जाने योग्य रकारही है। सभी प्राणियों के अनन्त रूपधारी व्याप्य–व्यापक ईश्वर भी रकारही है। रकारसे ही जगत उत्पन्न होता है तथा रकारही में लीन हो जाता है। रकारही शुद्ध सच्चिदानन्दमय अद्वैत ब्रह्म हैं। रकारही सर्बमनोरथ–प्रपूरक हैं। रकारही सब दुष्टों के विनाशक श्रीरघुनायक हैं। यही सब जीवोंका परमानन्द प्रदायक हैं तथा सभी वेदों के कारण हैं। मायातीत हैं।

रकारः सर्वदेवानां साक्षात् कालानलः प्रभुः।
रकारः सर्वजीवानां सर्व पापस्य दाहकः।।
रकारः सर्व भूतानां जीवरूपी परात्परः।
रकारः सर्वदेवानां तेजः पुञ्जः सनातनः।।
रकारः सर्व सौख्यानां सिद्धिदस्तु पुरातनः।
रकारः सर्व विद्यानां वेद्यस्तत्त्वं सनातनः।।
रकारः सर्व भूतानामीश्वरोऽनन्त रूप धृक्।

रकारः सर्व भूतानां व्याप्य व्यापकमीश्वरः।।
रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत्।
रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धबुद्धस्सदाऽद्वयः।।
रकारः सर्व कामश्च परिपूर्णः मनोरथः।
रकारः सर्व दुष्टानां नाशको रघुनायकः।।
रकारः सर्व सत्त्वानां महामोदमयः स्वराट्।
रकारः सर्ववेदानां कारणः प्रकृतेः परः।।''

इसी भाँति मकार का ऐश्वर्य भी वहीं ब्रह्मायामलमें ही विस्तारपूर्वक कहा गया है। सभी साध्य तत्त्वों में सुखके संचारक मकार है। सभी देवताओं में सिद्धि देने की शक्ति मकारसेही प्राप्त है। सभी मूलों के मूल, सभी पराशक्तियों की सर्व मनोरथ पूरक; मकार ही हैं। मकार सब जीवों के पालक जगदीश्वर हैं और सब सिद्धियों के कारण भी मकार ही हैं। मकार ही सभी लोकोंमें व्यापक ब्रह्म हैं। सभी शास्त्रों के सत्सिद्धान्त रूप तथा सभी मुक्तिदाता मकार ही है।

मकारः सर्व साध्यानां सर्व सौख्यप्रदस्तथा।
मकारः सर्वदेवानां सिद्धिदस्तु सदा प्रिये।
मकारः सर्व मूलानां मूलं मोदमयः स्वराट्।
मकारश्च पराशक्तिरुज्ज्वला सर्वकामदा।।
मकारः सर्वजीवनां पालको जगदीश्वरः।
मकारः सर्व सिद्धिनां कारणं नात्र संशयः।।
मकारः लोकलोकानां मकारः सर्व व्यापकः
मकारः सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तः सर्व मुक्तिदः।।''

यही कारण है कि जिस मन्त्रमें रकार या मकार दोनों में से कोई न हो, वे सभी मन्त्र शक्तिहीन एवं निष्फल बन जाते हैं। दृष्टान्त के लिए आप ''नमो नारायणाय'' ''नमः शिवाय'' ये दोनों अष्टाक्षर और पंचाक्षर मन्त्रों को लीजिये। नारायणाय से 'रा' निकल जाने पर 'नाय–नाय' निरर्थक शब्द बन जाता है। नमः शिवाय से मकार हटा देने पर न शिवाय निषेधार्थक, अतः निष्प्रयोजन शब्द बन जाता हैं। ऐसा– श्रीशुकसंहितामें कहा गया है। अतः रकार तथा मकार ही से दोनों मुक्तिप्रद बने है। अतः हम दोनों वर्ण से युक्त श्रीरामनामही की उपासना करते हैं।

नायनाय यद्ददतेऽक्षराष्टिकं च न शिवाय यद्विना।
मुक्तिदं भवति यद्वयोर्वशात्तद् द्वयं वयमुपास्महे किल।।

अतः सभी मन्त्रोंमें श्रीरामनाम पूर्णाक्षर या एकाक्षर रूपसे विद्यमान रहकर मन्त्रों को सशक्ति बनाये हुये हैं। हिन्दू समाज में श्रीरामनाम तो जीवन का परम संवल माना गया है। हमारे सभी व्यवहार रामनाममय हो रहे हैं। हिन्दू–जाति में कोई भी मर जाय, तो उसके शव के साथ 'राम नाम सत्य है' की ध्वनि लगाने की परम्परागत प्रथा है। दो धनीमानी व्यक्ति मिलने पर, 'जयराम जी की'

कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। अनाज वजन करने वाले हटवे की सार्वदेशिक रीति है कि वजन की संख्या गिनते समय रामनाम का उच्चारण करते जायेंगे। यथा– एक को रामेराम कहकर शुरू करेंगे। पश्चात् दुइयेराम दो, तीनेराम तीन, चारेराम चार, पाँचेराम पाँच– इस प्रकार पूरी गिनती तक, श्रीरामनाम का ताँता लगा रहेगा। महाजन लोग बही खाता लिखते समय पहले 'श्रीराम' ऐसा लिखकर, पश्चात् अपने आय–व्यय का व्यौरा लिखते हैं। यहाँ तक कि घृणा प्रकट करने में भी राम! राम!! कहेंगे। इधर नास्तिकता की वृद्धि के साथ–साथ, हिन्दू–जातिके जीवनभूत श्रीरामनाम की भी दिनानुदिन उपेक्षा होती जा रही है। श्रीगिरिधर कविराय के समयमें श्रीरामनाम उच्चारण विरहित हिन्दू, समाज में बहिष्कार्य माना जाता था। यह बात उनकी नीचे दी गई कुण्डिलयाँ से प्रतीत होती हैं –

''हिन्दू कुलमें जनमि के, रामनाम सुख सार।
जे न जपे तेहि सीस पर जूता साठ हजार।।
जूता साठ हजार मारि मार मुख कारिख दीजै।
दै गरदन में हाथ नगर से बाहिर कीजै।।
कह गिरिधर कविराय सुनो हो भैया जिन्दू।
रटै राम नहि नाम सो पापी कैसा हिन्दू।।''

श्रीनाम और रूप में अभेद

श्रीपद्मपुराण मे परमार्थ तत्त्वके सुमर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी ने श्रद्धा स्वरूपिणी भगवती पार्वतीजी को बताया है कि श्री रामनाम, जापकों के सभी दिव्य मनोरथों को पूर्ण करने में चिन्तामणि की समता सजते हैं। यही परतत्त्व के स्वरूप हैं। अन्य सहकारी साधनोंसे निरपेक्ष रहकर स्वत: परिपूर्ण हैं। सर्वथा निर्विकार एवं नित्य हैं। सच पूछो तो श्रीरूप के सभी धर्म श्रीनाम में विद्यमान रहने के कारण, श्रीरूप तथा नाममें कोई भिन्नता है ही नही। दोनों एक ही परतत्त्व हैं।

''नाम चिन्तामणिं रामश्चैतन्य परविग्रह:।
पूर्ण: शुद्धो नित्ययुक्तो न भिन्नो नाम नामिन:।।''

श्रीलोमश संहितामें आया है कि दो अक्षरके श्रीरामनामने ही पिनाकधारी भगवान् शंकर के अभिमान को भंग कर दिया। इस पर तर्क उपस्थित हुआ कि पिनाक तोड़ने वाले तो श्रीरूप सरकार हैं, श्रीनामको श्रेय कैसा? इस पर सर्व–सम्मति से निर्णय हुआ कि जो ही रूप हैं, वही श्रीनाम हैं। दोनों में ही शक्ति, सामर्थ्य, प्रभाव, महिमा आदि समान रूपही से विद्यमान हैं।

''रामेति द्वयक्षरं नाम मानभङ्ग पिनाकिन:।
अभेदो बोध्यते तेन सततं नाम नामिनो:।।''

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराजने भी स्वरचित श्रीसीतारामनाम स्नेह–वाटिकामें यही कहा है कि श्रीरामरूप ऐसे रमणीय हैं कि उन सौन्दर्य–माधुर्य–सुधासिन्धु विग्रह में सबों का मन रमण करने

लगता है। क्या मुनीश्वरगण,क्या अनन्त ब्रह्माण्डों के विविध त्रिदेवगण, क्या भिन्न–भिन्न वैकुण्ठों के सगुण साकार ब्रह्म विग्रहगण, सबोंका मन एकाग्र होकर, उसी रूपसिन्धुमें गोता लगाता रहता है। उस अनिर्वचनीय अनूप रूप के अङ्ग–अङ्ग की छबि देखकर कोटि–कोटि अनंग (काम), दंग रह जाते हैं। यही बात परम रमणीय श्रीरामनाम में है। श्रीनाममें भी इतना अपरमित रस भरा हुआ है कि सभी वर्गके जापकों का मन अनायास श्रीरसार्णव रामनाम में मगन हो जाता है। अतः दोनों में अन्तर बताने वाले मन्दबुद्धि सांसारिक प्राणी ही होंगे। नवके अङ्क के समान कई गुणा होनेपर भी जोड़में नवके नव ही रह जाते हैं। उसी भाँति श्रीनामरूपकी नित्य एकरसता है।

''रमे जेहि माहि मन मारिके मुनीश ईश
विगत अनीश जगदीश देश देश के।
कोटिन अनंग छबि अंग अंग पर लित
मात होत अकथ अनूप दुति वेश के ।।
नामी नाम मध्य लेश अन्तर न पाइयत
बीच जे वदत तेइ मन्द भव वेश के।
(श्री) युगलअनन्य नव अंकके समान नाम
व्यापक विचित्र भाँति पूजित अशेष के।।''२६१०।।

श्रीनामरूपको अभेद बताने वाला एक बड़ाही मजेदार दृष्टान्त है। बात नित्य दिव्य–विहार देश की है। श्रीकौशलेन्द्रकुमारजू अपने अन्तःपुर स्थित श्रीप्रिया जनकेन्द्र राजनन्दिनीजू से विदा माँगकर, अपने सखाओं के साथ श्रीसरयूपुलिन स्थित व्याघ्रादि हिंस्र पशुओं से सेवित घोर अरण्य देशमें आखेटक लीला करने जा रहे हैं। अभी आपका खेटक समाज श्रीसरयू–प्रवाह के सन्निकट रंग–विरंगी मणिचूर्ण मयी बालुकाओं पर विराजमान होकर, नर्महास परिहास का आनन्द लूट रहा है। श्रीजानकीरमण तो तन से आखेट निमित्त बाहर आये हैं, परन्तु आपका मन तो श्रीप्रियाजू के रूपगुणों में रमण करता हुआ, श्रीकनकभवनही में रह गया था। आपको बेमन देखकर, किसी सखाने आपसे श्रीप्रियाजू का सम्बन्ध लेकर, मीठी सी चुटकी की। श्रीप्रियाजीकी चर्चा सुनतेही, उनसे अपनेको पृथक अनुमानकर उनके विरहमें आप व्याकुल हो गये। आपकी विरहोन्मत्त स्थिति देखकर, किसी अन्य चतुर सखा ने श्री (सीता) दो अक्षर का नाम लिखकर, आपके सामने रख दिया और कहा–मित्रवर! यहीं तो आपकी श्रीप्रियाजू हैं। कहां आप उनसे अलग है? श्रीप्रियाजू का परम आकर्षक नाम देखकर, आप उन्हें साक्षात् प्रियाजू मानकर, उनसे मिलने को उत्कंठित होकर, ज्योंही आगे बढ़े कि उसी नामसे श्रीप्रियाजूने प्रगट होकर, आपका प्रेमपूर्ण अंकमाल किया। युगल जयति ध्वनिसे गगन–मंडल मुखरित हो उठा।

पुनः श्रीबड़े महाराज जी कहते हैं कि वेदों के मत से रूप और नाम में किंचित भी भेद नहीं हैं। जो कार्य रूप के द्वारा होता है, वह सभी कार्य श्रीनाम भी कर सकते हैं। श्रीरूप वाच्य हैं, उन्हीं का वाचक श्रीनाम हैं। तब अन्तर कैसा? एकही तत्त्व तो हैं। अतः सावधान होकर श्रीनाम सरकार की सेवा जप रूप से करनी चाहिये। विषयभोग नीरस एवं कुमार्गपर ले जाने वाला है।

मोह को अन्त:करण का मल मानना चाहिये। व्यर्थवाद मिथ्यावादमें जीभ का दुरुपयोग न करके, इसे प्रियतम के नाम के गान एवं गुणकीर्त्तनमें लगाये रखना चाहिये। श्रीबड़े महाराज जी की सम्मतिमें रातभर जगकर नामाभ्यास करने में अधिक लाभ है। मोहनिशा में भी जगना चाहिये। देव–दुर्लभ मानव आयुरूपी सम्पत्ति का क्षणभर भी व्यर्थमें बरबाद न करें।

''नाम रूप माझ भेद वेद न वदत नेक
कहत अभेद वाच्य वाचक विबेक बल।
ताते सावधान होय जोय जुग एकरस
अरस कुपन्थ को विहाय मानि मोह मल।।
मिथ्या अनरथ व्यर्थ वचन कदर्थ तजि
भजिये सुनाम गुन गाइये सुधाम थल।
(श्री) युगलअनन्य रैन जागिये सुचेत चित्त
वित्त बरबाद मत कीजिये सुपल भल।।''५२८।।

अभेद इसलिये भी कहते हैं कि श्रीरामरूप के अभ्यन्तर श्रीचरण नखसे मस्तक शिखापर्यन्त रंगनिधि अङ्ग–अङ्गमें सुललित नाम विराजमान हैं। अभिमानरूपी भ्रम छोड़कर देखना चाहिये। जिन्होंने सन्तों की, सद्गुरु की संगति नहीं की है, वह उल्टी–सीधी बात बनाया करते हैं। अनमोल श्रीनाम का तथा श्रीरूप का रहस्य अगम अथाह है। मोह से व्याकुल चित्त बाले क्या समझेंगे? श्रीरूप तथा नाम दोनों नित्य अनादि हैं। किंचिन्मात्र दोनों में भेद बताने वाले के सुख सुकृत दोनों नष्ट होंगे। रूपके बिना नाम आकाश–कुसुमवत् भ्रममूलक ही रहेंगे, तथा नामरहित रूपका परिचय ही नहीं मिलेगा। अज्ञानी–जन व्यर्थ के वितंडावाद फैलाते हैं। यथार्थ वस्तु उन्हें भासती नहीं। श्रीरूप नाममें जो गूढ़रहस्य है, उसे हमको संतगुरुने कृपाकर दर्शाया हैं।

''नामी माझ नाम नखसिख लौं विराजमान
हेरिये सुजान मान भान को विहाय के।
ऐसो कौन अंग रसरंग निधि जामें नाम
ललित ललाम नहिं लसत सुभाय के।।
सन्त सतगुरु सुचि संग के विहीन नर
आन तान गावत कुरंग निधि न्हाय के।
(श्री) युगल अनन्य अनमोल नाम नामी गति
अगम अथाह कैसे पावें विललाय के ।१३५।।
नामी नाम युगल अनादि एकरस तिल
तरक करत सुख सुकृत विनासि है।

रूप के विहीन नाम व्योम के कुसुम, नाम
विरहित रूप अन्धकार सम भासि हैं।।
नाहक वितंड खंडनीय वाद साद विन
बोलत अबोध सोध भासत न खासि हैं।
(श्री) युगल अनन्य सन्त गुरु दरसाय दियो
नामी नाम रहस विचित्र जौन गांसि हैं।११३६।।

श्रीश्याम सलोने जानकीरमणजू की रमणीय मूर्ति अतिसुन्दर नामाक्षरों के अभ्यन्तर से झलकने लगती हैं। प्रेमोत्साह पूर्वक महामन्त्रमणि श्रीसीतारामनाम को उच्चारण कीजिये और प्रेम विश्वास पूर्वक श्रीनामाक्षरों का ध्यान कीजिये। नामाक्षरों के भीतरसे ही रूपका प्रकाश कोटि–कोटि सूर्य चन्द्रके प्रकाश को विलज्जित करता हुआ आपके हृदय में स्वयमेव प्रगट हो जायगा। उस समय आप अपने हृदयमें वीणा की रागिनीके समान मनमोहिनी नामध्वनि सुनकर, विलक्षण नामनशेमें चूर हो जायेंगे।

''माधुरी सूरति साँवरे की झलकाति सुनाम ललाम के अन्तर।
जोहिये प्रीति प्रतीति समेत उचारिके रंग–उमंग से मन्तर।।
आपहि आप प्रकास उठे उर चन्द सुभान समान वसन्तर।
(श्री) युग्मअनन्य अजूब नसानिज जानि परै सुनि रागिनीयन्तर।।'१२५०।।

श्रीसीताराम–सुधाकुण्ड हैं। इनमें आनन्दपूर्ण रहस्य भरे हैं। नामाक्षरों के ध्यान कीजिये और अपने अंग–अंगमें अभयदायक परमानन्द एवं हजारों वर्ष का अनुभव कीजिये। नामहीन जीवन में कोटि–कोटि दुःख विपत्ति भरे रहेंगे। इसे विचार की दृष्टिसे देखकर जगत् जंजाल को छोड़कर, नामाभ्यासमें तत्पर होइये। फिर श्रीनाम कृपासे आपके हृदयमें श्रीजानकीकान्तजू के रूप ऐसे जमकर रहेंगे कि यत्न करने पर भी नहीं निकलेंगे।

''राजत रंग रहस्य सुधाह्रद नाम के अन्तर जोहिये प्यारे।
छाजत मौज अजूव अभयप्रद अंगहि अंग में हर्ष हजारे।।
नाम बिना दुःख दोष घना दृग देखि के त्यागिये फंद पसारे।
(श्री) युग्मअनन्य सियावरकी छबि पैठि नहीं निकसे श्रमधारे।।''१४४२।।

श्री भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' लिखते हैं– यह रामनाम, जिसके जपने से दसो–दिशाएँ मंगलमय हो जाती हैं, और जिसके लेने–मात्र से संसार सागर सूख जाता है, प्रेम–पूर्वक दीर्घ–काल तक निरन्तर अभ्यास करने से ही, अपने–आप साधक के हृदयमें ज्योतिरूप होकर प्रगट होता है और तब साधक यह अनुभव करता है कि स्वयं दिव्य नामोच्चार हो रहा है रोम–रोमसे, और वह मात्र उसका द्रष्टा है। ऐसे नामानुरागी सिद्धयोगी भक्त आज भी अपने देशमें हैं। यह नाम बाहर–बाहर से जितना सीधा,साधा सरल प्रतीत होता है, उसमें प्रवेश करने पर वह उतनाही गुह्यतम,रहस्य हो जाता है–अन्तर्लोक के पर्दे एक के बाद एक खुलने लगते हैं और साधक अपने आपको सहज

ही एक दिव्यलोकमें, दिव्यप्रेम, दिव्य–सौन्दर्य, दिव्य–आनन्द की त्रिवेणी में स्नान करते पाता है,और वहां उसका सब कुछ दिव्य–ही–दिव्य हो जाता है। नाम और नामी की अभिन्नता का यही स्वरूप हैं।

जीवन–जान जुगल परिकर से सहित नाम में बसते हैं।
अमल अभेद अखेद नाम नामी अभ्यन्तर लसते हैं।।
नाम सनेह सजे पावे प्रीतम सतसंग तरसते हैं।
युगलानन्य नाम रमने कारन हरदम कटि कसते हैं।।
व्यर्थ त्यागि अनुरागि नाम तन–मन–बच जिकर जमाते हैं।
अखिल तत्त्वतर सार अर्थ मन मनन किए मुद माते हैं।।
नामी नाम एकता करि निज नाम सनेह समाते हैं।
युगलानन्य नाम करुणा तें छबि निधि छबि झमकाते हैं।।
नामी नाम अभेद वेदविद वदहिं बिशेष प्रचारी।
तामें रंचकहू संशय नहिं देखिय दृष्टि पसारी।।
द्वादश अंग अनंग रङ्ग हर रूप नाम छवि धारी।
युगलानन्यशरन नामहु मधि छहू मात्रा प्यारी।।
इष्ट स्वरूप अनूप मिष्ट निज नाम माँझ नित झाँके।
बार बार बलिहार करत अनुराग सुधा रस छाके।।
रसना रटत रहे आरत ह्वै सपनेहुँ कबहुँ न थाके।
युगलानन्यशरन सुनाम सें विमुख खाक ही फाँके।। श्रीनामकान्ति स

ॐ दिव्य गुणगण–निधान श्रीरामनाम ॐ

श्रीआदित्यपुराणमें भगवान् श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीदेवी से कहा है कि श्रीरामनाम महामोद धाम के अभ्यन्तरही सपरिकर सानुजगण श्रीयुगलकिशोरजी, उनके मंगलमय श्रीअवध–धाम तथा आपके समस्त गुणगण निवास करते हैं।

''रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाम मंगलम्।।''

श्रीपद्मपुराणमें श्रीरघुकुलगुरु श्रीनामतत्त्वके मर्मज्ञ श्रीवशिष्ठजी ने श्रीभरद्वाजजी को बताया है कि यद्यपि श्रीनाम–रहस्य अतिशय गूढ़ हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूपसे सभी लोकोंमें इनकी स्थिति है। श्रीनाममें भी श्रीरूपही की भाँति सौशिल्यादि समस्त शरणागतोपयोगी कल्याण गुणगण निहित हैं। तौभी मन्दभागी जीव इनके समाश्रय को छोड़कर, नाना साधनान्तरों में नाहक रचता–पचता रहता हैं।

''प्रत्यक्षं परमं गुह्यं सौशील्यादि गुणार्णवम्।
त्यक्त्वा मन्दात्मका जीवा नाना मार्गानुयायिन:।।''

श्रीबाराहपुराण में भगवान् श्रीशंकरजी का विमल वचन है—श्रीरामनाम शरणागत—वत्सल एवं अपार करुणासिन्धु हैं जापकों के द्वारा किये हुये कोटि—कोटि अपराधों को तथा तज्जन्य पापों को मिटा देते हैं। ऐसे श्रीनाम के जपमें जिसे प्रीति न हुई,समझ लो वही मनुष्य महान—पापी है।

''करुणा—वारिधिं नाम ह्यपराध निवारकम्।
तस्मिन्प्रीतिर्न येषां वै ते महापापिनो नरा:।।

श्रीपतञ्जलि—संहिता में कहा गया है कि परब्रह्म स्वरूप तथा वात्सल्य सिन्धु श्रीरामनाम को छोड़कर,अन्य साधन से सुरक्षा होने योग्य नहीं है। सत्य—सत्य कहता हूँ।।

''रामनाम परब्रह्म त्यक्वा वात्सल्यसागरम्।
अन्यथा शरणं नास्ति सत्यं सत्यं वचो मम।।''

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। राम न सकहि नाम गुन गाई।।

श्रीरामनाम जापकों में समस्त दिव्यगुण भर देते हैं तथा उन्हें ऐश्वर्य सम्पन्न कर देते हैं। इनके संकीर्त्तन से मरण—धर्मा मानव उज्ज्वल अक्षय भगवद्धाम प्राप्त करते हैं।

''गुणानां कारणं नाम तथैवाश्वर्यवतां सदा।
संकीत्तनाल्लभेन्मर्त्य: पदमव्ययमुज्ज्वलम्।।''

श्रीरामनामके जापक शान्त,जितेन्द्रय, क्षमाशील होकर नामार्थ का चिंतन करते हुये नाम जपें, तो उनमें असंख्य सद्गुण आकर भर जायेंगे।

''शान्तो दान्त: क्षमाशीलो रामनामार्थचिन्तक:।
तस्य सद्गुण संख्यानां वक्तुं नैव क्षमोप्यहम्।।''

श्रीनाम रटनेवाले में श्रीराघवलालजू के समस्त लभ्य गुणगण उतर आते हैं। वह भी करुणा—कृपाशील तथा सुशील, रागद्वेष विरहित समत्व भाव वाला,दयालु दीन हितकारी, सर्व—सुखद बन जाता है। आप अधिक अमानी,औरों को मान देने वाला सारग्राही, दु:ख—विनाशक बन जाता है तथा सबके प्रति कोमल भाव का व्यवहार करता है। उनके मुख से कोमल सुखद वचन निकलते हैं। उनके तन,मन,बचन में कहीं कठोरता का लेश भी न पाइयेगा। अत: उसमें श्रीराघवजू के समान ही सब गुणों की विद्यमानता में तनक भी सन्देह न करना चाहिए।

''रटै जौन नाम तामें आवै गुन राम के ।
करुना कलित कृपा सरस सुशील सम
दाया दीन—हित चित दायक आराम के।
अधिक अमान मानप्रद सदसार गुन—
ग्राही दुखदाही मृदुताई खास आम के।।

कोमल वचन मन तन मे कठोरता को
लेस हूँ न मिले साँचे राँचे सुखधाम के ।
श्रीयुगल अनन्य उर खटका न जानो नेक
रटै जौन नाम तामै आवै गुन राम के।।''

ॐ सर्व–सुहृद नाम ॐ

हमारे लौकिक जीवन के स्वार्थी सहायक माता–पिता,भाई–बन्धु, पुत्र–कलत्र आदि शारीरिक सम्बन्धी माने जाते हैं,परन्तु हमारे पारलौकिक कल्याण की परवा इन्हें नहीं रहती। बीतराग निष्किञ्चन सन्त हमारे पारलौकिक सुखों के सहायक अवश्य होते हैं, किन्तु स्वयं संग्रहशील न रहने के कारण हमारे भोजन वस्त्रादि निर्वाह सम्बन्धी वस्तुओं के लिए स्वयं रूप से हमारे सहायक नहीं बन पाते। श्रीरामनाम हमारे उभय लोको के सहायक हैं और है निस्स्वार्थ हितू।

रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितुमाता॥

सभी जागतिक सम्बन्धियों की भाँति श्रीरामनाम अकेले सब नातेदार बनकर, हमारे सार–सम्हार करते हैं।

श्रीविनय–पत्रिका पद सं०२२६में गोस्वामिपाद कहते हैं–

''मेरे माय बाप दुइ आखर,हौ सिसु अरनि अरौ।''

पुनः वहीं पद सं०२५४ में कहते हैं––

''राम रावरो नाम मेरो मातु–पितु हैं।
सुजन सनेही गुरु साहिब सखा सुखाद
रामनाम प्रेम अविचल वितु है।।''

पुनः श्रीकवितावली ७/१७८ में कहते हैं––

रामनाम मातु–पितु स्वामी समरथ हितू
आस रामनाम के भरोसो रामनाम को।

श्री विनय–पत्रिका के पद सं०२२७ में कहते हैं––

''नाम राम रावरोई हित मेरे।''

श्रीवाराहपुराणमें कहा गया है कि परात्परब्रह्म श्रीराघवजू का रामनाम सौभाग्य–वर्द्धक सर्वस्वामी, आनन्ददाता, सर्वसुहृत, देवासुर वन्द्य परम आनन्दकंद हैं।

''श्रीमद्रामपरेश–नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदं
सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकंद परम्।।''

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं––श्रीरामनाम जगत् के सभी प्राणियों के बन्धु हैं तथा अनाथ–नाथ हैं।

''नामैव जगतां वन्धु र्नामैव जगतां प्रभु:।''

श्रीवृहदवशिष्ठ संहिता में श्रीनारदजी ने मुनियों से कहा है कि श्रीरामनाम अन्धों के लिए उत्कृष्ट और स्वच्छ नेत्र हैं।भीतर तथा बाहर की सभी वस्तुओं को दिखाते हैं। वधिरों के लिये उसी प्रकार के कान हैं तथा पंगुओं के हाथ–पाँव हैं।

''अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वच्छं श्रीनाम मंगलम।
वधिराणां तथा कर्ण पंगूनां हस्तपादकम्।।''

श्रीगालवीयसंहिता कहती है कि निराधार के लिए श्रीरामनाम आश्रय स्थान है तथा सभी देहधारियों को माता–पिता की भाँति लालन–पालन करने वाले हैं।

''आश्रमं सर्व जन्तूनामाधार रहितात्मनाम्।
जननी तात वन्नित्यं पोषकं सर्व देहिनाम्।।''

''सुमिरू सनेह तू नाम रामनाम को। संबल निसंबल को सखा असहाय को।।
भाग है अभागेहू को गुन गुनहीन को। गाहक गरीब को दयालु दानि दीन को।।
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखि है। पांगुरे को हाथपाँव, आँधरे को आँखि है।।
माय बाप भूखे को अधार निराधार को। सेतु भवसागर को हेतु सुखसार को।।
पतित पावन रामनाम सो न दूसरो। सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।'' श्री विनय–पत्रिका,६९

श्रीजानकी वल्लभलालजू का मंगलमय (मोबारक) नाम मानो दिव्यानन्द (सादी)का सुहावना नगर ही हैं। ये नाम परात्परब्रह्म जन्य परमानन्द तथा दिव्यप्रेम और विश्वास देने वाले हैं,इनके जपसे प्राणप्रियतम श्री जानकीरमणजू की वह छवि–छटा भी झलकने लगती है जो विमल अनुभव में भी घ्यानगम्य नहीं हैं। ऐसे सर्व–सुहृद नामके स्मरण बिना अन्य बातों में लगना मानो सन्मार्ग से वहक जाना है।

श्रीसीतावर नाम मोबारक सादी सहर सोहावन है।
परमानन्द परेश प्यार परतीति प्रभा परचावन है।।
अनुभव अमल पार प्रीतम छविछटा–घटा झलकावन है।
युगलानन्य नाम–सुमिरन बिन विविध बात बहकावन है।।

श्रीसीताराम नाम –सरकार दिव्य है,मंगलनिधान (भव्य) हैं,नित्य नवनवायामान प्रतीत होते हैं। दिव्य–स्नेह के सुधा–सिन्धु तथा अत्यन्त प्रेमास्पद (नीको) हैं। प्रतिकूल अनुकूल व्यक्तियों के लिए समान रूप से सुहृद हैं। सबों को सुधाधिक सुख देते है। हवन,पिंडदान,पूजन आदि कुछ भी नहीं चाहते,केवल प्रेम के भूखे हैं। दानी शिरोमणि हैं। जापक की रक्षा में तत्पर रहकर उन्हें निर्भय बना देते हैं। अत:हैं ये प्राणसंजीवन।

दिव्य भव्य नित नव्य नेहनिधि नाम नेहायत नीको।
सव्य तथा अपसव्य सदृश सुख सौंपत अधिक अमी को ।।
हव्य कव्य बरजित पूजन चाहत एक प्रीति सुठीको।
युगलानन्यशरन उदार अभयप्रद नाम सजीवन जी को।।

श्रीनाम ऐसे अवढर–ढरन हैं कि स्वप्नमें भी कोई नाम बरबरा उठे अथवा किसी नशे में बुत होकर नाम गा ले; अथवा शारीरिक संकट आ पड़ने पर आर्त होकर नामोच्चारण करे,अथवा पुजाने के लक्ष्यसे नाम–जप का दंभ ही करे,अथवा निन्दा घृणा के अवसर पर राम!राम!!छि:! छि:!! के बहाने ही नाम ले ले,जो उसे निहाल कर देते। उसके भाव–कुभाव पर आपकी दृष्टि नहीं जाती। श्रीनाम–सरकार नामाश्रयी के दोषों की ओर ध्यान नहीं देकर, केवल उसके गुणही ग्रहण करते हैं। ऐसे श्रीनाम को जीते–जी क्षणार्द्ध के लिये भी छोड़ना नहीं चाहिये।

सपने में बड़राय नाम जो गाय उठे मद पीए।
अथवा काय क्लेश दंभ अपवाद हास रस लीए।।
भावाभाव नहीं निरखत श्रीनाम सगुन मन दीए।
श्रीयुगलानन्यशरन विसरत मत पलक पाव हूँ जीए।। श्रीनाम–कांति से

श्रीनाम – माधुरी

अपरिमित रसोदधि श्रीरामनाम अपार माधुरी से परिपूर्ण हैं। जिन बड़भागियों ने श्रीनामका रसास्वादन किया है, वे भी' गूंगे के गुड़' की भाँति श्रीनामस्वाद के बखान करने में मूक हो रहे हैं। अत: श्री क्रियायोगसार–नामक आर्षग्रन्थ का कहना सवा सोलह–आना सत्य है कि हम नामामृत का स्वाद किन शब्दों में वर्णन करें? जिन्हें स्वाद का ज्ञान प्राप्त करना हो, वे बुद्धिमान् स्वयं जपकर परख लें।

''रामनामामृतं स्वाद कथं वाचा वदामिते।
स्मरणादेव ज्ञातव्यं सर्वदा बुध–सत्तमै:।।''

श्रीनाम का शब्दार्थ भी तो यही कहता है–न–आ–म–यानी नास्ति आ–समन्ताम् म–माधुर्य श्री यस्मात् अर्थात् जिससे बढ़कर परिपूर्ण रूपसे माधुरी कहीं है ही नहीं,उसे ही तो नाम (राम) ही कहेंगे। श्रीनामरस के सुमधुर स्वाद को जान गये, आदिकवि महर्षि श्रीवाल्मीकिजी। अपने श्रीरामायण नामक महाकाव्य के पदे–पदे में आपने ऐसी मिठास भर दी,मानो आप अपने काव्यवृक्ष की कविता की शाखा पर बैठकर,कोकिल की भाँति मधुर–मधुर नामका कलरव कर रहे हैं। ऐसे कविकोकिल को मेरा बार–बार प्रणाम!

''कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविता शाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्।।''

श्रीरामनाम स्वाद के रसिया हैं श्रीहनुमतलालजी। आदिरामायण में सेतुबन्ध के महाशिल्पी श्री नलजी से नाम–महिमा कहते हुये आपने श्रीरामनाम को अमृत की खान बतायी और कहा कि यह देवलोक के, नागलोक के,चन्द्रमास्थित अमृत से भी अतिश्रेष्ठ अमृत हैं। उपयुक्त अमृत पानकर, देवतानाग कभी न कभी मर भी जाते हैं। नामसुधा पान करने वाला सदा के लिये अजर–अमर हो जाता है। अमृतप्रासी देवता को भोजन स्वाद से भले तृप्ति हो जाय, भोग स्वाद का चस्का तो उनका उत्तरोत्तर

बढ़ता ही जाता हैं। नामामृत पान करने वाले को इहलोक,परलोक के किसी अन्य सुख–स्वाद की चाहना कतई नहीं रहती। अत: इस नामामृत को श्रीहनुमतलाल महा–अर्जित श्रेष्ठ बताते हैं–

''अमृतस्याकरं विद्यादेतदेव महोर्जितम्।''

श्रीरामनाम के रसका जिन्होंने आस्वादनकर लिया,वे महात्मा श्रीनामतत्त्व के ज्ञात–अज्ञात सारे रहस्य जान जाते हैं। श्रीव्यासदेवजी सूतजी से मार्किण्डेय पुराण में कहते हैं–

''रामनाम परं गुह्यं सर्ववेदान्त वन्दितम्।
ये रसज्ञा महात्मनस्ते जानन्ति परेश्वरम्।।''

अत:श्रीरामनाम के रसास्वादन में जिसे श्रद्धा–भक्ति है, वहीं सभी शास्त्रों का यथार्थ ज्ञाता है,वही मानव जीवनको सार्थक करने वाला है। ऐसा रहस्यसार–नामक ग्रन्थ में स्वयं भगवान् नारायण मुनियों से कह रहे हैं।

''यस्य रामरसे प्रीति वर्तते भक्ति संयुता।
त एव कृतकृत्यश्च सर्व शास्त्रार्थ कोविद:।।''

हमही लोगों के समान जिस भाग्यहीन को सुधा–धाम श्रीरामनाम में प्रीति नहीं हुई, वह पतित शिरोमणि भूमि का महान भार–स्वरूप है।श्री मेरुतन्त्र ने बहुत ही ठीक कहा है–

''रामनाम्नि सुधानाम्नि यस्यप्रीतिर्न विद्यते।
पापिनामग्रगण्यस्य भूमेर्भार महत्तर:।।''

यही कारण है कि हम भक्ति–भाव के कच्चे हैं। पक्का तो राम–जापक ही होते हैं। श्रीनामशब्द का यह भी अर्थ है 'न आमो येन' अर्थात् जिसका अभ्यास कर जीव कच्चा न रहे, वहीं है नाम। आम का अर्थ कच्चा भी होता है। यथा– ''विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम धरो सो''।। श्री विनय १७३।४

हमारी कच्चाई का कारण है हमारी लोभ–लिप्सा एकतो गुरुजनों के उपदेश के अनुसार,नाम रटने में हमारी नानी मर जाती है। रटते ही नहीं बनता है। रटे तो नाम में स्वाद न मिलने से,तुरत नाम जपना छोड़–छाड़कर, भोग सामग्री जुटाने के गोरखधन्धे में लग जाते हैं।

श्रीरामनाम में सुधा से सहस्रगुना अधिक मिठास है। आपको श्रीनाम का स्वाद नही मिलता है, इसके कारण पर आपने कभी विचार किया है? हमारे परमाचार्य श्री गोस्वामिपाद ने तो डंका बजाकर,पहले से कह रखा है–

''तुलसी जौ लौं विषय की मुधा माधुरी मीठ।
तौ लौं सुधा सहस्र सम,राम भगति सुठि सीठ।।''

श्रीराम भगति पाठ को बदलकर,यदि रामनाम रखकर नया पाठ बना लें,तो श्रीगोस्वामिपाद के तात्पर्य में कोई हेर–फेर नहीं होगा।

''तुलसी जौ लौं विषय की मुधा माधुरी मीठ।
तौ लौं सुधा सहस्र सम,रामनाम सुठि सीठ।।''

अब समझा न आपने?प्राकृतिक भोग–विलास में मृगमरीचिका के समान भ्रमपूर्ण रस लेने वाले को दिव्यरस कभी मयस्सर नहीं होने को। जीभ से श्रीनाम का रसास्वादन तब हो,जब हम सर्वप्रथम जीभ को खाद्य–वस्तुओं के स्वाद से रोकें?देवस्वामी कहते हैं– 'जीभ चटोरी चाट चटेगी, कांहे सियबर को नाम रटेगी।' महात्मा गाँधी की भांति अस्वादब्रत ले लीजिये,पुन: संसार की सभी भोग–वस्तुओं से सभी विषयेन्द्रियों को रोकिये। पुन:निरन्तर नामजप में तत्पर होइए? स्वाद सरसेगा क्यों नहीं जीभपर श्रीनामका? जैमिनी पुराण के अनुसार तत्त्वदर्शी मुनियों ने जीभ का दूसरा नाम रसना बताया है,इसलिये कि यही जीभ श्रीरामनाम में स्थित परम स्वाद का,परम रस का भेद जानती है। 'रसभेद जाने सो रसना'।

''रामनाम परमस्वादु भेदज्ञा रसना च या।
तन्नाम रसनेत्यहुर्मनयस्तत्त्वदर्शिन:।।''

श्रीवृहद्विष्णुपुराण में महर्षि पराशरजी अपने शिष्य को समझा रहे हैं।बच्चे,अपनी जीभ से कहो कि हे जिह्वे! तू रससार को परखने वाली है, तुझे माधुरी से बड़ी प्रीति हैं। लो श्रीरामनाम में अनन्त सुधा से भी बढ़कर स्वाद भरा है, निरन्तर पीता रह इसे।

''हे जिह्वे रससारज्ञे संततं मधुर प्रिये।
श्रीरामनाम–पीयूषं पिव प्रीत्या निरन्तरम्।।''

श्री सनक–सनातन संहिता में भी जीभको इसी प्रकार समझाया गया है–है जिह्वे! तू मधुर प्रिय है, तो श्रीरामनाम–सुधा का प्रेमभक्तिसे पान किया कर। वाद–विवाद तो अपने और परायें हृदय को संतप्त करने वाला अग्नि है। इसमें कभी मत उलझना। श्रीरामनाम में केवल सुधाधिक स्वाद ही हो,इतनाही नहीं। इनके जपसे जन्म–मरण का रोग मिटेगा, काम–विकार नष्ट होगा।श्रीनाम तुम्हारे मनको दिव्यानन्द में रमण करावेंगें, क्योंकि ये स्वत: रमणीक से भी रमणीक है। यही कारण है कि भगवान् पार्वतीवल्लभ को सदैव प्रिय हैं। सर्वेश्वर हैं,अनन्त सुखदाता हैं।

हे जिह्वे मधुरप्रिये सुमधुरं श्रीरामात्मकं
पीयूषं पिव प्रेमभक्ति मनसा हित्वा विवादानलम्।
जन्मव्याधि कषाय–काम समनं रम्यातिरम्यं परं
श्रीगौरीश प्रियं सदैव सुभगं सर्वेश्वरं सौख्यदम्।।''

श्रीप्रभास पुराण का कथन है–श्रीरामनाम में निरतिशय माधुरी भरी है। श्रीनाम सर्वेश्वर के भी ईश्वर हैं। अर्थात् ब्रह्मरूप से भी बड़े हैं। जीभ से उच्चारण करने पर; समस्त रसों के निधान स्वरूप महारास का सुखस्वाद शीघ्र सरसने लगता है।

''मधुरालयमदो मुख्यं नाम सर्वेश्वरम्।
रसनायां स्फुरत्याशु महारास रसालयम्।''

श्री पद्मपुराण में श्रीवशिष्ठ जी ने श्रीभरद्वाजऋषि से कहा है कि श्रीरामनाम स्वाद में सुधानिधान हैं। निर्मल, गुण तीत एवं नित्य निर्विकार हैं। जापक को तत्काल अभय कर देते हैं।

''अहो महामुने लोके राम नामाभय प्रदम।
निर्मलं निर्गुणं नित्यं निर्विकार सुधास्पदम्।।''

श्रीमार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि जिसे श्रीरामनाममृतमें रूचि हो गई, उसकी जीभ तो निरन्तर दिव्य सुधा–स्वाद को लूटती रहती है। वह स्वयं तो कृतकृत्य हो ही गया। औरों के दोष को भी भस्म कर देने में समर्थ हो गया।

''जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचि:।
कृतकृत्यस्स एव स्यात् सर्वदोषैक दाहक:।''

श्री पद्मसंहिता कहती है–श्रीरामनाम में अनन्त रस, अपरिमित स्वाद भरा है। नामसाधको के लिये तो दिव्यरसों का निधान ही है। ऐसे रामनामके स्मरण से श्रीरामरूप का स्पष्ट प्रकाश हो जाता हैं।

''रामनाम रसानन्त साधकं सुरसालयम्।
स्मरणाद्रामभद्रस्य संकाश: तस्य संस्फुटम्।।''

श्रीरहस्यनाटक में कहा गया है कि श्रीरामनाम स्वाद में मधुराति–मधुर हैं। मंगलों के भी मंगल करने वाले हैं। समस्त श्रुतिको हम यदि कल्पलता मान लें, तो श्रीरामनामको उस लताका चिन्मय फल कहेंगे। एक ही बार ऐसे नाम उच्चारण करले, चाहे भावसे या कुभाव से ही, तो वह संसार से पार उतर जाता है।

मधुर मधुरमेतं मंगलम् मंगलानां
सकल निगमवल्ली यत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा
स भवति भवपारं रामनामानुभावात् ।।

पुन: वहीं कहते हैं कि श्रीरामनाम के दोनों अक्षर क्या हैं–मानो दो प्रफुल्लित कमल हैं। हमारा मन मधुकर उसके मकरन्द स्वाद पीकर मस्त बना है। हमारे कानों में जब राम–ध्वनि प्रविष्ट होती है तब मालूम पड़ता है सुधा– धारा कानके अन्दर घुस रही हो, मेरे लिये तो ऐसे ही सुखदायक है। सरस्वती देवी के तो दोनों नयनही हैं। वह श्रीरामनाम हीन निरी अन्धी हैं। अज्ञानान्धार को मिटाने के लिये दोनों सूर्य–चन्द्रवत् समर्थ हैं। सम्पूर्ण वेद–सिन्धु को मथकर,यहीं दोनों रत्नमणि निकाली गई है। मुनियों के मनरूपी मानसरोवर में हंस समान विहार करने वाले हैं दोनों नामवर्ण । मुक्ति–रूपी सुहागिन के तो दोनों सौभाग्य–सूचक ताटंक ही हैं।

''चेतोऽले: कमलद्वयं श्रुतिपुटी पीयूषपूर द्वयं
वागीशा नयनद्वयं धनतमश्चण्डांशु चन्द्रद्वयम्।
छान्दस्सिन्धु मणिद्वयं मुनिमन: कासार हंस द्वयं
मोक्षश्री श्रवणोत्पल द्वयमिदं रामेतिवर्ण द्वयम्।।''

श्रीरामचरितमानस की वंदना का श्लोक है कि श्रीरामनाम–रूपी अमृत वेदसिन्धु को मथकर काढ़ा गया है। क्षीरसिन्धु मंथन से जो अमृत सार निकला,वह चन्द्रमा में स्थित हुआ। यह नामसुधा श्री शिवजी के मुखचन्द्र में सुशोभित हुई। कलिमल को धोने में समर्थ हैं। जन्म–मरण–रूपी रोग की यह महौषधि है। श्रीजनकनन्दिनी तो इसी नाम को जपकर जीवन धारण करती है। ऐसे नाम–सुधा का जो सुकृति नित्य पान करते हैं, वह धन्यातिधन्य हैं।

''ब्रह्माम्भोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययं
श्री मच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामय–भेषजं सुखकरं श्रीजानकी जीवनं
धन्यास्ते कृतिन: पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।''

श्रीमानसजी तो श्रीरामनाम को सुधा–कुंड ही बताते हैं। निष्कामी भक्त इस सुधाकुंड में अपने मनको मीन बनाकर डुबोये रहते हैं।

''सकल कामना हीन जे,राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पीयूष ह्रद, तिनहुँ कियो मन मीन।।''

एक बात और –और भक्ति अंग संतरे, अनार आदि के रस के समान हैं, तो श्रीनाम–सुधा है। अमृत और रस में तारतम्य तो है ही। श्रीबडे महाराज पाँचों भक्ति–रस को श्रीरामनामाक्षरों में ही स्थित बताते हैं। रेफ में रसराज शृंगार रस है; तो रेफ के अकार में सख्य रस, मध्याकार में वात्सल्य रस तथा मकार में शान्त और दास्य रस स्थित हैं।

''सरस सिंगार रसराज रेफ रस रूप, अमल अनूप भाव भाँति सुनिबेरिये।
सहज सुभाय भाय चहल पहल निंत, सख्य शुचि भाव कल माँझ रुचि धेरिये।।
वात्सल्य विमल विचित्र गुरु श्रेय स्वर,बीच वरदैन अनुराग सुख ढेरिये।
(श्री) युगलअनन्य शान्त दास्यहू मकार माँझ,रहस रसाल लाल नाममध्य हेरिये।।२६४८।।

ऐसे श्रीरामनाम सुधा–धाम हैं। इनके परम स्वाद को रटकर अनुभव करना चाहिये। श्रीरामनामके अचिन्त्य रस की,स्वाद की सिद्धि तर्क–कुतर्क से नहीं होने को। कोई नाम–विमुखी इसमें कुतर्क करता है, वह महान पापी है। नरकगामी है, उसे राक्षसाधम समझना। इतिहासोत्तम तो यही कहते हैं।

''राम नाम्नि सुधाधाम्नि कुतर्क निरयाबहम्।
समाश्रयन्ति ये पापास्ते महारक्षसाधमा:।।''

श्रीनाम का अर्थ पंडित एक और भाँति से बताते हैं–'न अ मा अलक्ष्मी: अमा अन्धकारोवा यस्मात्' अर्थात् जिसके जप से न तो शोभा एवं धन–सम्पति की कमी न रहे,न अज्ञानान्धकार हृदय में रहने पावे उसे (श्री) नाम कहेंगे। श्रीरामनाम में दोनों गुण सहज है।

एक बात और श्रीरसमय रामनाम के रटन से रस का परिपाक बनता है। जापक के हृदय–रूपी घट को भी श्री नाम परिपक्व कर देते हैं। एक वैदिक मन्त्र है––

''अतप्त तनुर्न तदामो अश्नुते दिवम्।''

अर्थात् जो न आम नाम नहीं जपता है,वह आम अर्थात् कच्च है और नाम रटने का स्वाभाविक फल है विरह ज्वाला जगना। उस विरहाग्नि में जिसका हृदय घट पका नहीं, वह न तो दिव्य–सुख स्वरूप धाम का,न रूप का भोग सकता है।

अत: विरह ताप में तन को तपाना योग्य है। श्रीनाम प्रेम वसावन वरवा विलास में श्री बड़े महाराज ने इस सम्बन्ध में बहुत विस्तार से विचार किया है। विरह इच्छुकों को वह अवश्य देखना चाहिये और देखिये श्री बड़े महाराज का 'विरह परत्व प्रबोध दोहावली'। हम साम्प्रदायिक रीति से उपर्युक्त मन्त्र का ऐसा भी अर्थ कर सकते हैं कि जिसने श्रीधनुषवाण के तप्त श्रीरामायुध से अपने तन को तापित नहीं करवा लिया, वह कच्चा शरणागत है। वह दिव्यधाम, इष्टरूप का सुख नहीं पा सकेगा।

श्रीरामनाम की यह मिठास,यह मस्ती,जो सज्जन पुराकाल से अबतक अनुभव करते आये हैं,हमें क्यों नहीं अनुभव होता है? इसका विवेचन श्रीरघुनाथदास गोस्वामी ने बड़ी सरलता से कर दिया है।

''स्याद्रामनाम चारितादिसिताप्यविधा
पित्तोपतप्तरसनस्य न रोचिकानु।
किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टाऽ
स्वाद्वीक्रमाद्भवति तद्गदमूल हंत्री।।''

मिसरी मीठी है,जो खाता है उसे मीठी जान पड़ती है, पर जिसका मुख पित्त से तप्त होकर कटु हो रहा है, उसे मिसरी कड़वी जान पड़ती है। यही पित्तके उद्भय होने की परीक्षा है। अविद्या पित्तसे तप्त हमारी रसना वा मन वाणी को श्रीरामनाम–लीलागुण मधुर होने पर भी मधुर प्रतीत नहीं होते हैं, प्रत्युत अरुचिकर अप्रिया और कटु प्रतीत होते हैं। परन्तु नियम यह है कि पित्तरोग की जैसे यह परीक्षा है कि उसे मिसरी कटु प्रतीत हो, वैसेही उसकी चिकित्सा भी यही है कि वह मिसरी ही का सेवन करता रहे। इसी से क्रमश: पित्त शान्त होता जायेगा, मिसरी मीठी प्रतीत होने लगेगी। अविद्या संतप्त हमारे मन वाणी को श्रीहरिनाम का सेवन करते रहने से क्रमसे उसका माधुर्य अनुभव होने लगेगा और मधुरता ग्रहण की विरोधी अविद्या भी क्रमश: नष्ट हो जायेगी। बस रुचि हो वा न हो, मीठा प्रतीत हो वा कटु,नाम–स्मरणही करते रहना।

मीठो लगे मोहि अपने पिया को नाम अनूपम रंग भरो जी।
अपर ठौर न प्रीति बढ़त कछु छनछन मेरी हीय हरो जी।।
चारिउ फलकी चाह न सपनेहुँ सुख–सम्पति जग भार परो जी।
साधन सिद्धि नाम केवल दृढ मन बच करम सुबुझि धरो जी।।
बिना अयास रुच्छ नाना मत– सागर सहजहि सहज तरो जी।
युगलअनन्यशरन संतत सुख अति विचित्रतर भाव भरो जी।।

रामनाम मधुर सुरस पीवत पति पावैं।
युग युग प्रति प्रभा पुञ्ज संयुत सरसावै।
दाद दाह आह चाह चौगुन चटकावै।।
विभव विमल अष्ट सुगुन अगुन रस रसावै।
सद विलास भांस खाश सुछवि छटा छावैं।।
लहर लय ललाम आम अनुपम अनुभावै।
युगअनन्य युगल रूप निकट नित सोहावैं।। श्रीनाम–परत्व पदावली।

रसमय रमन अर्था आयस सुचि सार सुजान सनेही।
विशद बरन हिय हरन शरन प्रद तारन तरन सबेही।।
जापकजन जानहि जिलवा जस जाहिर जुग–जुग एही।
युगलानन्यशरन रमि रहु रस सागर नाम निरेही।।

निगमागम द्रुम दमकदार दुतिदायक फल ललिताली।
महामधुर रसरूप मृदुलतर नाम प्रनत प्रतिपाली।।
जेहि फल अमल हेत तरसत शिव शेष सुविधि बनमाली ।
युगलानन्यशरन चाखात चित लाय रहस्य रसाली।

हे रसनेश्रीरामनाम धुनि करत आलकस काहे।
जाने दियो अनूठी तब गति आदि अंत निर्वाहें।।
याते मधुर स्वाद दूजो का जाको तू चित चाहे।
युगलानन्यशरन पानी धो पानी जात बहा है।। श्री नाम–कान्ति से

मृत संजीवन राम–नाम

(कल्याण,भगवन्नाम महिमा अंक पृ०१३३ से साभार उद्‌धृत)

श्रीकबीरदास जी के पुत्र कमालजी थे। वे एक बार गंगातट पर गये। उन्होंने वहां एक मृतक व्यक्ति को देखा। उसके परिवारवाले रो रहे थे। कमालजीको उन पर दया आयी । पिताजी की बात उन्हें याद थी कि भगवान् के नामसे सब कुछ हो सकता है। उन्होंने मृतक के कानके समीप जाकर कहा– 'अरे,–राम–राम' कहो।' इतना सुनते ही वह व्यक्ति उठकर खडा हो गया। कमालजी बड़े प्रसन्न हुये। वे दौड़े–दौड़े कबीर जी के पास गये और बोले– 'पिताजी! पिताजी!! मैंने केवल दो बार राम–राम कहकर मृतक को जीवित कर दिया।

कबीरजी यह सुनकर बोले–अरे,अबोध बालक! एक मृतक को जीवित करने को तुझे दो बार राम का नाम लेना पड़ा? अच्छा,एक तुलसीदल ला। कमालजी एक तुलसीदल ले आये,

उस पर कबीदासजी ने केवल 'रा' लिखा। फिर एक लोटा जल में उसे छोड़ दिया और कहा–'जा इस जल को तू जितने मृतकों के ऊपर छोड़ेगा, वे सभी जीवित हो जायेंगे।' यह सुनकर कमालजी मणिकर्णिका घाट पर गये, वहाँ सैकडों मृतक पड़े थे। सबपर उन्होंने छींटे दिये और सभी जीवित हो उठे।

इस कथा से यही सारांश निकला कि नाम तो एकही है। एक सद्गुण सदाचारी सुपात्र उसके महत्त्व को अधिक जानता है, उसकी श्रद्धा अधिक है। अत: उसका आधा नाम भी अत्यधिक प्रभावशील होगा। दूसरे जो उसके महत्त्व को कम जानते हैं,उनका कम प्रभाव पड़ेगा।

❀ अन्दर का चौकीदार ❀

"नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज–पद जंत्रित,प्रान जाहि केहि वाट।।"

एक धनीसेठ ने एक सन्त को अपने विशाल वैभव और महलों के बड़े–बड़े ठाठ दिखाये। सब कुछ देख चुकने के बाद साधुने पूछा–सेठ! यह सब तो ठीक है,परन्तु चौकीदार रखा है या नहीं? सेठ ने कहा–महाराज! चौकीदार न हो तो दिन–दहाड़े बदमाश लूटकर न ले जायें? इन सबकी सम्हाल के लिए बहुत से चौकीदार रक्खे हैं। सन्तने कहा – यह तो तुमने बाहर के माल की रक्षा के लिए बाहर से चौकीदारों की बात कहीं। मैं तो तुम्हें भीतर के चौकीदार के सम्बन्ध में पूछ रहा हूँ। सेठ ने हाथ जोड़कर कहा महाराज! आपकी गूढ़ बात मैं तो नहीं समझ सका। अन्दर के चौकीदार का क्या अर्थ? सन्तने कहा–सेठ!राम–नाम अन्दर का चौकीदार है। जैसे तुम्हारे घर में अनेक अमूल्य वस्तुएँ भरी हैं, इसी प्रकार तुम्हारे अन्दर में उनसे भी बढ़कर अमूल्य वस्तुएँ भरी हैं। जैसे चौकीदार के बिना अपने घर की चीजें चोरी चली जाती हैं, इसी प्रकार अन्दर के चौकीदारके बिना अपने अन्दर रहनेवाली अनेक ऊँची–ऊँची चीजें चोरी चली जाती है। रामनामके चौकीदार के बिना उत्तम नीति चोरी जाती है। इस चौकीदार के बिना जगत् के प्रपंच मे हृदय की शान्ति चली जाती है। भलमनासाई और भक्ति चली जाती है, दया, क्षमा और परोपकार आदि चले जाते हैं, और सारा विवेक ज्ञान चला जाता है। परन्तु यदि रामनामरूपी चौकीदार अन्दर रक्खा जाता है, तो वे सब बढ़ियाँ–बढ़ियाँ चीजें चोरी जाने से बच जाती हैं। ये सब दैवी–सम्पति की वस्तुएँ जीवन को सुधारने वाली हैं, जीवन में रस भरने वाली हैं,और अन्त में भगवद्धाम तक पहुँचाने वाली हैं। जैसे बाहर के महल की लौकिक वस्तुओं के चोरी न जाने के लिये तुमने कड़ा प्रबन्ध कर रखा है,इसी प्रकार तुम्हारा अन्त:करण, जो अनन्तब्रह्मांडनायक के रहने का घर है, उस अलौकिक घर की वस्तुएँ चोरी न जायं, इसके लिये भी तुम्हें प्रबंध करना चाहिये। इस बात को सुनकर सेठ उस सन्तके चरणों में गिर पड़ा, और उनके उपदेशानुसार जीवन बिताकर चलता बना।

♈ तृप्ति तो राम–ही–नाम से ♈

(भगवन्नाम महिमा अंक,कल्याण पृ०४६३ से साभार उद्धृत)

राज्याभिषेक को बहुत समय हो चुका था। माता जानकी के मनमें वात्सल्य उमड़ा। उन्होंने एक दिन कहा–हनुमान्! कल तुम्हें मैं अपने हाथों से बनाकर भोजन कराऊँगी। भला,हनुमानजी के आनन्द का क्या पूछना! जगन्माता स्वयं भोजन बनाकर खिलायें,यह सौभाग्य किसे मिलता है? दूसरे दिन बड़े स्नेह से, बड़े उल्लास से, श्रीविदेहनन्दिनी ने नाना प्रकार के व्यंजन बनाये और हनुमानजी को सम्मुख आसन पर बैठाकर परसने लगीं। निखिलेश्वरी श्रीरामवल्लभा स्वयं अपने करों से परस रहीं थीं, और उनके परम स्नेह–भाजन लाड़ले पुत्र हनुमान् भोजनकर रहे थे। माता स्नेह से परोसे तो पुत्र को क्षुधा न लगी हो तो लग जाय। हनुमानजी ने भाव–विभोर होकर, भोजन प्रारम्भ किया। जो कुछ थाली में पड़ता, एकही बार में मुख में चला जाता । श्रीजानकीजी को चिन्ता होने लेगी। अयोध्या–सम्राट के रसोई–घर का व्यंजन समाप्त होने को आया और हनुमानका हाथ तो शिथिल हो ही नहीं रहा था। अन्तमें जनकनन्दिनी ने लषणलाल को बुलवाया और अपनी कठिनाई बतायी। श्रीसौमित्र बोले– ये रूद्रके अवतार हैं। इनको भला, इस प्रकार कैसे तृप्ति कौन दे सकता है?

लक्ष्मणजीने एक तुलसी दल पर 'राम' चन्दन से लिखकर, हनुमानजी के सामने भोजन–पात्र में डाल दिया। वह तुलसीदल मुख में जाते ही हनुमानजी ने तृप्ति की डकार ली और पात्र में बचे अन्न को पूरे शरीर में उन्होंने मल लिया और हर्षावेश में नृत्य करते हुये 'रामनाम' का कीर्त्तन करने लगे।

✡✡

❄ श्रीरामनाम की दुर्लभता ❄

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वरचित श्रीरामनाम परत्व पदावली में लिखते हैं कि श्रीरामनामजप में तत्पर होनेवाले सज्जन विरले कोई होते हैं, क्योंकि नामजप बड़ाही कठिन काम है। आप जल के भीतर रहने की योगशक्ति श्रीभागवत कथित सौभरि ऋषि के समान प्राप्त करलें, और उतराने के भय से गलेमें जलपूर्ण गागर बाँधकर जल में डूबे रहें, यह नामजप की कठिनाई के आगे सुलभ हैं। पुनः आप योगसिद्धि के बलसे सैकड़ो योजन ऊंचे सुमेरू पर्वत के उच्च शिखर पर चढ़ जायं, और वहाँ से बारबार भूमि पर कूदा करें और चूर–चूर होकर मरने से बच भी जायं, ऐसी शक्ति प्राप्त करना भी संभव है पर नाम निष्ठा प्राप्तकर लेना बड़ाही कठिन काम है। पुनः आप योग–बल से श्रीबालिजी के समान सातो समुद्र को क्षण भर में पारकर आ जाये यह भी श्री नामकठिनाई के आगे सुगम हैं। प्रलयकालीन प्रचंड पवन के झकोरे आप सह सकते हैं। वासनाओं का त्याग भी उनके आगे सुगम है, पर श्रीरामनामका दृढ़ ब्रत लेना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। किसी बिरले भजन शूरमा से यह बनना सम्भव है।

''कठिन श्रीरामनाम को कहिवो। बरुगर गागर वांधि बूडिसर रहिवो।

चढ़ि सुमेर सत सहस कोस ते सुलभ बार बहुतिरवो।
सातो सिन्धु पलक में तिरवो, तिमि सब भूमिन फिरवो।
प्रबल पवन अति प्रलय कालको, सोउ धीरज धरि सहिवो।
इल्यादिंदक आचरन सुलभ सब समुझि वासना जहिवो।
(श्री) युगलानन्यशरन दुर्लभतम नाम सुदृढ़ब्रत गहिवो।

कहावत है कि——

''रामनाम सोई रटे,जो रटि आया होय।
वावन विघा छोड़ि के ,अनत न केसर होय।।''

कहते हैं कि केशर केवल कश्मीर में ही होता हैं और काश्मीर में भी सर्वत्र नहीं । वहाँ एक बावन विघेका चकला है, उसी में होता है। कहावत है कि एकबार जयपुर के कोई शौकीन नृपतिने अपने यहां कश्मीर का केशर उत्पन्न कुशल माली बुलाकर अपने यहाँ केशर का बाग लगाना चाहा। माली द्वारा प्रयास हुआ पर लगा नहीं। पूछने पर माली ने बताया कि वहीं की मिट्टी पर केशर जमेगा। इसपर वहाँ की मिटटी मँगायी गई फिर भी केशर नहीं हुआ। माली के कहने पर वहीं का जल केशर सींचने के लिए आया, फिर भी केशर नहीं हुआ। तब हार कर प्रयास छोड़ दिया। यही बात नाप जप की है। जपने में कई साधक तत्पर भी होते हैं, तो चार दिनों के बाद 'टांय–टांय फिस !' कायर लोग नामजप संग्राम में टिक नहीं पाते ।

श्रीनृसिंह पुराण की बात है। देवर्षि नारदजी का सम्वाद श्रीयाज्ञवल्क्यजी के प्रति है। श्री देवर्षि कहते हैं कि त्रिकालदर्शी महर्षियों ने अपनी सर्वज्ञता से जानकर यह निर्भ्रान्त सिद्धान्त स्थिर किया है कि जिसके पूर्व जन्म के असंख्य उग्र पुण्यों का फल एक साथ उदित होता है जो उसी पुण्य प्रभाव से कोई श्रीरामनाम जप में तत्पर हो पाता है।

'' बहु जन्मोग्र पुण्यानां फलं नामानुकीर्त्तनम्।
सर्वेषां ब्रह्मार्षि मुख्यानां सम्मतं संशयं बिना।।''

श्री रहस्य नाटक का वचन है कि दुष्ट जनों के लिए परब्रह्म स्वरुप श्री रामनाम की आराधना दुष्कर है, सुकर है केवल प्रेम सम्पन्न हृदय वाले बड़भागी श्रीनामानुरागी के लिये। उनके लिये सुलभ और सुसाध्य है।

''रामनाम परब्रह्म दुराराध्यं दुरात्मनाम्।
साध्यं च सुलभं नित्यं प्रेम सम्पन्न मानसै:।

श्री प्रभास पुराण में श्री प्रभुका ही श्रीमुखवचन श्रीनारदजी के प्रति है जिस व्यक्ति के पाप क्षीण हो गये हैं,जो पुण्यपुञ्ज से युक्त है,वे ही श्रीरामनाम का ध्यान तथा जप कर सकते हैं । श्रीनारदजी, अन्यों के लिये जो स्वप्न में भी होना कठिन है।

'नराणं क्षीणपापानां सर्वेणां सुकृतात्मनाम्।
इदमेव परं ध्येयं नान्यत्स्वप्नेपि नारद।।''

श्रीसनक सनातन संहिता में कहा गया है कि सभी शुभ साधनों का अन्तिम फल यही है कि निरालस्य जिह्वा से निरन्तर नाम जप होने लगे।

सर्वेणां साधनानां वै परिपाकमिदं मुने।
यज्जिह्वाग्रे परं नाम जपेन्नित्यमतन्द्रितम्।।'

श्रीतन्त्रसार में कहा गया है कि सभी मन्त्रों से श्रेष्ठतममंत्र श्रीरामनाम है। इनका जप साधारण जीव समुदाय के लिए दुर्लभ है। पापियों के मुख से श्रीनामोच्चारण कैसे होंगे? पुण्यपुञ्ज उदय हो, तो नाम निष्ठा जगे।

'दुर्लभं सर्व जीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वर।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं विना प्रिये।।''

जानकी जीवन नाम सनेही सही सत कोटिन माँझ में एहै
कौन कहौ तिनकी महिमा सब भाँति बड़ी अनुरागिन टेक है।।
आप परेश भये बस जासुके भूलि परत्व सुप्रेम से छके है।
(श्री) युग्म अनन्य सोई धनि धन्य जो नामके साँचे सुसेवक नेक है।।२००१

तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय। बड़े भाग अनुराग राम सन होय।।

नाम रटन तेहि नहि रुचै, जेहि उर पाप निवास।
प्रेमलता जिमि ज्वर अछत, अमी असनहू धास।।
एकहि एक सिखावत जपत न आप। तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप।।
मरत कहत सब सब कहै सुमिरहु राम। तुलसी अब नहि जपत समुझि परिनाम।
श्रीवरवैरामायण उत्तरकाण्ड।

श्री आदि रामायण में कहा गया है श्रीरामनाम में श्रद्धा होना बड़ा ही कठिन काम है। करोड़ों जन्म के असंख्य पुण्यपुञ्ज एकसाथ जुटकर अपना फल प्रगट करें, तब कहीं जाकर श्रीरामनाम में रति होती है।

'असंखयैः पुण्यनिचयैः कोटि जन्मार्जितैरपि।
पञ्चाङ्गोपासनामिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत्।।'

साम्वर्तक स्मृति में कहा गया कि यदि कोई सज्जन असंख्य जन्मों के सुकृतों से संयुक्त हो, तो उसी को परमोत्तम मंत्रस्वरूप श्रीरामनाम में रति उत्पन्न होती है।

' असंख्य जन्म सुकृतैर्युक्तो यदि भवेज्जनः।
तथाश्रीराम सन्मन्त्रे रति स्संजायते नृणाम्।।'

लाखन में कोउ एक नामरत होइ है नरवर बड़भागी।
रटहि निरन्तर सकल सोच तजि धरि अनन्यव्रत अनुरागी।।
अरुझे अपर विविध कर्मनि महँ जरते सदा त्रिविध आगी।
प्रेमलता सिख सुनहि न सुन्दर धावत फिरहि उदर लागी।।

— श्रीहितोपदेश शतक।

शास्त्रों में नाममहिमा के इतने अधिक प्रसंग हैं कि उनकी गणना करना भी बड़ा कठिन कार्य है। इतना होते हुए भी जगत् के सब लोग नाम पर विश्वास क्यों नहीं करते? नामका साधन तो कठिन नहीं प्रतीत होता। पूजा, होम, यज्ञ आदि में जितना अधिक प्रयास और सामग्रियों का संग्रह करना पड़ता है। इसमें वह सब कुछ नहीं करना पड़ता। तो भी सब लोग नामपरायण क्यों नहीं होते?

इसका उत्तर यह है कि नामपरायण होना जितना मुख से सहज कहा जाता है, वास्तव में उतना सहज नहीं है। बड़े पुण्यबल से नाम में रुचि होती है, शास्त्र पढ़ना, उपदेश देना, बड़े–बड़े शास्त्रार्थ करना सहज है, परन्तु निश्चित मन से विश्वासपूर्वक भगवान् का नाम लेना बड़ा कठिन है।

कुछ लोग तो इसकी ओर ध्यान हीं नहीं देते, जो कुछ ध्यान देते हैं, उन्हें इसका सुकरत्व (सहजपन) देखकर अश्रद्धा हो जाती है, वे समझते हैं कि जब बड़े–बड़े यज्ञ–तप दानादि सत्कर्मों से पापवासना का नाश होकर मनकी वृत्तियाँ शुद्ध और सात्विक नहीं बनतीं, तब केवल शब्दोच्चारण मात्र से क्या हो सकता है? वे लोग इसे मामूली शब्द समझकर छोड़ देते हैं। कुछ लोग पंडिताई के अभिमान से, शास्त्रों के बाह्य अवलोकन से केवल बाग–वितण्डार्थ शास्त्रपटु होकर नाम का आदर नहीं करते! पाश्चात्य– शिक्षा– प्राप्त पुरुष तो प्राय: आधुनिक पाश्चात्यसभ्यता की माया– मरीचिका में पड़कर ऐसी बातों को केवल गपोड़ा ही समझते हैं, कुछ सुधारका दम भरने वाले (संसार का सुधार हमारे बल पर होगा, ईश्वर वस्तु है ही क्या? उसकी आवश्यकता तो घरवाररहित संन्यासियों को है, हमें उससे क्या मतलब? सत्कर्म करेंगे, अच्छाफल आपही आप होगा, ऐसी भावना से) नाम का तिरस्कार करते हैं।

बंचक विवेक बल वस्तु वित्त हीन दीन,
छीन लीन बिष पीन नाम गुन जानते।
यन्त्र मन्त्र तोटकाटि साधन समूह रचि,
पचि अज्ञ जीव कृतकृत्यता प्रमानते।।
मृग भ्रम नीर माँझ मगन हमेश होय,
विविध विकार ताते करतब छानते।
युगल अनन्य सर्वेश्वर प्रधान नाम,
अगुन अनाम गुनधाम न पछानते।।

कुछ ज्ञानाभिमानी लोग ज्ञान के अभिमान में हरिनाम को गौण समझकर या मन्द– साधन समझकर त्याग देते हैं। जनता अधिकतर संसार में बड़े लोग कहलाने वाले के पीछे ही चला करती है। यही सब कारण है कि सब लोग रामनाम–परायण नहीं होते।

रामनाम का सौदा सच्चा धोखे का है काम नहीं।
सस्ता चोखा यद्यपि जाहिर लेते इसको आम नहीं।
परखैया कोउ सन्त सनेही तजते आठो याम नहीं।
प्रेमलता मूरख किमि पावै शरधा रूपी दाम नहीं।

नाम–जापक में श्रीनामजप की उमङ्ग तथा आवेश ऐसा चढ़ना चाहिये, जैसे श्रावण की प्रबल–बेगवती सरिता की अविराम धारा हो। सरिता के दोनों तट उस समय हरे–हरे बड़े शोभायमान प्रतीत होते हैं, उसी भाँति नाम रटन जन्य हृदय में खुशीयाली से जापक संशोभित रहते हैं। श्रीनामका प्रभाव देख–देखकर जापक अपने–पराये की सुधिबुधि भूलकर निर्भय बन जाते हैं। प्रियतमपुर की गैल–लखाने वाले ऐसे नाम के अनुरागी लाखों–करोड़ों में कोई विरले हाते हैं।

'सावन सरित भरित सोभा भल हरित हिय हरसायत।
याही भाँति उमंग नाम नव रंग चढ़े चित चायत।।
भूले भीति नीति निज–पर–मति सहित सराह मरायत।
युगलानन्यशरन पदुमन में कोउ महरमी विलायत।।' श्रीनाम – कान्ति।

& प्रार्थना सुलभ नाम &

सच्चे सत्संगसे श्रीनामजपहीको कलिकाल में उबारने वाले एकमात्र अचूक साधन तो जान लिया, किन्तु नाम रटने की इच्छा रहते हुए भी हमसे नाम जपते बनता नहीं। चलो वहाँ देखो, वहाँ सुनो, इस प्रकार के मन–बहलाऊ काम तो कालक्षेप के लिए हो जाता है, किन्तु नापजपवाले ठोस साधन में न जाने मन क्यों नहीं लगता है? बात स्पष्ट है, पूर्वजन्मार्जित पाप–पुञ्ज की प्रबलता नाम रटने में बाधा पहुँचा रही है।

एकहि एक सिखावत जपत न आप।
तुलसी नाम प्रेम कर बाधक पाप।।

तब क्या करें? निराश होकर छोड़ दें? नहीं जी, असम्भव से भी असम्भव कार्य भगवत्प्रार्थना से सुकर हो जाता है। प्रार्थना में आश्चर्यजनक शक्ति है। हम प्रभु से नाम–प्रेम प्रार्थना पूर्वक माँगें। हमे परमोत्तम भागवत श्री धर्मराज जी से नाम–प्रेम माँगने की प्रार्थना सीखनी चाहिये। ब्रह्माण्ड– पुराण में उस प्रार्थना का स्वरूप कहा गया है।

'जयस्व रघुनन्दन रामचन्द्र प्रपन्न–दीनार्ति हराखिलेश।
वाञ्छामहे नाम निरामयं सदा, प्रदेहि भगवन् कृपया कृपालो।'

अर्थात् शरणागतों की समस्त आरति को हरण करने वाले अखिल सर्वेश्वर श्रीरघुनन्दन रामचन्द्रजू की जय हो। प्रभो! हम आपके निरामय नाम को जपना चाहते हैं। हे कृपालो! कृपापूर्वक अपने नाम में लगन मुझे दीजिये।

उसी प्रकार सिद्धान्त रहस्य—नामक आर्षग्रन्थ में देवर्षि श्रीनारदजी की प्रार्थना वाणी उल्लिखित है।

'श्रीराम—राम रघुवंश कुलावतंस त्वन्नाम कीर्त्तनपरा भवतीवाणी।
नान्यं वरं रघुपते भ्रमतोऽपि याचे सत्यं वदामि रघुवीर दयानिधेऽह

अर्थात् हे श्रीरघुकुल—भूषण श्रीरामराघवजू! हमारी वाणी आपके नामकीर्तन—परायण हो जाय। हे दयानिधान रघुवीरजी, मैं सत्य कहता हूँ, यही एकमात्र आपसे वरदान याचना है। अन्य वर मैं भ्रमवश भी नहीं माँगता। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड—पुराण ही में श्रीनाम—सरकार से ही प्रार्थना मिलती है।

'सुखप्रदं रामपदं मनोहरं युगाक्षरं भीतिहरं शिवाकरम्।
यशस्करं धर्मकरं गुणाकरं वचोवरं में हृदयेस्तु सादरम्।।'

अर्थात् श्रीरामनामात्मक—युगलवरण सुख देने वाले, भय—निवारक, कल्याण की खान, जापक के सुयश बढ़ाने वाले, धर्म संचय करानेवाले, सकल सद्गुणों की खान है। ऐसे शब्द— शिरोमणि नाम कृपया हमारे हृदय में आकर बसें। श्रीनाम का सादर आवाहन करता हूँ।

श्रीगोस्वामिपाद ने अपने सुललित काव्यों में अनेक ठौर पर श्रीनाम वरदान की याचना की है। यथा— श्रीविनय २५५।४ में कहा है—

नाम सों निवाहु नेहु, दीन को दयालु देहु।
दास तुलसी को बलि बड़ो बरु है।।

श्रीबरवै—रामायण में कहा है—

राम भरोस नामबल नाम सनेहु। जनम—जनम रघुनन्दन तुलसिहि देहु।।
जनम—जनम जहँ तहँ तन तुलसिहि देहु। तहँ तहँ राम निवाहिब नाम सनेहु

श्रीदोहावली में कहा है कि माँगने पर आपने श्रीविभीषणजी को लंका दी, कपिराज श्रीसुग्रीवजी को किष्किन्धा को राज्य दिया। श्रीहनुमतलाल जी को स्वामीरूप से प्राप्त हुये। गीधराज जटायु को गोदमें बैठाकर मौत दी, मैं सबसे नीच हूँ। मुझे तो आप अपने नाम के प्रति अनुराग ही दे दीजिए।

लंक विभीषन राज कपि, पति मारुति खग मीच।
लही राम सो नाम रति, चाहत तुलसी नीच।।

श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज ने श्रीनाम—सरकार के प्रति रुचि जगाने की रीति बतायी है। नामानुरागी सन्तसे नाम प्रतिपादक मनोहर वाणी शौक समेत सुनें और सानन्द हृदय में धारण करें। क्योंकि—

सन्त सोई जिनके सदा, सुमिरन नाम रसाल।
पलक पड़े पावे नहीं, बिछुरत हाल बिहाल।। श्रीसन्त विनय शतक।

सच्चीरीति तो नामजप ही है और साधन कलिकाल में झूठे हैं। अतः झूठ छोड़कर नेमपूर्वक सत्य नामजप को हृदयमें जगावें। नामरहस्य मर्मज्ञ सन्त के बिना नामरहस्य अन्य करोड़ों उपाय से भी मिलना दुर्लभ है। ऐसे सन्त की वाणी सुनकर श्रीजानकीकान्तजू से नाम सनेह सम्बन्ध माँगना चाहिये।

सन्त सोहावन वाक् मनोहर शौक समेत सुनो मृद पाई।
साँची सुरीति सनेम हृदय दृढ़ धारना धारिये झूठ बिहाई।।
बाकीफकार मिले बिनु भेदको पाय सके नहि कोटि उपाई।
(श्री) युग्मअनन्य सियावर सो नित याँचिये नामसनेह सगाई।। १७९१

और दूसरा उपाय है सन्त– गुरु से नाम– प्रेम माँगना।

श्रीगुरुदेव दयाल दया दृग देखिहै मोहि कहूँ यहि भाँति।
आठहु याम सुनाम पियूष को पान करै मन माँझ सशांति।।
भूलिहैं भाव भदेश कुदेशहु हूलियै हाय न हीय बिजाती।
(श्री) युग्मअनन्य सुफूलिहै कामिल कंज कलंक बिहीन सकांती।।३

श्री आदि–रामायण में कहा गया है कि जब तक श्री नामानुरागी रामभक्त के सतत पाँव नहीं पलोटोगे, तब तक परात्पर नाम श्रीसीताराम में प्रीति होगी कैसे?

'यावन्न रामभक्तानां सततं पाद सेवनम्।
राम नाम्निपरं तावत् प्रीतिस्संजायते कथम्।।'

श्री बड़े महाराज ने स्वरचित सन्त–विनय शतक में सन्तों से नाम–प्रेम ही माँगा है। हम यहाँ उसमें से कतिपय दोहे वानगी रूप में नीचे उद्धृत करते हैं।

श्रीसतगुरु सिरताज पद, बन्दौ बारहि बार।
दीजे युगल अनन्य को, नाम नेह निज सार।।१।।
श्रीसिय श्रीरघुवीर के, प्रान पियारे वीर।
श्रीहनुमन्त दयाल ह्वै, दीजे नाम गम्भीर।।२।।
श्रीमुनिराज अगस्त जू, अति कृपाल गुन ऐन।
अगुनि समुझि मोहि दीजिये, नाम रमन दिन रैन।।३।।
श्रीनारद तारद विसद, सियपिय अस दातार।
युगलानन्य अजान को, दीजै नाम अधार।।४।।
वन्दौं सनकादिक चरन, हरन अमंगल मूल।
दीन खीन लखि दीजिये, नाम प्रेम अनुकूल।।५।।
श्रीमुनि सुभ लच्छन सहित, सरस सुतीछन पाय।
वंदि सदा जाँचौ इहै, नाम सनेह सुभाय।।६।।

श्रीवसिष्ठ महाराज गुरु,सुषद नमो सत बार।
दीजै दीनदयाल मोहि, नाम रटन एक तार।।७।।

इसी प्रकार भक्तमाल प्रसिद्ध सभी सन्तों से विनय–पूर्वक नामानुराग माँगा गया है। ग्रन्थ विस्तार–भय से हम पूरा ग्रन्थ यहाँ नहीं उतार रहे हैं। श्रीनामानुराग जगाने की एक और युक्ति श्रीपद्म–पुराग में भगवान् शंकर ने बतायी है– वह यह कि अन्य स्तम्भ में बताये गये संयम सदा बरतना चाहिये। संयम से श्री चिन्मय सीतारामनाम में अधिक प्रीति बढ़ती है।

'संयमं सर्वदा धार्य्यं नैव त्याज्यं कदाचन।
संयमान्नाम चिन्मात्रे प्रीति स्संजायतेऽधिका।'

भूलै ना भुखाने अपमाने राम रावरे कौं
अतिशै अघाने सनमानै प्रान भूलै ना।
फूलै ना कुवेली आस वाम मास मेली बास
फैले ना फलै ना दुख काम फल झूलै ना।।
झूलै ना झकोर हानि– लाभ के हिंडोर जीव
मोह की अतीव घोर जीति हारि हूलै ना।
हूलै ना हरामी हीय माँगौ सीय–पिय दीजै
रामनाम 'रसराम' बसु जाम भूलै ना।।
छूटै ना सुबास तीर नीर सरयू को पान
आन खान–पान विषै वसुजाम जूटै ना।
लूटै ना लवारी लोभ लालची प्रपंची रिपू
प्रेमिन सों प्रेम 'रसराम' राम टूटै ना।
टूटै ना सुताग अनुराग वरदान माँगौं
देह प्रान छूटै रट रामनाम छूटै ना।
नाम की सुननि दीजै नाम की गुननि दीजै
नाम की कहनि दीजै गहनि सुनाम की।
नाम की रहनि दीजै नाम की चहनि दीजै
नाम की लहनि दीजै छिति नाम धाम की।।
नाम की रटनि दीजै नाम की सटनि दीजै
प्रेम उघटनि दीजै रोम रोम ग्राम की।

दीजै सीताराम वर माँगै 'रसरंगमनी'
नख–सिख सुमिरनि नाम अभिराम की।।
जस देह दियो निज गेह दियो सरजु पुर सन्तन में वसना।
तस दीनदयाल सखा 'रसराम' निकाम अकाम करो कस ना।
सपने महँ चाटत वाम कुचाम बसो मन मीत करै अस ना।
वसुजाम सुजोस जगी उमगी अनुराग सों नाम रटै रसना।
नामहि की रट दीजिये राम मिटै मन काम डटै अनचाहिये।
नामहि सो नित योग औ क्षेम बढ़ै अति प्रेम पयोधि अथाहिये।।
नाम सो आस विश्वास 'मनी रस रंगहि' दै उर मोद उमाहिये।।
कै निज रूपमयी मति मोरि सदा निज नाम सो नेह निवाहिये।।
नाम सप्रेम जपों मुख सो सुखसो मन तासु स्वरूप बिसेखौं।
कानन सो बहिरो बनि बाहेर अंतर नाम सुनाद परेखौं।।
होहि विमोहमयी दृग दूरि चराचर पूरि तुम्हैं प्रभु देखौं।
रोमहिं रोम रमे सियराम 'मनीरसराम' स्वदेह में देखौं।।
रामहि को दास मैंहौ रामही की आस मोहि
राम दुखानास मम वास खास धाम हौं।
रामही की पूजा मेरे राम बिना दूजा नाहि
सीताराम शरण रहौं मैं आठौ जाम हौं।।
रामहि को ध्यान मेरे रामहि को ज्ञान 'रस–
रङ्ग' सखय अभिमान राम को गुलाम हौं।
रामपद ठाम मेरे रामही को काम मेरे
मांगौं सीतारामही सो रट राम राम हौं।।

श्री मिथिलाजी के नामजापक शिरोमणिपरमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज प्रभु से प्रार्थना करते हैं–

मन क्रम बचन विकार तजि, रटौ नाम सियराम।
अस वर दीजे स्वामि मम, प्रभु परिपूरन–काम।।
मन वच क्रम मोर अपराधा। क्षमा करहु प्रभु कृपा अगाधा।
बार बार पद वन्दौं स्वामी। द्रवो दीन पर लखि अनुगामी।
सीतारामनाम असनेहू। नाथ कृपा करि यह वर देहू।।
जन्म जन्म बाढ़ै दिन दूना। काल–कर्म बश होइ न ऊना।।
कवनिउँ योनि जन्म तहँ होई। नाम सनेह बढ़ै प्रभु सोई।
नाम रटनि छूटै नहि कबहूँ। कोटि विघ्न व्यापै जो तबहूँ।।
सीताराम रटौं नित स्वामी। यह वर देउ जानि अनुगामी।।

सीताराम सुनाम रट, सुख–सागर गुणधाम।
'प्रेमलता' कहँ देउ प्रभु, सतगुरु पूरण काम।।
बार बार चरननि सिर नावौं। सीताराम रटनि वर पावौं।।
नित नव बढैं नाम सन नेहू। कृपासिन्धु गुरू यह वर देहू।।
नाम रटे तें रीझहि नामी। नाम–रटनि दृढ़ दीजे स्वामी।।
नित नूजन नामामृत पीवों। मन वच कर्म आन नहिं छीवों।।
विषयभोग लखि रोग सम, साधन सुगति विहाइ।
प्रेमलता चाहै सदा, नाम रटनि अधिकाइ।।
संयम अरू दम नेम तितीक्षा भोगों से उपराम रहै।
शरधा वर विश्वास धारणा ध्यान सुदम्पति नाम रहै।।
भजन भावना युक्त हमेशे रहव सुमिथिला धाम रहै।
प्रेमलता पुनि–पुनि वर माँगै रटना सीताराम रहै।।
राजिव–लोचन राम–सुनाम की मैं बलि जाउँ हमेश हजारन।
जिनकी करुना तिल लेशहुँ पाय के मोद–प्रमोद चढ़यों चित वारन।।
भूल गई विष वासना वृन्द विलन्द अमन्द उमङ्ग अपारन।
युग्म अनन्य गह्यो मनमोहन पाहन कौन बटोरे अकारन।।

परम अगम जाहि बदत पुरान वेद
पायो सो अखोद सियवर धनु–धारियाँ
अगुन सगुन ब्रह्म दोउन के कारन सु
तारन अगाध भव–सागर अपारियाँ।।
राम ऐसो नाम जाको रमन सकल माहि
एकही अनादि नर रूप सब नारियाँ।
प्रेमलता नाम रटि प्रगट सो लखो राम
नाम महाराज की मैं जाउँ वलिहारियाँ।।

त्रिगुनमयी सब सृष्टि दृष्टि भीतर की खोलि निहारो।
सीता राम नाम गुन लीला धाम भिन्न निरधारो।।
इष्ट मिष्ट अखिलेष्ट प्रदायक नाम निरंकुश धारो।
युगलानन्यशरण नामहि पर सकल सम्पदा वारो।।
लोक शोक ओक कुल कतल करन हित जातवेग बीच वोध विरति विचारिये।
पारस परम पनपोषन प्रधान पक्ष स्वच्छता सदन श्रम शोषन निहारिये।
जाहिर जहान वेद विमल वयान मान मधुर महान रसखान धीर धारिये।
युगलअनन्य शरनेश सब देश परमेश अवधेश नाम पर आप वारिये।।

साधक खंड

✡ उत्तम नाम जापकों के लक्षण और रहनि ✡

नाम–जापकों की प्रीति–रीति ऐसा अगम अथाह है कि योगी भी उसे नहीं समझ पाते क्योंकि ज्ञान तथा योग मार्ग वालों के हृदय में अहं ब्रह्यास्मि की दुर्निवार अभिमान–दाह उनके विमल विवेक को दबाये रहती है। तब बेचारे भव–प्रवाह में बहे जाते हुए विषय–भोगी क्या समझेंगे? और साधनों में रचने–पचने वालों को तो पेट भरने की ही चिन्ता ब्याकुल किये रहती है। श्रीनाम महाराज का परत्व– सिन्धु अपरम्पार है। उसी भाँति श्रीनाम अपने जापक को बना देते हैं। स्वयं श्रीनाम–सरकार ही अपनी करुणा से जना दें, तो पता लगता है।

नामिन की रीति प्रीति अगम अथाह है।
जाने नहि योगी रोगी भोगी भववाह बहे
ज्ञानी ध्यानी हीय रहे अहंकार दाह है।
और जेते साधन करन वाले जीव तेते
पेट के भरन अर्थ रचे चित्त चाह है।।
पारावार अमित परत्व नाम महाराज
विधि हरि हर हू को अधिक अथाह है।
(श्री) युगल अनन्य करुना ही ते लखाय परे
नामिन की रीति प्रीति अगम अथाह है।। ९०२।।

नाम–जापक सन्त सिरताज होते हैं। वे भजन–शूर होते हैं। उनके मुख में नाम क्या हैं, मानो स्वामी की प्रभा ही वहाँ प्रगट है। मन में उमंग भरी है। नामानन्द के प्रभाव से मायाकृत मद, मोह, अभिमान, मोह–ममता आदिक मन के मैलों को परास्त किये रहते हैं। काम का मुख–भंजन करके दिन–रात सुख–शान्ति पूर्वक नामाभ्यास करते हुए त्रिगुणमयी माया की श्रृंगार को तोड़े रहते हैं। उनके मुख से नामोच्चारण उसी भाँति होता है, जैसे निषंग से वाणों की झड़ी लग जाय।

सन्त सिरताज सूर साहिब सुजान नूर
बदन विराजमान मानस उमङ्ग से।
माया मद मोह मान ममता मलीन मन
जीते रन मध्य अनयास नाम रंग से।।

रैन ऐन चैन चित्त मैन मुख मोड़ि तोड़ि
त्रिगुन तमाम तार प्रीति के प्रसंग में।
(श्री) युगल अनन्य रटे नाम अभिराम जस
चलत चलाक तीर तरल निषंग से।। ९१२।।

नाम–स्नेही को क्लेश कभी नहीं व्यापता। मोह से उत्पन्न विषय–वासना को त्यागे, सदा सतर्क रहते हैं कि कहीं आ न घुसे। नाम–जापक सन्त से तो उत्पात करने वाली माया डर के मारे स्वयं थरथर काँपती है। यह दशा नाम बिमुखियों को कैसे मुयस्सर हो? उन्हें तो मोहरूपी सुरा–पान करने वाला निन्दनीय मानना चाहिए।

नाम सनेह सज्यों जेहि अन्तर ताहि न होत कलेश कदापी।
आठहुँ याम रहे हुशियार विहाय विषय विष मोह मिलापी।।
सन्त सुजापक से पल ही पल माया महा उत्पातिनी काँपी।
युग्म अनन्य सुनाम रटे बिन है अति निंद्य मलीन सुरापी।। १३५०।।

नाम–जापकों का अथाह रहस्य सामान्य जीव क्या समझेंगे? उनकी जीभ से नामोच्चारण क्या होता है मानो प्रियतम श्रीराघवलालजू की प्रीति का सुधासार टपकता हो। नाम–जापकों के अनुभूत दिव्यानन्द का बखान करते, वेद की वाणी नेति कहकर मुग्ध हो जाती है। इससे आगे क्या पराकाष्ठा रह गई? शूरवीर को युद्ध में भिड़ते समय जो हर्षोत्साह होता है, उसे नामर्द क्या समझेंगे? उसी भाँति नाम विमुख नाम–जापक शूरों की उमङ्ग को क्या समझेगा? इसे नाम–जापक विवेकी ही जान पायेंगे, अपर जीव नहीं।

नामिन की रहस अथाह जाने जीव का?
पल पल बीच माने मोद मकरन्द सुख
स्रवत विचित्र सुधासार प्रीति पीव का।
वानी वेद नेति नित निजानन्द नामी जन
कहत हमेश आगे रहयो पुनि सींव का।।
शूरन को रन में भिरत जौन हर्ष होत
तौन तीन कालहूँ में पावत हैं क्लीव का
(श्री) युगल अनन्य बूझे विमल विवेकी सन्त
नामिन की रहस अथाह जाने जीव का।। १३६१।।

नाम–जापक की प्रमोन्मत्त दशा देखकर कोई तो इन्हें पागल समझता है। कोई इनकी विरह दशा को देखकर, इन्हें घायल मानता है। कोई इन्हें उमङ्गी उतावला मानता है। कोई ठग चोर कहता है, कोई धनवान् साहूकार का चोर मानता है। कोई पहचानने वाला लखता है कि ये तो अपने प्रियतम मुखचन्द्र के चकोर हैं? कोई इन्हें अज्ञानी, कोई ब्रह्मज्ञानी, कोई सर्वज्ञ, कोई कुजाति कोई कुलीन जानता है। किन्तु नाम–जापकों को असली स्नेह स्थिति को कोई विरले ही परख पाते हैं।

नाम नेह वानन की गति ऐसी जानवी।
कोऊ कहै बावरो, बखानै घावरो सो कोऊ
तावरो उतावरो बतावै मन मानवी।
कोउ ठग, चोर साहुकार धन जोर बदै
कोऊ मुखचन्द को चकोर पहिचानवी।।
कोउ कहे अज्ञ कोऊ तज्ञ सर्वज्ञ कोई
कहत कुजाति जाति उत्तम प्रमानवी।
श्री युगल अनन्य कोउ लखि न सकत तिन्हें
नाम नेह वानन की गति ऐसी जानवी।। १९७५।।

परमहंस श्रीसियालालशरण उपनाम श्रीप्रेमलताजी अपनी रहनि स्वयं कहते हैं। उन्हीं की विमल वाणी में नाम–जापकों की रहनि पढ़िये:–

आशक हैं सियराम नाम के सहर जनकपुर रहते हैं।
अकड़े रहें सदा सियवर बल, तीनि ताप नहि दहते हैं।।
रखते नहिं परवाह किसी की जगते कछू न चहते हैं।
सियलालशरन मस्तान हुये नहिं चाल दूसरी गहते हैं।।
मतलब सीताराम नाम से दुनियाँ से क्या करना है।
धर्ममूल सर्वोपरि सुखनिधि नाम सन्त श्रुति वरना है।।
सर्व दुराग्रह त्यागि दिवस निशि केवल सोई रटना है।
सियलालशरण गुरुदेव कृपाते भवनिधि पार उतरना है।।

श्रीजगन्नाथपुरी में महाप्रभु श्रीगोराङ्गदेव के पास प्रतिवर्ष बंगाल से अनेक भक्तजन आया करते थे। भक्तों ने श्री महाप्रभुजी से पूछा कि वैष्णव के क्या लक्षण हैं? प्रभु बोले– अष्ट प्रहर में जिसके मुख से एक बार भी भगवन्नाम सुनो, उसे वैष्णव जानो! दूसरे वर्ष भक्तजनों ने फिर वही प्रश्न किया कि– "वैष्णवके क्या लक्षण हैं? प्रभुने कहा– "जो आठो प्रहर निरन्तर तैल धारावत् श्रीभगवन्नाम जपे, उसे वैष्णव जानो।" तीसरे वर्ष भक्तों ने फिर वही प्रश्न किया–तब प्रभुने उत्तर दिया– कि "जिसके दर्शनमात्र से भगवन्नामका स्फुरण हो, उसे ही वैष्णव जानो।"

श्रीसियराम उपासक साँचे ते न किसी से डरते हैं।
रटै रटावहिं नाम याम वसु निज प्रभु धाम विचरते हैं।।
रँगे रहत सियराम रूप रंग चरण कुपंथ न धरते हैं।
प्रेमलता तजि आस त्रास सब महामोद मन भरते हैं।।

घोषहि नाम अनन्य भाव धरि बिलग बैठि वसुयामा है।
भूख–प्यास सहि रहि प्रमुदित नित निवसहि इष्ट सुधामा है।।
जगतें रहै उदास आस तजि रटहिं नाम 'निष्कामा है।
प्रेमलता अनयास जीविका पास न राखत दामा है।।
टोरि जगत सम्बन्ध शोकप्रद रसना नाम सुहावत है।
बैरिउ करत बड़ाई तिन्हिकी सबही के उर भावत है।।
नाम प्रसाद पाय प्रमुदित मन प्रेम पयोधि समावत है।।
प्रेमलता आसक मस्ताने निशिदिन मौज उड़ावत है।
असल उपासक आशक खासे सोइ जो नाम उचरते हैं।
त्यागि सकल परपंच जगत का गुरु–मूरति उर धरते हैं।।
थोड़े महै निर्वाह देह कर जेनकेन विधि करते हैं।
प्रेमलता अति अभय नामबल कालहु ते नहिं डरते हैं।।
वरषै नाम झमाझम मुख से हरषहि उर अति खुशियाली।
सर्वोपरि लखि नाम इष्ट निज भई बुद्धि वर मतवाली।।
श्री सियराम रटन बिनु जिन्हका रहत कभूँ नहि मुख खाली।
प्रेमलता सोइ परमहंस जग पीवत नाम सुधा प्याली।।
ठटा फकीर ठाठ सुउत्तम गुरु सन भावत जी का है।
निज पर रूप बोध विधि नीके नाश्यो संशय ही का है।
मुदित रहहि हर हाल सदा शुचि जग सुख लागत फीका है।।
रटहिं नाम सियराम सुखद जो शोषक मोह नदी का है।
परमारथी प्रपंच वियोगी मितभोगी दिन कटते हैं।
हटते जायँ विषय ते दिन प्रभु पदपंकज सटते हैं।।
भजन भावना पुष्ट रहैं अति बिलग सदा खटपट ते हैं।
प्रेमलता आशक सियवर के रटहिं नाम जे भट ते हैं।।
प्रीति न अधिक विरोध किसी ते जीते प्रभु पद भजते हैं।
हरषहि सुनि सुप्रशंसा परकी निज गुन सुनि गुनि लजते हैं।।
भजन प्रताप प्रभाव बढ़यो पै बने रहहिं लघु रजते हैं।
सेवत जिनके चरण सुश्रम बिनु उर गुन विमल उपजते हैं।।
रेक टेक दृढ़ वेष विरक्ती धारि नहीं फिरि तजते हैं।
गुरु निदेश धरि शीश ईशपद प्रीति सुनित नव सजते हैं।।
रटहिं खूब सियराम ऊब बिन सन्त समाज सुछजते हैं।
प्रेमलता तजि त्रिभुवन संपति दंपति गुनगन जजते हैं।।

तन दिशि ताकहिं तनक न प्रभुहित इन्द्रि आदि मन कस्ते हैं।
परम उपायशून्य शरणागत लिये रहहि अलमस्ते हैं।।
पिंजर भयों शरीर सूखि पै मुख सुप्रसन्न विलस्ते है।
प्रेमलता सियारामनाम रत संतत चलहि सुरस्ते हैं।।
काहुइ तें नहि कछू प्रयोजन सदा इकंत निवस्ते हैं।
नाम प्रताप कुटिल कामादिक गये निकसि नस–नसते है।।
कसी कठिन कटि कन्त मिलन हित भूलि न भोगनि फँसते हैं।
प्रेमलता तजि लोग सगाई प्रभुपथ चढ़े न सखते हैं।।
माँगि के खात इकंत रहैं मुख नाम रटैं नहि दूसर वैना।
कोमलगात कठोर कियो प्रन दम्पति रंग रंगे दोउ नैना।।
शीश पै टोप गले गुदरी कल चिंतहिं चारु चरित्र सुखैना।
प्रेमलता सुप्रसन्न अटै महि काहुते है कुछ लैन न दैना।।
श्री सियराम अनन्य उपासक ज्ञान बिचार विवेक के ऐना।
इष्ट स्वरूप लखै जड़ जंगम राग न रोष न दंभ न मैना।।
ठानि सुटेक न टारि सकै कोउ एकहि रंग रहै दिन रैना।
प्रेमलता सियाराम रटैं मुख काहू ते है कुछ लैन न दैना।।
नाम रटैं उठि भोरहि ते करि सोर, कठोर न, शीतल अङ्गा।
तीव्र विराग उदार अगेह सु भावत नीति सजातिनि संगा।।
आश न त्रास, हुलास नयो नित, बाढ़त, प्रेम, सुनेम अभँगा।
प्रेमलता मित भोजन सैन सुवैन रु नैन रंगे पिय रंगा।।
हास विलास उदास प्रपंच ते गदगद कंठ बहावत आँसू।
दाम न बाम न धाम न ग्राम सुकेवल नाम रटैं प्रति स्वाँसू।।
पाबहि शीथ सुसंतनि के शुचि सोच संकोच कियो सब नासू।
प्रेमलता उर इष्ट भरोस अनिष्ट तजै लखि ज्यों तृन घासू ।।
मतलब जिन्हें न दुनियाँ से कछू जाति जमाति निशानों से।
रंगे रहत सियारामनाम रंग विलग बैठि भवभानों से।।
बोले अटपट वैन चैनमय डोलें महि मस्तानों से।
सब ते ढंग निराला जिनका आला पद विज्ञानों से।।
निर्मल नाम नेह नूतन निज नेही सजे सजावै।
नाम मनोहर शब्द विशद बीना हरबखत बजावैं।।
नाह दरश उत्साह चाह चित चौगुन चटक छजावैं।
युगलानन्य निखिल नर से निर्वेद अखेद भजावैं।।

नाम मंत्र जस यंत्र–तंत्र सिरताज स्वतंत्र सम्हारे।
खाम खलक खाहिस खाकी नापाकी नजर निहारें।।
दाम चाम की सुरति सफा फन फानी दफा विचारें।
युगलानन्य सुनाम बसीकर नामी दृढ़ मत धारे।।
जैसे कृषीकार सुन्दर सुचि धान पाय सुख पावै।
तजे पयाल जाल अंतर गुनि तिमि सत नाम समावैं।।
पढ़ि सुनि निखिल ग्रन्थ अर्थन पुनि छोड़ि सुनाम लोभावै।
युगलानन्यशरन घृत गहि घट अलग किए हरषावै।।
समुझि कृतज्ञ सुगुन राखे रस चाखे नाम पियूषन को।
संतत संत सुसंग सजे तम तजे भजे कुल भूषन को।।
राग अराग पराग प्रलय करि नाषे नेह कुरुषन को।
युगलानन्शरन अन्तर उर सोभा नाम मयूषन को।।
पार भए पर नाव काम कहो कौन रहे दृग देखो।
निज मोकाम जब जाय मिल्यो पुनि पंथ गमन नहिं लेखो।।
भेट्यो सुजन सनेहवंत फिरि वृथा खोज अविशेषो।
युगलानन्य नामजपि के श्रम साधन निरस निरेखो।।
कस्तुरी सुचि सरस सुरभि गुलशन गुलाब जिन पाया है।
तिनको प्याज गाँठ लस्सुन दुर्ग कहो कब भाया है।।
शाहंशाह सलतनत हासिल हुये न भीख मँगाया है।
युगलानन्य नाम रस चाखत साधन सकल बिलाया है।।
खौफ किसीका झुके न हरगिज निसि दिन नाम सुरंगी।
काजी पंडित राजी निज घर रहे अचाह असंगी।।
मेहर मोबारक मुरशिद की एक खाहिस सहज सुचंगी।
युगलानन्यशरन लागरजी लरजी मिली–उमंगी।। – श्री नाम–क्रान्ति

नाम प्रमियों का सर्वस्व

श्री विन्दु जी कहते हैं–

न हमको धन से मतलब है, न हमको धाम से मतलब।
हमें तो सिर्फ है सरकार के बस नाम से मतलब।।

लेत आठोयाम ताप नासत तमाम देत

अन्त रामधाम साखी जमन हराम है।
पापी परिनाम लोक वेद में न ठाम
जपे 'मनिरसराम' भयो रामको गुलाम है।।
पूरक सुकाम कामतरु अभिराम
हरै क्रोध मद काम करैं मुदित अकाम है।
राम रवि धाम रोम रोम में मुकाम
प्रान–प्रान में ललाम जीव जीव रामनाम है।।
राजा मेरे राम सुखा साजा मेरे राम
सुभ काजा मेरे राम सो निवाजा मोसे छाम है।
इष्ट मेरे राम मन्त्रनिष्ठ मेरे राम औ
अनिष्ट हर राम सन्त सिष्ठ 'रसराम' है।।
ज्ञान मेरे राम रूप ध्यान मेरे राम
प्रिय प्रान मेरे राम सियजान जस धाम है।।
तात मेरे राम मंजू मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।
यश मेरे राम मन बश मेरे राम
कायाकस मेरे राम सुख शान्त 'रसराम' है।।
मान मेरे राम औ अमान मेरे राम
भगवान मेरे राम जीव जान प्रद काम है।।
योग मेरे राम दिव्य भोग मेरे राम
साँच सोग मेरे राम जो वियोग घड़ी जाम है।
तात मेरे राम मंजू मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।
जाग मेरे राम भूरि भाग मेरे राम
गीत राग मेरे राम अनुराग 'रसराम' है।
धीर मेरे राम बरवीर मेरे राम
हर पीर मेरे राम धनु तीन धर श्याम है।।
दानी मेरे राम सत्यवानी मेरे राम
सिया रानी रत राम सुख खानी शीलधाम है।
तात मेरे राम मंजु मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।

देह मेरे राम सुविदेह मेरे राम
गुन गेह मेरे राम प्रद नेह मेह श्याम हैं।
रंग मेरे राम भवभंग कारी राम
सुभ अङ्ग मेरे राम बसै संग बसु जाम हैं।।
स्वामी मेरे राम ब्रह्मनामी मेरे राम
हिय धामी मेरे राम सखा साँचे 'रसराम' हैं।
तात मेरे राम मंजु मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।

नामहि सेवा नामहि पूजा नाम महानिधि सिधि दाता।
नाम इष्ट गुरु सखा सहायक लायक नाम सुपितु माता।
नाम सुवन शुचि सुखद नामही युवती जन तन धन भ्राता।
प्रेमलता प्रिय नाम सुरक्षक भक्षक भव श्रम भ्रम ब्राता।।
नामहिं मात–पिता परिवार बिहार, बहार अगार हमारे।
राम सुसाज समाज सुधी सर्वस्व सुधानिधि नाम सुधारे।।
साधन सिद्ध सुमिद्ध सुखाकर नामहि दीनदयाल सम्हारे।
(श्री) युग्मअनन्य अजान सुजान सियावर नाम परेश बिचारे।। (६२९)

जीवन हमारो वर वरन विचित्र मित्र
तारापति अमित सुजोति या पै वारिये।
जैसे नीर जीवन है मीन को मनिन्द्र जैसे
जीवन फनिन्द्र ऐसे नाम ध्यान धारिये।।
जैसे चाह चातक सुघन स्वाति बूँद चारु
चमक चकोर चन्द प्रीति अनुसारिये।
श्रीयुगल अनन्य नाम नेह हीन सिद्धि फल
मुक्ति अभिलाष राख मानि दूरि डारिये।। (१३७२)

"श्रीरामनाम से ही जोइ होइ सोइ नीको लागे
ऐसोई सुभाव कछु तुलसी के मन को।"
चाहो कोउ निन्दो चाहो वन्दो मोद शोक नहिं
मन वच वपु मोहि लागो प्यारो नाम ही।
और न सोहात बात घात सम विषमहु
यामे काहू भाँति लेश होत न आराम ही।। (१३७३)

कथनी के कथे कहाँ पाइये परम धाम
जौ लौं नाम रटि नहिं पायो विश्राम ही।
युगल अनन्य मन्द मति सब भाँति तौन
जौन नाम कंज कर आये न विराम ही।। (१३७३)
रामनाम प्रान धन दौलत सु रामनाम
रामनाम कुलुक महान मसनद है।
रामनाम लोक परलोक रिद्धि सिद्धि सब
भगति मुकुति रामनाम अनहद है।।
रामनाम रौशन रहस्य रस रामनाम
रामनाम जीवन सुमूरि पर पद है।
युगल अनन्य रामनाम सरबस मम
तात मात भ्रात पति नातो अनवद है।। (२६४०)

❋ नाम–निष्ठा ❋

राम सुनाम बिना 'रसरङ्गमनी मुख जानि लजौ मैं लजौं रे।
चातक ज्यो धन, रंग भजै धन, त्यों प्रभुनाम भजौ मैं भजौं रे।।
काक कुसंगति छोडि सुसंगति हंस सुवेष सजौ मैं सजौं रे।
जानकिजीवन रामको नाम कभूँ न तजौ न तजौ न तजौं रे।।
नाम अभिराम चोट चित्त लागि जात जब
तब कछु बात ना सोहात जातपाँत है।।
बिरहा बेहाल लाल मिलन सुचाह छन
छन उमगात प्रीति पद परसात है।।
शिवशिव शेष हनुमत मन मंजु कंज
मकरंद मधुप वरन युग खयात है।
युगल अनन्य ताही संग अनुराग रचु
पचु जनि इत उत आयुष सिरात है।। (२६०८)

❋ वैराग्य ❋

जेन केन विधि रुखा सूखा माँगि उदर में भरना है।
सन्त सीथ पट फटे पुराने पाय मोद मन करना है।।
केहि लगि फिरैं याचते घर घर संपत्ति जोरि न धरना है।
सियालालशरण सियराम नामरटि आखिर इक दिन मरना है।
— श्रीहितोपदेश शतक।

धोखहि नाम अनन्य भाव धरि विलग बैठि वसुमाया है।
भूख–प्यास सहि रहि प्रमुदित नित निवसहि इष्ट सुधामा है॥
जगते रहे उदास आस तजि रटहि नाम निष्कामा है।
प्रेमलता अनयास जीविका पास न राखत दामा है॥३५॥ श्री हितोपदेश शतक

❋ धन्य कौन ❋

श्री पद्मपुराण में श्री व्यासदेव जी ने मुनियों से कहा है कि श्रीरघुवंश शिरोमणिजू को राम नाम में अनुरागोदय हो गया उसका भाग्य धन्यातिधन्य है।

'अहो भागमहो भाग्यमहो भाग्यं पुनः पुनः।
येषां श्रीमद्रघूत्तंस – नाम्नि सञ्जायते रतिः॥'

श्रीमार्कण्डेय पुराण में श्रीव्यासदेवजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि जिस बड़भागी को श्रीराम–नाम रूपी अमृत में रुचि हो गई, उसकी जीभ सुधामयी बन जाती है। वही धन्यातिधन्य है। वह सभी दोषों को भस्म करने वाला हो जाता है।

'जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः।
कृतकृत्यस्सएव स्यात् सर्बदोषैक दाहकः॥'

श्रीवृहन्नारदीय में कहा गया है कि श्रीराम–नाम के जापक कृतार्थ रूप हैं, सदा शुद्ध हैं, सर्व प्रकार से निर्विघ्न हैं। श्रीनाम के प्रभाव से अंत में परमधाम श्रीसाकेतपुरी को जायेंगे ही।

'ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधि विवर्जिताः।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परं पदम्॥

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीराम नाम जप में परायण श्रीनाम कीर्त्तन में तत्पर, श्रीनाम सरकार के पूजन, निष्ठ, जो–जो सज्जन हैं, वही कृतार्थ हैं। इसमें संशय नहीं।

'राम नाम परा ये य नामकीर्त्तन तत्पराः।
नाम्नः पूजा परा ये वै ते कृतार्थाः न संशयः॥'

श्रीशुक पुराण में कहा गया है कि जिनका मन श्रीराम नाम में लगा है, वे ही सबसे बड़े सौभाग्यशाली हैं। श्रीनामार्थ चिंतनपूर्वक नाम रटते हुये वे समस्त जगत को पावन करते हैं।

'अहो भाग्यतराः सर्वे नाम संलग्न मानसाः।
पावयन्ति जगत्सर्वं रामनामार्थ चिन्तनात्॥'

इतिहासोत्तम नामक आर्ष ग्रन्थ में श्रीभृगुजी का वचन है कि उत्तम कोटि के सन्तों ने सतत श्रीसीताराम नाम को कीर्त्तन करने वालों को ही परम सौभाग्यशाली कहा है।

'इदमेव परं भाग्यं प्रशस्यं सद्भिरुत्तमैः।
श्री सीताराम नाम्नस्तु सततं कीर्त्तनं मुने॥'

श्री लघु भागवत में भी श्रीव्यासदेवजी ने कहा है हे राजन्! मनष्यों में वही कृतार्थ, वही भाग्यवान् है, जो सदा भक्ति पूर्वक श्रीराम–नाम का स्वयं स्मरण करते हैं तथा औरों से भी स्मरण कराते।

ते कृर्तार्था: मनुष्येषु सुभाग्या: नृपनिश्चितम्।
रामनाम सदा भक्ता स्मरन्ति स्मारयन्ति ये।।

वहीं यह भी कहा गया है कि जो श्रीनामानन्य गायक प्रसन्न मन से श्रीराम–नाम का कीर्त्तन करते रहते है। वही परम पावन है; धन्य हैं तथा उन्हीं के भजन के प्रताप से पृथ्वी भी टिकी है।

'श्री रामेति मुदायुक्त: कीर्तयेद्यस्त्वनन्यधी:।
पावनेन च धन्येन तेनेयं पृथिवी धृता।।'

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीअर्जुन से कहा है कि जो प्रेममग्न भावुक श्रीरामनाम के समाश्रित हो चुके हैं, वे ही कृतार्थ रूप हैं, मैं सत्य सत्य कहता हूँ, अन्यथा नहीं मानना।

'राम नामाश्रया ये वै भावुका: प्रेम संप्लुता:।
ते कृतार्था सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।'

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम प्रभाव की कथा गाते हुए भूमि में विचरते रहते हैं, वे सत्पुरुष धन्य हैं और धन्यातिधन्य हैं वे जो श्रीनाम कथा में वर्णित परतत्व श्रीरामनाम के जप में निष्ठा रखते हुए भूमंडल को पावन करते हैं।

'तौ नामगाथा विचरन्ति भूमौ गीत्वा सदा ते पुरुषा: सुधन्या:।
ये नाम गाथा परतत्त्व निष्ठास्ते धन्य धन्या: भुवि कृत्यपुण्या:।।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में श्रीविश्वामित्रजी वैशें से कहते हैं कि कलियुग में वही धन्य है, पुण्यवान् है तथा शरणापन्न भी वही माना जायेगा, वहीं सौभाग्यशाली है जो योगादिक साधनों का भरोसा छोड़कर, एकमात्र श्रीरामनाम के जाप में दृढ़ता पूर्वक निष्ठा रखता है।

'धन्या: पुण्या: प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता: कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन् रामनामैक नैष्ठिका:।।'

श्रीसूत संहिता में कहा गया है कि श्रीराम, रामभद्र, सीताराम आदि सुखखन नामों को जो नित्य जपते हैं, वे ही धन्यातिधन्य मनुष्य हैं।

'श्रीराम रामभद्रं च सीतारामं सुखाकरम्।
इतीरयन्ति ये नित्य ते वै धन्यतमा नरा:।।

श्री वात्स्यायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम समस्त जगत के आधार हैं। अखंड सर्वेश्वर हैं। कलिकाल में जो इनका सादर जप करते हैं, वे ही धन्य हैं, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं भय नहीं है। विप्रवर! मैं आपसे सत्य कहता हूँ। मेरी बात को अन्यथा न मानियेगा।

'समस्तजगदाधारं सर्वेश्वरमखाण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित्।
सत्यं वदामि विप्रेन्द! नान्यथा वचनं मम।।'

श्रीअत्रि संहिता में श्रीशिवजी का आदेश है कि जप संख्या का नियम लेकर नामाभ्यास करना चाहिए। अन्त में कहते हैं कि हे पार्वती! कलिकाल में जिनका श्रीरामनाम जप का अखंड नियम निभ जाय उन्हीं का अहोभाग्य है।

'अहो भाग्यमहो भाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे।
येषां श्री रामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम।।'

श्री मार्कण्डेय पुराण में श्रीव्यासदेवजी ने सूतजी से कहा है कि जिस कुल में श्री रामनाम जप में तत्पर और नाम निर्वाह का दृढ़ संकल्प धारण करने वाला कुलतारण सपूत उत्पन्न होता है, वह कुल धन्य है। श्रीशेषजी स्वयं एक हजार जीभ से निरन्तर नाम जपते हैं। अतः श्रीरामनाम का वह जापक श्रीशेषजी का प्रेमपात्र भी बन जाता है।

धन्यं कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीरामतत्परः
जायते सत्यसंकल्पः पुत्रः श्रीशेषबल्लभः।।

श्रीदक्ष स्मृति में कहा गया है कि जहाँ श्रीरामनाम के पवित्र जापक उत्पन्न होते हैं। वह कुल धन्यातिधन्य है। उनके माता–पिता धन्य हैं।

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम्।
यत्र श्रीराम नाम्नस्तु जापको जायते शुचिः।।

श्रीधर्मराज स्मृति में स्वयं श्रीधर्मराज कहते हैं कि श्रीरामनाम जप में निष्ठावान् सज्जन जिस स्थल पर विराजमान होकर श्रीनाम जप करते हैं, वह देश धन्य हैं। साक्षात श्रीसाकेत धाम के समान ही वहाँ की महिमा हो जाती है।

सवै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधाम सन्निभः।
यत्र तिष्ठिन्ति श्रीराम नाम संलाप नैष्ठिकाः।।

श्रीबड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिकामें कहते हैं कि अनमोल श्रीरामनाम श्रेष्ठ पावन है। जापक को श्रीसाकेतधाम देने वाले हैं। इस जगतीतल में वही धन्यातिधन्य हैं जिनकी जीभ को तथा मनको श्रीरामनाम का अबलंब पकड़ा गया है। ऐसे श्रीरामनाम के जापक तीनों लोकों को तारने में समर्थ हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं श्रीरामनाम रस का पान करते करते मतवाले बन जाना चाहिए। विषय रस को छूना भी नहीं चाहिये। उसमें न स्वाद है न सुख।

शुद्ध शिरोमणि राम सुनाम अनाम सुधाम प्रदायक प्यारों।
ते धनधन्य सदा जगतीतल है जिनके जिय जीह अधारो।।
तारक तीन तिलोकन को सोई है सब भाँति नहीं शक धारो।
(श्री) युग्म अनन्य छकी रस पीवत छीवत स्वाद नहीं सुख खारो।। २६५।।

पुनः उसी ग्रन्थ में कहते हैं कि श्रीसीताकान्तजू के सीतारामनाम जिन जापक के हृदय में दिव्यानन्द प्रदान करते हैं, वह धन्याग्रगण्य हैं। उन्हीं को सब प्रकार से सुयोग्य भाविक तथा भाव स्नेही मानना चाहिए। उस समस्त सद्गुण सम्पन्न नाम–जापक की कीर्ति कोटि ब्रह्मण्डों में फैल जाती हैं। उन्हींको नित्य–निरन्तर श्रीराम–सरकार श्रेष्ठ प्राणाधार हैं। ये उमङ्ग–उत्साह पूर्वक नाम–साधना में तत्पर रहते हैं।

"धन्य धुरीन सुगन्य सदा सब लायक भाविक भाव सनेही।
कीरति कोटिन अंडन में तिनकी नित छाय रही गुन गेही।।
तेई निरन्तर प्रान अधार उदार उमङ्ग उछाह समेही।
(श्री) युग्म अनन्य सियावर नाम हृदै अभिराम प्रदायक जेही।।१९१८।।"
नामानन्य प्रपन्न धन्य सो ि जसकी गति मति ऐसी है।
बाँकी कहनि रहनि कसरत गुन गहनि चहनि निज जैसी है।।
प्रीति प्रनय परतीति एकरस श्री मजनू लैलै सी है।
युगलानन्य इश्क वालों की कीमत चाहिए जैसी है।। – श्रीनाम कान्ति

❋ नाम–निष्ठा में दृढ़ विश्वास आवश्यक है। ❋

बात पद्मपुराण की है–भगवान् श्रीवेदव्यासजी मुनियों के प्रति नाम उपदेश करते हुए, आदेश दे रहे हैं कि उत्तम साधक को अपने जाप्यनाम में दृढ़ विश्वास रखना चाहिये। विश्वासपूर्वक नाम जपने से भगवत्प्रेम–प्राप्ति सुनिश्चित हो जायेगी और उसे सिद्धि मिलेगी अविलम्ब। कोई संशय नहीं है इसमें।

"विश्वासः सुदृढ़ौ नाम्नि कर्त्तव्यः साधकोत्तमैः।
निश्चयेन परां सिद्धिः शीघ्रं प्राप्नोत्यसंशयम्।।"

श्रीनारद वचन–

'यस्य यावांश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती।'

जिन्हें जितना विश्वास उसी अनुपात में उन्हें सिद्धि मिलेगी। बिना विश्वास के, न तो कोई सिद्धि मिलेगी, न श्रीराम–भक्ति।

"कवनिहु सिद्धि कि बिनु विश्वासा।"
बिनु विश्वास भगति नहीं, तेहि बिनु द्रवहि न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहु, जीव न लह विश्राम।।

नाम विश्वास हमें श्रीशंकरजी से सीखना चाहिए।

"नाम प्रभाव जान सिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।"

श्री प्रह्लादजी भी हमें नाम–विश्वास में दृढ़ाने वाले हैं, अपनी नाम–निष्ठा से।

रामनाम जपतां कुतो भयं सर्व ताप शमनैक भेषजम्।
पश्य तात मम गात्र संगत: पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना।।

अर्थात् श्री प्रह्लादजी को अग्नि की प्रज्ज्वलित चिता में बैठा दिया गया है। पिता ने पूछा तुम्हें भय हो, तो हमारे शत्रुके नामोच्चारण छोड़ दो। अभी चितासे तुम्हें निकाले देता हूँ। श्रीप्रह्लादजी ने उत्तर दिया–पिताजी, श्रीरामनाम तो सभी तापों को तमटाने वाले हैं। इनके बलपर मुझे भय कहाँ? देखते नहीं, आपकी प्रज्ज्वलित आग मेरे अंगों में जलवत शीतल प्रतीत हो रही है।

श्रीगोस्वामीपाद विरचित श्रीविनय–पत्रिका का पद १५५ इस सम्बन्ध में विचारणीय है।

विश्वास एक रामनाम को।
मानत नहि परतीति अनत, ऐसोई सुभाउ मन वाम को।।
पढिवो परयो न छठी छमत, ऋग जजुर अर्थबन साम को।
व्रत तीरथ तप सुनि सहमत, पचि मरै करै तन छाम को?।।
करम जाल कलिकाल कठिन, आधीन सुसाधित दाम को।
ज्ञान विराग जोग जप को, भय लोभ मोह कोह काम को।।
सब दिन सब लायक भयो गायक रघुनायक गुन–ग्राम को।
बैठे नाम कामतरु तर डरु कौन घोर घन–घाम को।।
को जाने को जैहे जमपुर को सुरपुर परधाम को।
तुलसिहि बहुत भलो लागत जग–जीवन राम गुलाम को।।

अर्थात् श्रीगोस्वामीपाद कहते हैं कि ऐसे कर्म, उपासन, ज्ञान, योग आदि अनेकों वेदोक्त साधन परमार्थ साधन के हैं। सभी अपनी–अपनी जगह पर ठीक ही होंगे, परन्तु अपने–अपने हृदय की मान्यता ही तो ठहरी। मेरे को तो एकमात्र रामनाम ही में विश्वास है। हो क्यों नहीं? मेरा तो सारा बिगड़ा हुआ नाम जपही से बना है।

"हौं तो सदा खर को असवार, तिहारोइ नाम गयंद चढ़ायो।"

श्रीकवितावली ७ ।। ६०।।

आपने अपने इष्ट की शपथ खाकर उन्हीं से कहा है कि मुझे एकमात्र आपके नामही की गति हैं। जो आपके सामने झूठा कहेगा, वह तो तीनों कालों मे तीनों लोकों में भी झूठ ही समझा जायेगा।

"रावरी सपथ, रामनाम ही की गति मेरे
इहाँ झूठौ झूठौ सों तिलोक तिहूँ काल है।"

श्रीकवितावली ७६५ ।३।

पुन: आप अपनी विनय–पत्रिका के २२६वें पदमें कहते हैं कि यदि मैं कुछ भी दुराव रखकर कहता होऊँ, तो मेरी जीभ गलकर गिर जाय। मेरा अपना कल्याण तो एकमात्र श्रीरामनाम ही से हो सकता है।

संकर साखि जो राखि कहौ कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो राम–नामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।

मानत नहि परतीति ..... कहते हैं अन्यान्य साधन भी तो वेद ही ने बताये हैं। श्रीवेदवचन में विश्वास न रखना मन की विमुखता है। क्या करूँ, मनका कुछ ऐसा ही स्वभाव पड़ गया है।

रामही के नाम ते जो होइ सोइ नीको लागैं,
ऐसोई सुभाउ कछु तुलसी के मन को।

श्रीकवितावली ७ । ७७ ।

चारों वेद छवों शास्त्र का अध्ययनकर लेना द्विजातियों का परम कर्त्तव्य है। किन्तु विद्या–बोध भी तो भाग्याधीन ही है। अपने जन्म की छठवीं रात में विधाता ने मेरे ललाटमें वेदाध्ययन लिखाही नहीं और नहीं लिखा सो अच्छा ही किया।

नाम लिया तिन सब लिया चहूँ भेद के भेद।
नाम बिना नरके गये, पढ़ि पढ़ि चारिउ वेद।

व्रत, तीर्थ, तप आदि साधन भी ठीक ही होंगे, किन्तु अपने को तो "सुमिरत सुलभ सुखद सब कहूँ। लोक लाहु परलोक निवाहू।।" वाले साधन नाम–जापक अवलंब पकड़ा गया है। इसमें साधन श्रम तो है नहीं, फल अपरिमिति। तो अत्यन्त क्लिष्ट साधन, अल्पफल के लिए कौन करे? इन साधनों में शरीरको गलाना पड़ता है। लाभ भी केवल स्वर्गलोक के दिव्य–भोगोंकी प्राप्ति है, फिर तो चौरासी के चक्कर में पड़ना ही होगा।

वेदोक्त, यज्ञ, दानादि साधन कलिमल ग्रसित हृदय वाले जीव से पवित्रता–पूर्वक बन नहीं सकते। इसमें पर्याप्त द्रव्य की आवश्यकता है। शुद्ध जीविका के द्वारा ईमानदारी की कमाई कितने के पास है? यज्ञार्थ पवित्र घी आदि वस्तु कहाँ मिलेगी? अतः इनमें फलता नहीं मिलने को। मिले भी तो श्रीरामनाम–जप की अपेक्षा बहुतही नगण्य। रही ज्ञान, वैराग्य, योग, जप, तप की बात! सो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि षड् विकार कलियुगी जीवों को अपरिहार्य रूपसे जकड़े हुये है। इनके मारे उन साधनों में सफलता नहीं होने को। हो भी जाय तो नाम–जपके समान, अनायास परम फल उनसे मिलना सम्भव नहीं। एक बात ध्यान देने की है। नाम–जप के साथ इष्ट गुण–चिंतन से सद्यः परमानन्द सुलभ हो जाता है। श्रीमुख वचन है, पुरजनों के प्रति।

मम गुन–ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानइ, परानन्द सन्देह।।

इस संसार में श्रीरघुनाथजी के गुण–समूह को गाने वाले ही सब प्रकारके योग्य हैं। जो श्रीरामनामरूपी कल्पवृक्ष की शीतल सुखद छाया में बैठे हैं, उनहें घनघोर घटा के समान तमोमय अज्ञान, अथवा तेज धूप के समान विषय सेवन सम्भव घोर ताप का कौन भय है? अन्यान्य साधनों से पता नहीं, साधक नरक

जायेगा, या स्वर्ग, या परम धाम को। जब राजा नृग के समान दान यज्ञ में तत्पर धर्मात्मा गिरगिट बन गये। तप के द्वारा अजर अमर होने पर भी नमुचि फेन से मरा, तो इन साधनों का कौन भरोसा? श्रीरामनाम जप से मुझे भगवद्भक्ति प्राप्त हुई। श्रीराघवजू के भक्तों का जीवन मुझे (श्रीगोस्वामीजी को) बड़ा ही सुखदायक सिद्ध हुआ। श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन से कहते हैं कि नाम जापक श्रीरामनाम के प्रभाव से सिद्धशिरोमणि हो सकते हैं। विश्वासपूर्वक जपना चाहिए।

'रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धीश्वरोभवेत्।
विश्वासेनैवश्रीरामनाम जाप्सं सदाबुधै।:।।'

इस प्रकार विचार करने पर, श्रीनाम प्रभाव में दृढ़ विश्वास जमाये रखना नाम जापकों के लिए बड़ा ही आवश्यक है।

(जप, तप, भजन, पूजन तथा लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार के कार्यों में विश्वास ही प्रधान है। जिसे जिस पर जैसा विश्वास जम गया, उसे उसके द्वारा वैसा ही फल प्राप्त हो सकेगा। फल का प्रधान हेतु विश्वास ही है। विश्वास के सम्मुख कोई बात असम्भव नहीं। असम्भव तो अविश्वास का पर्यायवाची शब्द है। विश्वास के सामने सभी कुल सम्भव है। विश्वास के ही सहारे चरणामृत मान कर मीरा विष मान कर गयी, नामदेव ने पत्थर की मूर्तिको भोजन कराया, धन्ना भगतका बिना बोया ही खेत उपज आया, रैदासजी ने भगवान् की मूर्ति को सजीव करके दिखला दिया। ये सब भक्तों के दृढ़ विश्वास के ही चमत्कार हैं। जिनकी भगवन्नाम पर दृढ़ निष्ठा है, उन्हें भारी से भारी विपत्ति भी साधारण सी घटना ही मालूम पड़ने लगती है। वे भयंकर से भयंकर विपत्ति में भी विश्वास से विचलित नहीं होते। ध्रुव तथा प्रह्लाद के लोक प्रसिद्ध चरित्र इसके प्रमाण हैं, ये चरित्र तो बहुत प्राचीन हैं, कुछ लोग इसमें अर्थवाद का भी आरोप करते हैं, किन्तु महात्मा (श्रीचैतन्य महाप्रभु अनुयायी यवन) हरिदासजी की नामनिष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण तो अभी कल ही परसों की बात है..... बिना भगवन्नाम में दृढ़ निष्ठा हुये क्या कोई इस प्रकार अपने निश्चय पर अटल भाव से अड़ा रह सकता है? कभी नहीं, जब तक हृदय में दृढ़ विश्वास जन्य भारी बल न हो, तब तक ऐसी दृढ़ता सम्भव ही नहीं हो सकती।) श्रीचैतन्यचरितावली, खण्ड २, के श्रीहरिदासजी की नाम निष्ठा प्रसंग से साभार उद्धृत। श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि एक मात्र श्रीसीतारामनाम की शक्ति सामर्थ्य का ही निरन्तर मनन करना चाहिये तथा इन्हीं का यशोगान करना चाहिये। अपने मनको तथा और लोगों को भी यहीं सिखावें, समुझावें और साधनों के प्रति विश्वास को दुःख दोषपूर्ण समझकर हटा देना चाहिये, श्रीनाम में विश्वास सजकर भवभीर से मुक्त हो जाता है। मलिन–वासना तथा बड़े पापों में फँसने नहीं पावे, सावधान रहना चाहिये। श्रीनाम के महत्त्व परत्व के ज्ञानार्जन में लगे रहना चाहिये। चाहे दूसरा श्रीनामके प्रतिकूल कितना भी तर्क–वितर्क करके हमें समझावें, हमें अपनी नामनिष्ठा में अडिग रहना है।

❋ श्रद्धाहीन नाम—जप ❋

'नाम ही को बल व्यवधान विन गावो ध्याओ
लेखन बताओ सिखलावो चित्त चारु को।
और विश्वास बहवावो दुख दोष जानि
मानि के प्रतीति दै उतार भव भारु को।
वासना मलिन पाप पीन में न फँसो गसो
रसो बसो नाम ज्ञान ग्राम बीच हारू को।
(श्री) युगल अनन्य चाहे कोऊ बके झके तऊ
उर में न भूलि अकुलाइये विचारु को।।

कुछ लोगों की यह शंका है कि आजकल नाम लेने वाले तो बहुत लोग देखे जाते हैं, परन्तु उनकी दशादेखते हैं तो मालूम होता है कि उनको कोई लाभ नहीं हुआ! जिस नाम के एक बार मात्र—उच्चारण करने से सम्पूर्ण पापों का नाश होना बताया जाता है, उस नाम के लाखोंवार आवृत्ति करने पर भी लोग पापों में प्रवृत्त और दु:खी देखे जाते हैं। इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में पहली बात तो यह है कि लाखोंवार नामकी आवृत्ति उनके द्वारा होती नहीं, धोखे से समझ ली जाती है। दूसरा कारण यह है कि नाम में श्रद्धा नहीं है। नाम के इस माहात्म्य में उन्हें स्वयं ही संशय है। भगवान् ने गीता में कहा है "संशयात्मा विनश्यति"। इसीलिये उन्हें पूरा लाभ नहीं होता। भजन में श्रद्धाही फल—सिद्धिका मुख्य साधन है। अवश्य ही भजन करने वाले में श्रद्धा का कुछ अंश तो रहता ही है। यदि श्रद्धा का सर्वथा अभाव हो तो भजन में प्रवृत्ति ही नहीं हो। बिना किंचित् श्रद्धा हुए किसी कार्य विशेष में प्रवृत्त होना बड़ा कठिन है, अतएव जो नाम ग्रहण करते हैं, उनमें श्रद्धा का जरासा अंश तो अवश्य है, परन्तु श्रद्धा के उस क्षुद्र अंशकी अपेक्षा संशय की मात्रा अधिक है। इसीलिये उन्हें वास्तविक फलसे वंचित रहना पड़ता है। गंगा—स्नान में पापों का अशेष नाश होना बतलाया गया है, परन्तु नित्य गंगा स्नान करनेवाले लोग भी पाप में प्रवृत्त होते देखे जाते हैं (यद्यपि एकबार भी रामनाम का उच्चारण हजारों—वार के गंगा—स्नान से बढ़कर है।)

❋ श्रद्धा पर एक दृष्टान्त ❋

एक समय शिवजी महाराज पार्वती के साथ हरिद्वार में घूम रहे थे। पार्वती ने देखा कि सहस्रोंमनुष्य गंगा में नहा—नहाकर हर—हर करते चले जा रहे हैं। परन्तु प्राय: सभी दु:खी और पाप—परायण हैं। पार्वती ने बड़े आश्चर्य के साथ शिवजी से पूछा कि 'हे देवाधिदेव! गंगा में इतने बार स्नान करने पर भी इनके पाप और दु:खों का नाश क्यों नहीं हुआ? क्या गंगा में सामर्थ्य नहीं रही? शिवजीने कहा—प्रिये! गंगा में तो वही सामर्थ्य है, परन्तु इन लोगों ने पापनाशिनी गंगा में स्नान ही नहीं किया है, तब इन्हे लाभ कैसे हो? पर्वती ने साश्चर्य कहा कि 'स्नान कैसे नहीं किया? सभी तो नहा—नहाकर आ रहे हैं? अभी तक इनके शरीर भी नहीं सूखे हैं।' शिवजी ने कहा 'ये केवल जल में डुबकी लगाकर आ रहे हैं। तुम्हें कल इसका

रहस्य समझाऊँगा। दूसरे दिन बड़े जोर की बरसात होने लगी। गलियाँ कीचड़ से भर गईं। एक चौड़े रास्ते में एक गहरा गड्ढा था, चारों ओर लपटीला कीचड़ भर रहा था। शिवजी ने लीला से ही कुछ अपंगका भेष धारण कर लिया और दीन विवश की तरह गड्ढे में जाकर ऐसे पड़ गये जैसे कोई मनुष्य चलता चलता गड्ढे में गिर पड़ा हो और निकलने की चेष्टा करने पर भी न निकल सकता हो। पार्वतीजी को यह समझाकर गड्ढे के पास बैठा दिया कि देखो! 'तुम, लोगों को सुना सुनाकर यों पुकारती रहो कि मेरे वृद्ध अपंग पति अकस्मात् गड्ढे में गिर पड़े हैं, कोई पुण्यात्मा इन्हें निकालकर इनके प्राण बचाइये और मुझ असहाय की सहायता कीजिए। शिवजी ने यह और समझा दिया कि जब कोई गड्ढे में से मुझे निकालने को तैयार हो तब इतना और कह देना 'कि भाई मेरे पति सर्वथा निष्पाप हैं, इन्हें वहीं छूये जो स्वयं निष्पाप हो, यदि आप निष्पाप हैं तो इनके शरीर में हाथ लगाइये नहीं तो हाथ लगाते ही आप भस्म हो जायेंगे।' पार्वती तथास्तु कहकर गड्ढे के किनारे पर बैठ गयी और आने जाने वालों को सुना–सुनाकर शिवजी की सिखायी हुई बात कहने लगी। गंगा में नहाकर लोगों के दल के दल आ रहे हैं। सुंदर युवतीको यों बैठी देखकर कइयोंके मनमें पापआया, कई लोकलज्जा से डरे, तो कइयों को कुछ धर्म का भय हुआ, कई कानूनसे डरे। कुछ लोगों ने तो पार्वती को यह सुना भी दिया कि, मरने दे बुड्ढे को! क्यों उसके लिए रोती है? आगे और भी कहा, मर्यादा भंग होने के भय से वे शब्द लिखे नहीं जाते। कुछ दयालु चरित्र पुरुष थे। उन्होंने करुणावश हो युवती के पतिको निकालना चाहा परन्तु पार्वती के वचन सुनकर वे भी रुक गये। उन्होंने सोचा कि हम गंगा में नहाकर आये हैं तो क्या हुआ! पापी तो हैं ही, कहीं होम करते हाथ न जल जाय। बुड्ढे को निकालने जाकर इस स्त्री के कथनानुसार हम स्वयं भस्म हो जायँ। सुतरां किसी का साहस नहीं हुआ। सैकड़ों आये, सैकड़ोंने ने पूछा और चले गये, सन्ध्या हो चली, शिवजी ने कहा–पार्वती! देखा, आया कोई गंगा में नहाने वाला? थोड़ी देर बाद एक जवान हाथ में लोटा लिये हर हर करता हुआ निकला, पार्वती ने उससे भी वही बात कही। युवक का हृदय करुणा से भर आया। उसने शिवजी को निकालने की तैयारी की। पार्वती ने रोकर कहा कि 'भई! यदि तुम सर्वथा निष्पाप नहीं होओगे तो मेरे पति को छूते ही जल जाओगे।' उसने उसी क्षण बिना किसी संकोच में दृढ़ निश्चय के साथ पार्वती से कहा कि, 'माता! मेरे निष्पाप होने में तुझे संदेह क्यों होता है? देखती नहीं। मैं अभ्भी गंगा नहाकर आया हूँ। भला गंगा में गोता लगाने के बाद भी कभी पाप रहते हैं? मैं अभी तेरे पति को निकालता हूँ। युवक ने लपककर बुड्ऐ को ऊपर उठा लिया।' शिव पार्वती ने अधिकारी समझकर अपना असली स्वरूप प्रगट कर उसे दर्शन देकर कृतार्थ किया! इसी दृष्टांत ने पार्वतीजी से कहा कि इतने लोगों में से एक ने ही वास्तव में गंगा स्नान किया है? इसी दृष्टांत के अनुसार जो लोग बिना श्रद्धा और विश्वास से केवल दंभ के लिए नाम ग्रहण करते हैं, उन्हें वास्तविक फल नहीं मिलता। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि नाम ग्रहण व्यर्थ जाता है। नामका फल तो अवश्य होता है, परन्तु जैसा चाहिये, वैसा नहीं होता।

श्री रामनाम का अनन्य भरोसा

पिछले प्रसंगों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कलि में श्रीनाम के अतिरिक्त अन्य सभी साधन निष्फल बन गये हैं। अत: सभी अन्यान्य साधनों से मुख मोड़कर, एक मात्र नाप जप में तत्पर हो जाना चाहिए। अपने लोक परलोक को सुखमय बनाने के लिए एकमात्र श्रीरामनाम जप पर ही निर्भर करना चाहिये। इस सम्बन्ध में श्रुति पुराण तथा श्रीगोस्वामीजी के अनेक वचन प्रमाणभूत है।

श्रीविनय पत्रिका पद संख्या ६५, इस सम्बन्ध में विशेष रूप से मननीय हैं। वैखरी, उपांशु, मध्यमा, परा; पश्यन्ती आदि वाणियों को एकमात्र नाम में ही लगाना चाहिये। बैखरी से तो नाम रटना चाहिये, उपांशु से जपना चाहिये एवं परा पश्यन्तीसे श्रीरामनाम में रमण करते रहना योग्य है। जैसे पपीहा स्वाती जलद का अनन्य प्रेमी होता है, वहीं अन्यत्र वृत्ति नाम जापक को श्रीरामनाम जप में धारण करनी चाहिए। पपीहा, कूप, नदी, तालाब से लेकर समुद्र तक के जल की भी उपेक्षा कर देता है, वह प्यास के मारे भले मर जाय, किन्तु इन उपर्युक्त जलाशयों के जल को तो छुयेगा भी नहीं। उसी प्रकार, अन्य सभी साधनों की उपेक्षा कर; नाम जापक को एकमात्र श्रीरामनाम की जप् में ही अनन्य अनुराग करना चाहिये। नाम के द्वारा कण मात्र सुख स्वाद में अपार तृप्ति माननी चाहिये। चातक की प्रीति परीक्षा के लिए स्वाती का बादल गर्जन, तर्जन पूर्वक उसे फटकारता है। ओले पत्थरों की वर्षा से उसके पंख चूर–चूर कर डालता है, फिर भी पपीहे की अधिकाधिक प्रीति उसी निष्ठुर स्वाती जलद के दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। हो सकता है श्रीनाम सरकार संसार की आसक्ति तोड़ाने के निमित्त धन, जन, स्वास्थ्य की हानि विघटित कर देवें, फिर भी जापक वही सराहनीय होगा, जो इन प्रेम परीक्षा में खरा उतरने के लिए उनमें और भी उत्तरोत्तर प्रेम परिवर्द्धन करता जाय। इसी में प्रेम पराकाष्ठा का निर्वाह है। जिन्हें श्रीरामनाम ही का बल भरोसा है, अपनी बुद्धि के द्वारा नाम ही में विश्वास जमाये हुये हैं, और प्रेमपूर्वक नाम ही रटते रहते हैं, ऐसे ही जापक तीनों लोकों में तीनों कालों में सबसे बड़े भाग्यवान् माने जायेंगे। यह अनन्य नाम निष्ठा का मार्ग एकांगी होता है, इस पर चलकर, अंत तक निर्वाह करना विरले ही भजन–वीर से बनता है। इस एकांगी मार्ग पर चलने वाले मान बड़ाई रूपी छाया में क्षण–क्षण रुके नहीं। निर्विघ्न नामानुराग निवाहने ही में अपना सब प्रकार से हित मानना चाहिए। मूल पद इस प्रकार पठित है:–

'राम राम रमु, राम राम रटु राम राम जपु जीहा।
रामनाम नवनेह मेहको, मन! हठि होहि पपीहा।।
सब साधन फल कूप–सरित–सर–सागर–सलिल–निरासा।
रामनाम रति स्वाति सुधा सुभ सीकर प्रेम पियासा।।
गरजि तरजि पाषान वरषि पवि प्रीति परखि जिय जानै।
अधिक–अधिक अनुराग उमँग उर पर परिमिति पहिचानै।।

रामनाम गति, रामनाम मति, राम नाम अनुरागी।
ह्वै गये, हैं, जै होहिगे, तेइ त्रिभुवन गनियत बड़भागी।।
एक अङ्ग मग अगमु गवन कर विलमु न छिन छिन छाँहै।।
तुलसी हित अपनो अपनी दिसि निरुपधि नेम निबाहे।

श्रीगोस्वामिपाद के और भी पदों में अनन्य भरोसा पर अधिक जोर दिया गया है। आगे हम उन्हें भी उद्धृत करेंगे।

नाहिन आवत आन भरोसो।
यहि कलिकाल सकल साधन तरु है स्रम फलनि फरोसो।
तप, तीरथ, उपवास, दान मख, जेहि जो रचै करो सो।।
पायेहि पै जानिवो करम–फल, भरि भरि बेद परोसो।
आगम विधि जप जाग करत नर, सरत न काज खरोसो।।
सुख सपनेहु न जोग सिधि साधन रोग वियोग धरोसो।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह मिलि ग्यान विराग हरोसो।।
विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो।
बहुमत मुनि बहु पंथ पुराननि जहाँ तहाँ झगरोसो।।
गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहि लगत राज डगरोसो।
तुलसी बिनु परतीति–प्रीति फिरि फिरि पचि मरै मरोसो।।
राम नाम वोहित भव सागर चाहै तरन तरोसो।। १७३।।

अर्थात् श्रीरामनाम के अतिरिक्त मुझे कर्म, ज्ञान, योग, उपासन जप तप तीर्थ वृत आदि किसी भी साधन में भरोसा नहीं है कि इस घोर कलियुग में ये हमारा कल्याण कर सकेंगे। इसका कारण है कि इन साधनों का स्वरूप तो किसी प्रकार बन जाता है, पर इनमें फलोदय नहीं होता, मानों साधन वृक्ष हो और उसमें फल के बदले केवल परिश्रम ही परिश्रम हाथ लगे।

तप, तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ आदि साधनों में हमारी (गोस्वामीजी को) प्रवृत्ति नहीं है, परन्तु हम किसी को मना नहीं करते। जिनकी रुचि हो इन कर्मों में, वे मनमाना करें तो सही। परनन्तु जब परलोक में जाकर, इनके फल मिलने लगेंगे तो पता लगेगा। अर्थात् जिस उद्देश्य से ये कर्म किये गये थे, उसकी पूर्ति न होगी, तब कर्मकांडियों को हाथ मल–मलकर पछताना पड़ेगा। वेद लुभावनी फलश्रुति कहकर, मानो कर्मफल का पत्तल परोस रहे हैं, किन्तु है यह कलियुग। इस विकारों के मन में भरने वाले युग में, कोई भी अल्प शपक्ति वाले साधन, सफल नहीं होने पाते। इस युग में श्रीरामनाम ही परम समर्थ नृसिंह भगवान् हैं, कलिरूपी हिरण्यकश्यप के उदर विदारकर नामक जापक रूपी प्रह्लाद की रक्षा करने वाले।

राम नाम नरकेसरी, कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहि दलि सुरसाल।।

यदि कलि कालनेमि के समान कपट करने में प्रवीण है, तो श्रीरामनाम श्रीमहावीरजी के समान उसके कपट परखने में बुद्धिमान और पछाड़ने में समर्थ हैं।

'काल नेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू'।।

इस युग में वेदोक्त विधि से भी लोग नाना सिद्धि दायक मन्त्रों का जप करते हैं, यज्ञ करते हैं, किन्तु उनसे इष्टफल की सिद्धि नहीं होगी, कारण कि कलिमल ग्रसित साधकों में उनके साधनोचित भीतर–बाहर की पवित्रता एवं पात्रता नहीं होती। उपयोगी सामग्री भी अशुद्ध ही प्राप्त होती है। अत: वेदों का कोई दोष नहीं है। वे साधन अन्य युग में सफल होते होंगे, इस विकारी युग में सफलहोने को नहीं।

योग सिद्धि करना चाहो, तो उसकी साधना में न सुख मिलेगा, न फलोदय काल में। हठयोग का फल स्वास्थ्य की हानि, संसार के लिए उपयोगी न होने से प्रियजनों का वियोग।

रही ज्ञान वैराग्य की बात। सो ज्ञान के शत्रु, अज्ञान, मोह, लोभ, अहंकार, इन्हें सफल नहीं होने देते।

तम मोह लोभ अहंकारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा।। १२५।।

गृहस्थाश्रम में विषय भोग करके, वानप्रस्थ आश्रम में भोगों के त्याग का अभ्यास किया जाता है। कलियुगी जीवों से तो विषय स्पृहा छूटने से रही। इस युग में एक–व–एक संन्यास वेश ऊपर से सज लेते हैं। विषय वासना तो छूटती नहीं। मन मिट्टी के कच्चे घड़े के समान अपरिपक्व होता है। उसमें संन्यास रूपी जल डालो, तो कच्चे घड़े तुल्य मन और भी बिगड़ जायेगा। मतलब समाज के प्रतिबन्ध से हीन होने पर, खुल्लम–खुल्ला भोगासक्त हो जायेंगे।

मुनियों के शास्त्र कथित सिद्धान्तों में परस्पर मतभेद देखने में आता है जो जिस साधन से सिद्ध हुये हैं, उसकी प्रशंसा करेंगे, अन्य साधनों में त्रुटि बतावेंगे। वही बात पुराणों की भी है, इनमें नाना मतों का कथन हुआ है। अत: ठौर–ठौर पर विचार वैभिन्य देखने में आता है। अत: इन सद्ग्रन्थों के वाद–विवाद में कौन उलझकर, अपने अमूल्य मानव–जीवन के अधिक अंश को गँवावे? हमारे गुरुदेवजू ने हमें श्रीराम भजन में सीतारामनाम रटन की ही प्रधानता बतायी है। मुझे यह भजन मार्ग बहुत रुचा। लगा कि हमें राजमार्ग ही मिल गया। न कहीं ठोकर, न कहीं नींचा–ऊँचा। आँख मूँदकर सरपट दौड़े चलो। गिरने फिसलने का भय नहीं। एक बात और, राजमार्ग पर राजा की ओर से चोर डाकुओं से बचाने के लिये रक्षक भी नियुक्त रहते हैं, उसी भाँति श्रीराम भजन में 'करौ सदा तिनकी रखवारी' करने वाले स्वयं सर्व समर्थ प्रभु ही रक्षक हैं।

जिन्हें श्रीरामनाम में विश्वास नहीं हो, श्रीनाम के प्रति अनुराग नहीं हो, ये नाना साधनों में रचते पचते हुए, अपने देव दुर्लभ मानव जन्म को व्यर्थ खो डाले। श्रीरामनाम तो भव संतरण के लिए सुदृढ़ जहाज है। जिन्हें संसार सगार से, जन्ममरण के चक्कर से बचना हो, वे श्रीरामनाम रूपी जहाज पर बैठकर पार उतर जायँ।

पुनः श्रीविनयजी की पद संख्या २२६ भी नाम भरोसा सम्बन्ध में मननीय है।

भरोसा जाहि दूसरो सो करो।
मोको तो राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान फरो।
करम, उपासन, ग्यान, वेदमत, सो सब भाँति खरो।
मोहि तो 'सावन के अंधहि' ज्यों सूझत रंग हरो।।
चाटत रह्यो स्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो।
सो हौं सुमिरत नाम–सुधा–रस पेखत परुधि धरो।।
स्वारथ औ परमारथ हूँ को नहिं कुंजरो नरो।
सुनियत सेतु पयोधि पषाननि' करि कपि–कटक तरो।।
प्रीति–प्रतीति जहाँ जाकी, तहँ ताको काज सरो।
मेरे तो माय बाप दोउ आखर, हौं सिसु–अरनि अरो।।
संकर साखि जो राखि कहैं कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो रामनामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।

उपर्युक्त पद में श्रीगोस्वामिपाद स्वानुभूत नाम जप का सुख स्वाद बताते हैं। जिसे श्रीनाम से भिन्न अन्यान्य साधनों का भरोसा हो उसे हम रोकने नहीं जाते। वह अपना मनोनीत साधन करता रहे। किन्तु जहाँ तक मेरी बात है, मेरे लिये श्रीरामनाम कल्पवृक्ष बनकर सब सुख दे रहे हैं। इस कलियुग में कल्याण साधन दुर्लभ हो रहा है। सो मेरे लिये नाम कामतरु कल्याण के सुस्वाद फल फल रहे हैं।

कर्मकांड, उपासना, ज्ञानकांड सभी वेद सम्मत हैं। सभी अपनी–अपनी जगह पर सही हैं, परन्तु मेरी आँखों में तो श्रीरामनाम ही का प्रभाव जमा है। श्रावण की हरियाली देखकर, कोई अन्धा हो जाय, तो उसे भविष्य के सभी दिन हरे ही हरे समझ में आते रहेंगे। यही बात मेरी भी है। श्रीनाम प्रभाव देखकर, अन्य साधनों के फलस्वरूप देखने की दृष्टि ही मेरी समाप्त हो गयी है। बचपन में मैं श्रीनाम के प्रभाव को नहीं जानता था, जपता कैसे? उन श्रीराम विमुख दिनों में मैं भूखों मारा–मारा फिरता था। कुत्ते की भाँति जूठन पत्तलों में लगे अन्य के दाने चाटते–चाटते भी मेरी भूख नहीं शांत होती थी। अब जब मैं जपने लगा हूँ, तो मेरे लिये नित्य नाना स्वादिष्ट भगवत्प्रसादों की थाल सजी सजाई सुलभ हो गयी है। श्रीयुधिष्ठिर ने अपने जीवन में केवल एक बार संदिग्ध वचन के द्वारा झूठ कहा था।

'अश्वत्थामा हतो नरोवा कुञ्जरो वा'।

गुरुवर श्रीद्रोणाचार्यजी, अश्वत्थामा तो मारा गया, मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि अश्वत्थामा नामक हाथी मरा कि मनुष्य? तब से संदिग्ध वचनों के लिए नर व कुंजर लोकोक्ति बन गयी। अर्थात् स्वार्थ सिद्ध करना चाहो, या परमार्थ, निस्सन्देह दोनों श्रीरामनाम जप से बनेंगे। सुना जाता है कि लंका यात्रा के लिए जो सेतु बाँधा गया था, उसमें श्रीनाम ही के प्रभाव से पत्थर जल पर तैरने लगे थे तथा आपस में

साधन हितकर है। मेरे लिये श्रीरामनाम के दोनों अक्षर रकार और मकार पिता–माता के समान भरण–पोषण करने वाले सिद्ध हुए हैं। बच्चे अपनी मुँहमांगी वस्तु के लिए माता–पिता से मचल जाते हैं, और अपना अभीष्ट लेकर ही, हठ छोड़ते हैं, उसी प्रकार मैं अपनी प्रयोजनीय सारी वस्तुएँ श्रीनाम सरकार से ही मचल–मचल कर लेता रहता हूँ। मैं मन में कुछ और आस्था रखकर केवल मुँह से ही श्रीनाम की बड़ाई करता होऊँ तो मेरी जीभ गलकर गिर जाय। भगवान् शंकर को साक्षी देकर, कसम खाता हूँ। मुझे अपना कल्याण तो श्रीरामनाम ही से सिद्ध होता हुआ दीखता है।

श्रीविनय पद ६६/५ में गोस्वामीजी कहते हैं श्रीरामनाम जप ऐसे आशुफलद है कि मानों फल परोस कर आगे में रखा हुआ थाल के समान है। खाते जाओ, तुष्ट पुष्ट होते रहो और साधनों का फल मनों रोटी के टुकड़ों के समान अतृप्तिकर है। सो भी देवताओं से माँगो तब पावो।

राम नाम छोड़ि जो भरोसो करै और रे।
तुलसी परोसो त्यागि माँगे कूर कौर रे।।

श्रीमानसजी में भी आपने ठौर–ठौर पर कहा है–

सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि।।
सो भव तर कुछ संशय नाही। नाम प्रताप प्रकट कलि माहीं।।

हमारे प्राचीन आर्षग्रन्थ श्रीनाम के अनन्य भरोसा दृढ़ाने के आप्त वचन कहते आये हैं।

श्री देवीभागवत का वचन है। हम लोगोंने तो गर्भ में नारकीय यातना भोगने पर, गर्भोदक शायी अपने इष्टदेव से, रक्षा की प्रार्थना की थी, और उनसे कौल करार किया था कि हे करुणानिधान इस बार मुझे इस दारुण कष्ट से उबार लें। अब गर्भ से निकलने पर मैं सतत् आदरपूर्वक आपका नाम कीर्त्तन करता रहूँगा। नाम जप में बहानेबाजी नहीं करूँगा। दुराग्रह छोड़ दूँगा, कुटंब संग्रह कर उसी में रचना पचना नहीं है। सब कुछ छोड़ छाड़ कर केवल आपका नाम कीर्त्तन ही किया करूँगा। अब हम स्वयं आत्मघाती कृतघ्नी बनकर, उसी कौल को भूल गये। श्रीनाम से विमुख हो रहे हैं। यही कारण है कि बारंबार चौरासी लाख योनियों में भटकने का कष्ट भोगते आ रहे हैं।

गर्म मध्ये तु यत्प्रोक्तं करुणानिधिमग्नतः।
सततं कीर्त्तनं राम नाम कुर्वे समादरात्।।
त्यक्त्ता दुराग्रहं सर्वं कुटुम्बादिक संग्रहम्।
करिष्यामि सदा भक्त्या तव नामानुकीर्त्तनम्।।
तत्सर्वं विस्मृतं ताताधमेनामपहारिणा।
तस्मात् कष्टतरं दुःखं सम्प्राप्नोति पुनः पुनः।।

इसी प्रकार श्रीअग्निपुराण में भक्तशिरोमणि श्रीप्रह्लादजी का वचन आया है। अपने सहपाठी बालकों से कह रहे हैं मित्रगण, आपके देखते–देखते मैं अपने पिता द्वारा संघटित घोर मृत्यु भय रूपी समुद्र से अनायास तर गया हूँ। उसमें केवल श्रीरामनाम के प्रभाव ही का श्रेय है। अतः आप लोगों को भी सभी दुराग्रहों तथा अन्यान्य साधनों को छोड़कर, सावधानता पूर्वक नाम कीर्त्तन ही में जुट जाना चाहिये। अपने जी में आप अन्य साधनों को नीरस समझियेगा।

यत्प्रभावादहं साक्षात्तीर्त्वा घोर भयार्णवम्।
अनायासेन वाल्येऽपि तस्माच्छ्री नामकीर्त्तनम्।।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम्।
साधनान्यं विहायाशु बुद्ध्वा नैरस्यमात्मनि।।

श्रीआदिपुराण में पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण भक्तराज श्रीअर्जुन को उपदेश करते हुये, आदेश करते हैं कि अर्जुन, श्रीवैष्णव युग–युग से सभी अन्यान्य कर्म धर्म को त्याग कर, एकमात्र श्रीरामनाम ही का गान करते आ रहे हैं। जिसने एकमात्र श्रीरामनाम ही का अवलंब ले लिया है, उनके लिये मैं त्रिवाचा पूर्वक सत्य सत्य कहता हूँ कि उनकी सद्गति तो सुनिश्चित ही होगी।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे।
त्यक्त्वा च सर्व कर्माणि धर्माणि च कपिध्वज।।
राम नामैव नामैव रामनामैव केवलम्।
गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम्।।

हारीत स्मृति नामक धर्म शास्त्र में भी कहा है कि सभी अन्यान्य साधनों को छोड़कर, बुद्धिमानों को चाहिये कि सभी प्रकार से श्रीरामनाम रूपी मंत्र का ही जप किया करें।

तस्मा सर्वात्मना राम नाम रूपं परंप्रियम्।
मन्त्रं जपेत् धीमान् संविहायान्यसाधनम्।।

बैरञ्च्यतन्त्र में भी कहा गया है कि अन्य साधनोंको छोड़कर एकमात्र रामनाम के जप में तत्पर हो जाना चाहिये। इससे बढ़कर कोई भी दूसरा यत्न न तो सुलभ है, न सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।

त्यक्त्वाऽन्य साधनान् सर्वान् रामनाम परो भव।
नातः परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम्।।

श्रीनारायण तन्त्र में भी कहा गया है बड़े–बड़े फलों को देने वाले जितने धर्म कर्म हैं, औरों के लिये भले लुभावने हों, परन्तु श्रीरामनाम के जप में लगे हुये महानुभावों के लिए सभी निष्फल प्रतीत होते हैं।

यानि धर्माणि कर्माणि महोग्रा फलदानि वै।
निष्फलानि च सर्वाणि रामनाम रतात्मनाम्।।

श्रीसीतारामनाम के ऊपर पूरी निर्भरता, यदि आपकी हो गई, तब तो आपको अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलों के भी सुन्दर फल मिल गये।

'नाम को भरोसो बल चारिहू फल को फल
सुमिरिये छाड़ि छल भलो कृतु है।'

— श्रीविनय २५४/२

श्रीसीताराम, नाम नित्य अमूल्य स्नेह सम्पति है। इनमें सभी धर्म भरे हैं। 'यथा भूमि सब बीजमय, नखत निवास अकास। रामनाम सब धर्ममय जानत तुलसीदास।।' नाम जपने से आपको सभी धर्माचरण करने का पुण्य एकत्र मिल जायेगा। अपने ध्येय इष्ट स्वरूप में ध्यान, धारण तथा समाधि जमाने में आपके लिये श्रीनाम सरकार धन के समान सहायक होंगे। धन से सभी धर्म संभव है। आपको श्रीनाम दिव्य प्रकाश सुझावेंगे। दहर (डुबाने वले कुंड) अर्थात् पतन कराने वाले वाह्य आडंबर (दुकान करने से मन फिरा देंगे। दारुण शोक मिटाकर, अतिशय परमानंद देंगे। श्रीनाम तो अनुकूलता की जड़ ही है। कष्ट पीड़ा रूपी अनिष्टों को हरने वाले हैं। बड़े–२ अफसर, वैद्य डाक्टर निरन्तर आपकी सेवा करने को सामने उपस्थित रहेंगे) ऐसे परम हितैषी लोक परलोक के सर्व कार्य साधक श्रीनाम सरकार को छोड़कर अन्यान्य साधनों की आशा रखना, उनके लिये वासना होना तो श्रीनाम के प्रति रसाभास ही है। श्रीनाम ही आपके सुख सौभाग्य हैं, सभी दिव्य रसों की खान हैं।

सीतारामनाम नेह नित्य निर्मोल धाम
धरम धुरीन ध्येय धारना धरेश धन।
दिव्य दुति दान देत दहर दुकान दलि
दारुन दरारदुखा दरन प्रमोद धन।।
मूल अनुकूल प्रतिकूल शून हूल हरू
हाकिम हकीम हरसायत हजूर जन।
श्री युगल अनन्य अन्य आस वास भस सब
खास रसरास नाम सुखद सुभाग वन।।

(श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १८)

कोटिन माघ प्रयाग नहाई। राम नाम वारक रटु भाई।।
कोटिन व्रत एकादसि कीजै। राम नाम मुख वारक लीजै।।
कोटिन विप्र सुन्योति जिमावै। नाम नाम वारक मुख गावै।।
कोटिन भाँति करै प्रभु सेवा। राम नाम सम नहि सुख देवा।।
कोटिन विधि सेवै सुचि संता। राम नाम एकवार कहता।।
कोटिन मातु पिता सेवकाई। राम नाम सम सुखद न भाई।।
कोटिन गो रक्षा जो करई। राम नाम वारक उच्चरई।।

कोटिन भाँति देइ बहु दाना। राम नाम वारक न समाना।।
कोटिन साधन ज्ञान विवेका। राम नाम सम सुखद न एका।।
कोटिन सर वापी कुआँ, खनै लगावै वाग।
रामनाम के सम नहिं, रटु तेहि सह अनुराग।।
कोटिन किरिया कर्म विरागा। करै नाम बिन जगत न भागा।।
कोटिन मख जप तप कोउ ठाने। रामनाम एक बार बखाने।।
कोटिन संध्या बंदन करहू। राम नाम बारक उच्चरहू।।
कोटिन रचै धर्म गोशाला। राम नाम बारक जन पाला।।
कोटिन पढ़ै पुराण सुवेदा। राम नेाम वारक हर खेदा।।
कोटिन विधि गायत्री जापै। राम नाम एक बार अलापै।।
कोटिन रचै क्षेत्र सुर देवल। राम नाम रटु बारक ही भल।।
कोटिन पूजा पाठ करीजै। राम नाम वारक हि भनीजै।।
कोटिन ब्रह्मचर्य शुभ कर्मा। राम नाम सम तुलै न धर्मा।।
कोटिन साधन साधिये, कोटिन जनम सुधारि।
राम नाम की रटन सम, सुखद न कहत पुरारि।
अस विचारि जौ चहहु भलाई। रटहु रटावहु नामहि भाई।।

(बृहद् उपासना रहस्य श्री सियाराम नाम प्रसंग)

नाम अनन्य अधिकतर प्रियतम रटत जौन लय जोरी है।
सपनेऊँ तिन्हें आन अवलंब न विधि निषेध मय तोरी है।।
केवल श्री सियरामनाम गति सब ही सन मति मोरी है।
तासु प्रेमरजु बँधे फिरहि संग राम लखन सिय गोरी है।।

यहाँ हम नामानन्य साधकों के कुछ लक्षण श्रीनामकांतिसे उद्धृत करेंगे। ग्रन्थ विस्तार भय से अर्थ नहीं लिख रहे हैं। मूल ही मूल पढ़े।

पंचानन नहिं घास खाय कोउ काल बात सत साँची है।
राजहंस नहि चुगे कबहुँ संवुक सुरेख दृढ़ खाँची है।।
सुंदरि सती सिंगार सजी स्वामी विन अनत न राँची है।
युगलानन्यशरन मति मेरी नाम मोहब्बत माँची है।। ५०।।
सूर सूर प्रतिकाश रास क्या जाने भला बिचारो तो।
कूर धूर भव भूरट में निज नूर लखे कयों धारो तो।।
जीवन मूर सहूर सजे तिनके संग तन मन गारो तो।
पूरनपूर नाम निर्मल गुन होय अनन्य सम्हारो तो।। ७९।।

चाहे कोटि कथे कोई विज्ञान योग वर बातें।
दरसावै फल सद्य सकल पै मानो तुम उत्पाते।।
सावधान सुखखान नाम प्रियप्रान भजो तजि घाते।
युगलानन्य नाम सुमिरन बिन मोद नहीं दिन राते।। १४९।।
धन्य संत अति मान मन्य गुन गन्य नाम रस छकते हैं।।
नाम हीन पल पाव निरय सम समुझि व्यर्थ नहि बकते हैं।।
चित चख गगन चढ़ाय नाम बल किस ही तरफ न तकते हैं।
युगलानन्य नाम मारग से सपनेहु कभी न थकते हैं।। २२३।।
शव सम शुद्ध दशा धारे निज नाम स्वरूप समाते हैं।
सम संतोष पोष पाए कर धोये संतत माते हैं।।
नाम रहित साधन अनंत दुखवंत बिचारि बहाते हैं।
युगलानन्य नाम रसिया रस पीवत अति अलसाते है।। २२४।।
सकल मतन में निर्विरोध श्री नाम उचारन साँचो।
पक्षपात की बात नहीं दृढ़ धारि मोहब्बत माँचो।।
जो काउ कुछ कहे नई कल्पना गनो तेहि काँचो।
युगलानन्य नाम जपि पटुतर पाँच आँच ते बाँचो।। ३२८।।

❋ जापक की नामाकार वृत्ति ❋

उत्तम कोटि के नाम जापक अपनी वृत्ति को नाममय बनाते हैं। यदि आपके जपस्थल तक बाहर की अन्य ध्वनि आकर बरवश आपके कानों में पड़ती है, तो आप इतने उच्चस्वर से नामोच्चारण करें कि आपका कान दूसरी ध्वनि न सुनकर, केवल नाम ध्वनि ही सुने। यदि रात के सूने सन्नाटे में आप नामोच्चारण कर रहे हैं, तो आपकी नामध्वनि इतनी मीठी होनी चाहिये कि आपके आसपास सोये हुये आपके मित्रों के शयन सुख में विक्षेप न पहुँचे। जीभ नाम जप रही है तो अभ्यास ऐसा बनावें कि मन भी नाम जपें। तात्पर्य कि मानसिक और बैखरी जप साथ–साथ होवें ऐसा करना प्रारम्भ में कुछ कठिन अवश्य है, पर श्रीनाम सरकार की कृपा से असंभव नहीं है। कान को सतत् अपने द्वारा उच्चारित नाम ध्वनि को सुनने में संलग्न रखिये। नामध्वनिके अतिरिक्त कान कोई अन्य ध्वनि सुने ही नहीं। जपे एकमात्र नाम ही, यदि जीभ चार अक्षर सीताराम के अतिरिक्त कोई भी पांचवा अक्षर उच्चारण करती है, तो जीभ को यह व्यभिचार दोष लग जायेगा। उसी प्रकार कान कोई अन्य शब्द न सुनकर, श्रीनाम श्रवण में अव्यभिचारी बना रहे। आंखें भीतर व बाहर भी केवल नामाक्षरों को देखा करें। नाम दर्शन में आँख को सतीत्वव्रत धारण करना पड़ेगा।

स्वरचित श्रीवृहद उपासना रहस्य में परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज श्रीमुखवाणी का अनुवाद करते हुए कहते हैं कि–

मम प्रसन्नता जो जन चाहे। रटै नाम करि नेम निवाहै।।

मम प्रसन्नता जो जन चाहे। रटै नाम करि नेम निवाहै।।
गर्जे रटे जपे सियरामहिं। पढ़े सुने समुझे मम नामहि।।
कहे कहावे गावे नामहि। ध्यावे पावे ते मम धामहि।।
मुख में वानी बैखरी, तेहि ते रटै प्रचारि।
लय लगाय ते लहहि मोहि, कर्म सुभासुभ जारि।।

श्रीबड़े महाराज स्वरचित श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिका नामक ग्रन्थ रत्न में भी ऐसा ही आदेश हम नाम जापकों को दे रहे हैं। ताल स्वर में गाने की इच्छा हो; तो हमें नाम गान की रागबद्ध रूप से करना चाहिये। चित्त से ध्यान हो तो केवल श्रीनामाक्षरों के ही। अन्य साधनों के द्वारा प्राप्त सुख की उपेक्षा कर, श्रीनाम ही सरकार से सब सुख प्राप्त करने की इच्छा पोषण करें।

राम ही के नाम ते जो होई सोइ नीको लगै,
ऐसोई सुभाउ कछु तुलसी के मनको।

(श्रीकवि० ७/७७)

राम के नाम ते सो होउ, न सोउ हिएँ, रसना ही कहो है।
किये न कछू, करिवो न कछू, कहिवो न कछू मरिबोइ रहो है।।

(श्रीकवि० ७/९१)

श्रीनाम सरकार की प्रकाशमान अक्षरमय शोभा हृदय में पधरानी चाहिये। यदि यशोगान करना है तो एकमात्र श्रीनाम सरकार का ही। इस प्रकार श्रीनाम से निष्कलंक, अव्यभिचारिणी लगन लगानी चाहिये। अन्य साधन के आश्रय में जाने को व्यभिचार मार्ग मानें। श्रीबड़े महाराज श्रीनाम ही को अपना प्राण संजीवन मानकर, उन्हीं के उच्चारण में तत्पर रहते हैं।

नामहि गाइये, ध्याइये नामहि, पाइये नामहि से सुख सारो।
छाइये नामहि की छवि अंतर, गाइये नामहि को जस प्यारो।।
लाइये लाग अदाग सुनाम से, जाइये और नहीं ब्यभिचारो।
(श्री) युग्म अनन्य के प्रान सजीवन जानकी जीवन नाम उचारे।। १७९।।

पुनः श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि हम श्रीनाम ही सरकार का गुण गावें, श्रीनाम ही के करकंज में बिक जायें। मन को भी श्रीनाम ही के रस में निरन्तर रमाया करें। विशुद्ध नामानुरागी महानुभावों के सत्संग सिन्धु में मगन होकर शरीर और मन को नामानुराग के पतिव्रत पथ पर चलने योग्य पवित्र बनावें। स्वाती की बूँद की प्यास जैसे पपीहे को होती है, उसी भाँति हमें श्रीनाम प्रेम की प्यास होनी चाहिये। वाद–विवाद में न पड़कर हमें निरंतर अखंड नामोच्चारण में तत्पर रहना होगा। इस प्रकार अपने जीवन को प्रेम रस से ओतप्रोत बनावें। इस प्रकार श्रीनामानुराग की भाव समाधि में विभोर रहें कि बाहर से देखने वाले को मालूम पड़े कि ये सो रहे हैं।

नाम गुन गाइये बिकाइये सुनाम कर
नाम रस माँझ मन नित ही रमाइये।
नाम अनुरागिन सुसंग सुचि सागर में।
होय के मगन तन मन अन्हवाइये।।
नाम–प्रेम–प्यास चित्त चाहिये अखंड निज
नेह निर्वाहिये विवाद बहवाइये।
(श्री) युगल अनन्य नाम सरस सनेह साज
साजिये सदैव सानुकूल अलसाइये।। १८४६।।

इस प्रकार श्रीनामानुरागी के एकांगी मार्ग से चलने पर, आपको थोड़े ही दिनों में यह चराचर विश्व नाम रटता सा प्रतीत होगा। आप जिस जगह बैठकर नाम रटते हैं, वह धरती नामोच्चारण करती हुई ही कान को भान कराएगी। आकाश से नामोच्चारण होता हुआ सुनेंगे। छत, दीवाल, गच्ची, खंभे, चौकट, किवाड़ सभी नामोच्चारण करते हुए प्रतीत होंगे। लता वृक्ष, कीट पतंग, पशु, पक्षी, सब नाम रटते हुए प्रतीत होंगे। बात ब्रह्मवैवर्त पुराण की है। देवर्षि नारदजी महाराज अम्बरीष को अपनी कुछ कालीन श्रीनाम साधना का अनुभव बताते हुए कहते हैं कि भई, मुझे नाम रटते–रटते विज्ञानमयी दृष्टि प्राप्त हुई। उस समय मैं क्या देखता हूँ कि सारा विश्व श्रीनाममय हो रहा है। वह अवस्था वाणी, मन तथा इन्द्रियों से परे की थी। किसी भी प्रकार अन्य व्यक्ति उसकी कल्पना भी नहीं कर पायेंगे। उस दशा में जो सुख मुझे हुआ था, वह मेरा हृदय ही जानता है कह नहीं सकता हूँ।

दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञानचक्षुषा।
वाङ्मनो गोचारातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्।।

देवर्षिजी, मालूम पड़ता है, वह दशा इस समय आपकी नहीं है। नाना जगहों पर घूमने फिरने से, सर्वत्र का दृश्य देखिये और उसी दृष्ट वस्तु को कहिये, मन में विचारिये तो वह दशा कैसे रहे? नाम जापको के लिए घूमना फिरना मना है। श्रीनारदजी कहते हैं कि देखो उस दशा को लाने के लिए फिर से यत्न में हूँ। संग हो तो अनन्य नामानुरागियों का, नहीं तो, निर्जन देश का वास भला है। कट्टर नामानुरागी कहाँ पाइये? अहा! वह दिन परम सौभाग्यवाला कब आवे कि मैं निर्जन वन में सीताराम सीताराम रटते हुये, नामाप्रेम में उन्मत्त बनकर इधर–उधर डोलते हुये अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत कर दूँगा।

कदाऽहं विजनेऽरण्यै निरन्तरमितस्ततः।
प्रलपन् राम रामेति गमिष्यामि च वासरान्।।

धन्य है वह नाममय जीवन!

आदर्श नामाकार वृत्ति वाले हैं श्रीहनुमतलालजी, जिसने अपने कलेजो को फाड़कर, भीतर पक्के अक्षरों में नामांकित दिखाया।

राम माथ, मुकुट राम, राम सिर नयन राम
राम कान, नासा राम, ढोड़ी राम नाम है।
रामकंठ, कंध राम, राम भुजा बाजूबंद
राम हृदय, अलंकार हार राम नाम है।।
राम उदर, नाभि राम, राम कटी, कटीसूत्र
राम वसन जंघ राम, जानु पैर राम है।
राम मन, बचन राम, गदा, कटक राम,
मारुति के रोम रोम व्यापक राम नाम है।।

नामाकार वृत्ति का रहस्य हृदयंगम करने के लिए कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ० २९३ से लिखित नाम–समाधि लेख पढ़ने को हम अपने सहृदय पाठक से अनुरोध करेंगे। हम उस लेख के कुछ अंश यहाँ उद्धृत करते हैं।

नामाकार वृत्ति का रहस्य हृदयंगम करने के लिए कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ० २९३ से लिखित नाम–समाधि लेख पढ़ने को हम अपने सहृदय पाठक से अनुरोध करेंगे। हम उस लेख के कुछ अंश यहाँ उद्धृत करते हैं।

'नाम जप के बहिरंग और अन्तरंग साधनों से सम्पन्न होकर, जब हम नामाभ्यास करने लगते हैं, तब नामाभ्यास की प्रगल्भ अवस्था में हमें 'नाम समाधि' की अवस्था प्राप्त होने ल गती है। इस अवस्था में हमारा नामजप केवल वैखरी वाणी से ही नहीं होता है। हमारे रोम–रोम से नामजप होने लगता है। हम मुख से तो रामनामोच्चारण करते ही हैं, किन्तु इनके साथ ही हमारी सारी ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियों और अन्तःकरण चतुष्टय भगवन्नाम से आप्लावित होकर भगवन्नाममय हो जाते हैं। हम कानों से रामनाम की दिव्य मधुर ध्वनि सुनते हैं, रसना से दिव्य रामनामामृत का आस्वादन करने लगते हैं, त्वगिन्द्रिय से मानो रामनाम के दिव्य स्पर्श का अनुभव करते हैं, नेत्रों से रामनाम के दिव्य रूप का दर्शन करते हैं। हमारे अन्तःकरण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) के समस्त व्यापार नाममय हो उठते हैं। केवल इतना ही नहीं, वाह्य जगत भी हमारे लिये रामनाममय हो जाता है। विश्वब्रह्माण्ड के अणुरेणु को हम रामनाम से ओतप्रोत पाते हैं। सिवा रामरूपऔर रामनाम के हम और किसी ि वषय का अनुभव ही नहीं करते। हमारे सारे शारीरिक एवं मानसिक व्यापार नाममय अतएव राममय हो उठते हैं। (क्योंकि नाम नामी का अभेद है) और हम अपने–आपको अनंत नामामृत सिंधु में निमज्जित पाते हैं। हमारी सारी चित्त वृत्तियाँ सभी विषयों से हट जाती हैं और हम नाम स्वरूप में यानी भगवत्स्वरूप में ही अवस्थित हो जाते हैं। व्यवहार काल में भी हमारी यह नाम समाधि या नाममय अवस्था भंग नहीं होने पाती, निरंतर यह नाम की लौ लगी रहती है। इस प्रकार हम भगवन्नाम के सुलभ साधन के अवलंब से राजयोग, हठयोगादि की कष्टसाध्य समाधि के क्लेशों से बचकर इन्हीं के चित्तवृत्ति निरोध ध्येय को और समाधि को सुगमतया प्राप्त कर लेते हैं।

नाम समाधि में भी दो प्रकार हैं : एक अन्वय समाधि दूसरी व्यतिरेक समाधि। व्यतिरेक समाधि में हम केवल भगवत स्वरूप भगवान्नाम को छोड़कर किसी और भी वस्तु का अनुभव नहीं करते। सारा कार्य प्रपंच–दृश्य

जगत्—उस समय अपने मूलकारण भगवत्स्वरूपमें लीन हो जाता है। व्यतिरेक समाधि में हम व्यवहार जगतके समस्त व्यापारोंसे उपरत होकर केवल भगवत्स्वरूप भगवान्नाम से लीन रहते हैं। अन्वय समाधि का अनुभव हम व्यवहार काल में करते हैं। इसमें हम सकल दृश्य प्रपंच को भगवन्नाममय ही पाते हैं। इसी भागवत भूमिका से हमारे सब व्यवहार होते हैं। इस उदात्त भूमिका पर हमारे क्षुद्र अहं—मम भाव को यानी 'मैं और मेरा' इस परिछिन्न अहंकार मूलक व्यवहार को तनिक भी अवकाश नहीं रहता। उक्त नाम—समाधि की हम दो अवस्थाएँ पाते हैं— एक तो साधकावस्था और दूसरी सिद्धावस्था। साधकावस्था में हमें बारम्बार मन और इन्द्रियों को नामामृत—सागर में निमज्जित करना पड़ता है। किन्तु नामाभ्यास की सिद्धावस्था में तो हम जागते—सोते, उठते—बैठते, खाते—पीते, चलते—फिरते, हर अवस्था में हमारा नाम—जप अखंड रूप से और अनायास चलतारहता है, सुषुप्ति में भी खंड नहीं पड़ने पाता। दृष्टांत में अखंड नाम जप प्रभाव के कुछ उदाहरण इसी ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं।

❋ नाम नशा ❋

श्रीनाम रटते—रटते नामानुराग दिनानुदिन बढ़ता जाता है। नाम जप की उच्चदशा प्राप्त होने पर, जापक श्रीनामानन्द के मौज में छक जाता है। वह मस्ती की दश नामनशा कहाती है। वह अनिर्वचनीय सुख की दशा बड़ी स्पृहणीय है।

उस दशा को प्राप्त करने की शक्ति श्रीबड़े महाराज की विमल महावाणी में पढ़िये:—

नामहि के अनुराग छके, छल छांह तके तिनके दिशि नाहीं।
प्रीति परायन पाय पके, न बके, न जके, न थके, रस राही।।
भूतिहूँ के हुलके न अचानक, आन निकेत सुसाधन माही।
(श्री) युग्म अनन्य अजूब दशा, निज नाम नशा, दृगमें झलकाहीं।। २२४८।।

अर्थात् अन्य साधनों को परित्याग कर, एकमात्र श्रीनाम जपते—जपते पहले श्रीनामानुराग की दशा तक पहुँचना चाहिये। श्रीनाम सरकार से स्वारथ परमारथ की चाह करना छल कपट है। उसकी ओर देखना भी नहीं चाहिये। नाम जप का फल नामानुराग ही है। नाम ही साधना और श्रीनाम ही साध्य भी है। नामीप्रीति परायण होकर, प्रीति को परिपक्व बनावे। श्रीराम से भिन्न अन्य शब्द मुख से कहे भी नहीं। न श्रीनाम प्रेमरस के मार्ग पर चलने में थकना अर्थात् रुकना चाहिये। नामानंद में विभोर होने पर भी चेष्टा रहे कि नाम जप छूटे नहीं। चाहे कैसा भी उत्तम साधन हो, उस साधन के द्वार पर झाँकने भी नहीं जायँ। इस प्रकार श्रीनामानुराग के एकांगी मार्ग पर चलने से श्रीनामनशा की विलक्षण दशा उतर आवेगी। उस समय नानुराग में जापक को दोनों नयन अलसोहैं, ललौहें दीखने लगते हैं। श्रीनाम रटें और अधिकाधिक रटन की भूख बढ़ती जाय। तब आपको ऐसा नामानुराग प्राप्त होगा कि आप आपादमस्तक उस नाम प्रेम रस में मग्न हो जाइयेगा। मृत्यु की आशंका रंचक भी नहीं रह जायेगी। तब श्रीरूप, धामलीला भी आपके लिये अप्राप्य नहीं रहेंगी। श्रीनाम में ही सब स्थित रहते हैं तथा नाम ही से सब प्रगट हो जाते हैं। आपका श्रीनामानुराग